मेवाड़ गौरव गाथा

प्रश्नोत्तरी

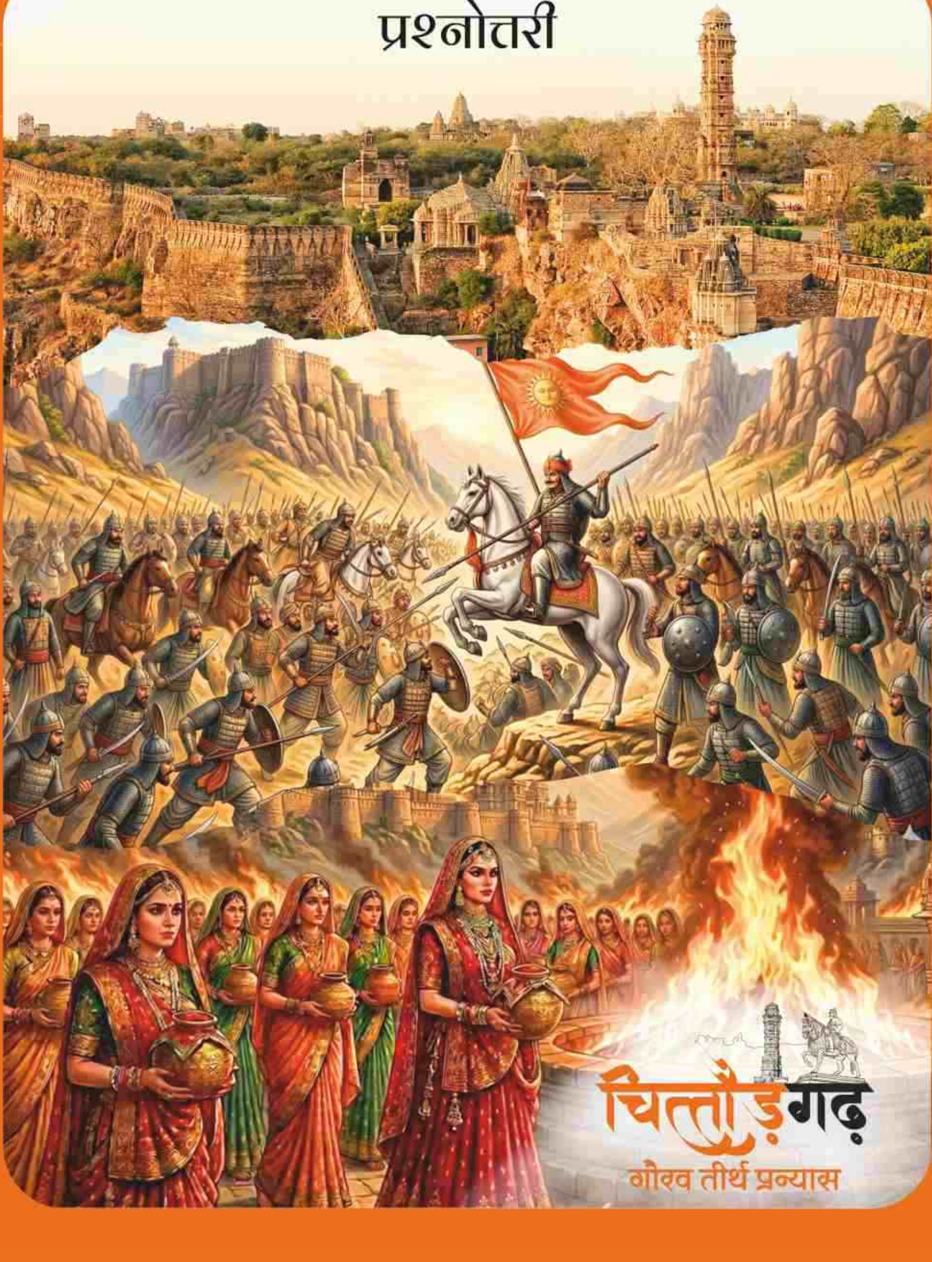

चित्तौड़गढ़
गौरव तीर्थ प्रन्यास

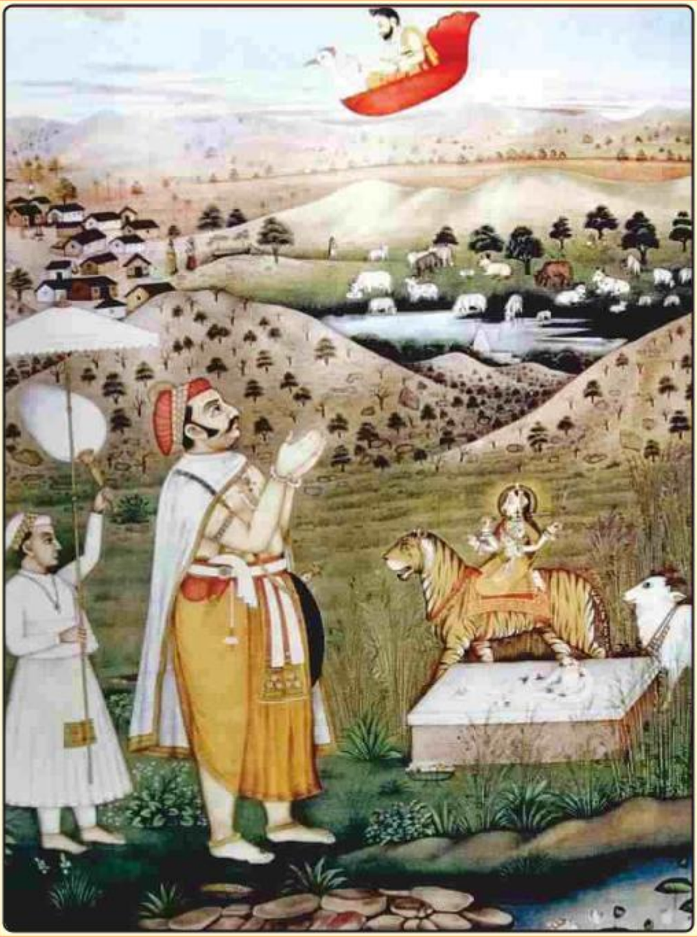

मेवाड़ राज्य के वास्तविक संस्थापक बप्पा रावल

इण कुल रो यो वचन है जिण सारे संसार। जो दृढ़ राखै धर्म को तीहि राखै करतार ।।

चित्तौड़गढ़ गौरव तीर्थ प्रन्यास

आवरण चित्र : श्री अभिषेक श्रीमाल
संस्करण : प्रथम
वर्ष : 2026
प्रति : 20000

ISBN : 978-93-5890-478-9
मूल्य रु. 100/-

प्रकाशक : चित्तौड़गढ़ गौरव तीर्थ प्रन्यास

मेवाड़ गौरव गाथा

सम्पादक :
डॉ. गोपाल लाल जाट

सह सम्पादक :
श्री वीरेन्द्र सिंह तलावदा

चित्तौड़गढ़
गौरव तीर्थ प्रन्यास

“

जिस दिन भारत की संतान अपने अतीत की कीर्ति कथा को भूला देगी, उसी दिन उसकी उन्नति का मार्ग बंद हो जायेगा। पूर्वजों के अतीत के पुण्यकर्म आने वाली संतान को सुकर्म की शिक्षा देने के लिए अत्यंत सुन्दर उदाहरण है। ”

— **स्वामी विवेकानंद**

मेवाड़ गौरव गाथा

हल्दीघाटी विजयी युद्ध के
450 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में
युद्ध बलिदानियों को समर्पित...

चित्तौड़ दुर्ग

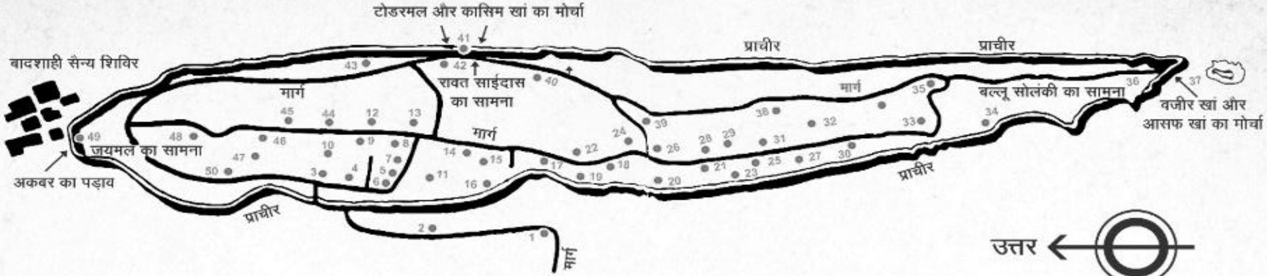

संकेत

1. रावत बाघसिंह का स्मारक व पाडल–पोल
2. जयमल व कल्ला की छतरियां
3. सिसोदिया फत्ता का स्मारक
4. तुलजाभवानी का मन्दिर
5. बनवीर की दीवार
6. नौलखा भंडार
7. श्रंगार चंवरी
8. पुरातत्व कार्यालय व संग्रहालय
9. पातालेश्वर मन्दिर
10 भामाशाह व आल्हा काबरा की हवेलियां
11. कुम्भा के महल
12. फतह पकाश महल
13. सातबीस देवरी
14. कुम्भाश्याम जी व मीरा मन्दिर
15. घी–तेल की बावड़ी
16. जटाशंकर मन्दिर
17. विजय स्तम्भ
18. महासती स्थल
19. समीद्धेश्वर मन्दिर
20. गौमुख कुण्ड
21. हाथी कुण्ड
22. कातणबाव
23. जयमलपत्ता के महल
24. जयमलपत्ता का तालाब
25. कालिका माता का मन्दिर
26. सूर्यकुण्ड
27. नौगजापीर की कब्र
28. पद्मिनी महल
29. खातणरानी के महल
30. रामपुरा की हवेली
31. भाक्सी
32. चौगान
33. चतरंग तालाब
34. बीकाखोह
35. राजटीला
36. चित्तौड़ी बुर्ज
37. मोहर मंगरी
38. गोरा बादल के गुम्बज
39. भीमलत कुण्ड
40. अद्‌भुदजी का मन्दिर
41. चूण्डावत सांईदास का स्मारक व सूर्यपोल
42. नीलकण्ठ महादेव का मन्दिर
43. कीर्ति स्तम्भ व जैन मन्दिर
44. बिड़ला सराय
45. चारभुजाजी का मन्दिर
46. बाणमाता व अन्नपूर्णा का मन्दिर व राघवदेव की छतरी
47. अन्नपूर्णा व बाणमाता के कुण्ड
48. हिंगलू अहाड़ा के महल व रतनेश्वर तालाब
49. लाखोटा बारी
50. कूकड़ेश्वर कुण्ड व कूकडेश्वर महादेव का मन्दिर

जो दृढ़ राखे धर्म को तिही राखे करतार

जो अपने धर्म पर दृढ़ रहता है,

परमात्मा स्वयं उसकी रक्षा करता है।

चित्तौड़गढ़ में कुँवर प्रताप का झाली बाव स्थित निवास स्थान

पद्मिनी महल

प्रस्तावना

चित्तौड़गढ़ गौरव तीर्थ प्रन्यास का प्रमुख उद्देश्य मेवाड़ की राजधानी रहे चित्तौड़गढ़ एवं मेवाड़ के स्वर्णिम इतिहास से जन-जन को परिचित करवाना है ताकि वे इससे प्रेरणा प्राप्त कर सके और अपने आप को गौरवान्वित अनुभव कर सके। यह सीख सके कि राष्ट्र से ऊपर संसार की कोई वस्तु नहीं हो सकती। राष्ट्र की स्वतंत्रता, संप्रभुता और स्वाभिमान के आगे विश्व की बड़ी से बड़ी वस्तु तुच्छ और हेय है। जन-जन राष्ट्रभक्ति और राष्ट्र प्रेम से परिपूर्ण हो तथा हृदय में यह भाव हो कि-

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादऽपि गरीयसी।

निज स्वार्थ, जाति, धर्म, संप्रदाय और क्षेत्र से ऊपर उठकर हर भारतवासी के हृदय में यह भाव उत्पन्न हो सके कि-

मन समर्पित, तन समर्पित और यह जीवन समर्पित।
चाहता हूँ, मातृ-भू तुझको अभी कुछ और भी दूँ...॥

मेवाड़ का इतिहास अति प्राचीन है। बनास, बेड़च और गंभीरी नदियों के किनारे मिले पाषाण कालीन पुरातात्विक अवशेष इसके साक्षी हैं।

झरना झरे गौमुख भरे, निर्भयनाथ री ठौड़।
करोड़ वर्ष तपस्या करे, जद पावे गढ़ चित्तौड़॥

जन-जन के मुख से उच्चरित ये काव्य पंक्तियाँ एवं चित्तौड़ दुर्ग स्थित भीमगोड़ी और भीमलत जलाशय इसके महाभारत कालीन साक्ष्य उपस्थित करते हैं। प्रारंभ में यह शिवि जनपद के नाम से विख्यात रहा। संस्कृत ग्रंथों में इसका नाम 'मेदपाट' प्राप्त होता है।

मेवाड़ के स्वर्णिम इतिहास का प्रारंभ होता है राजा रामजी के पुत्र कुश की वंश परंपरा के महान् पराक्रमी गुहिलवंशी राजा बप्पा रावल से जिन्होंने 734 ई. में राजा मानमोरी से चित्तौड़ हस्तगत कर इसे मेवाड़ की राजधानी बनाया तथा पश्चिम से आने वाले मलेच्छ आक्रमणकारियों का ईरान-इराक तक जाकर उनका मानमर्दन किया और हिंदुकुश पर्वत पर भगवा पताका फहराई। आततायियों में उनका इतना खौफ उत्पन्न हो गया था कि अगले सैंकड़ों वर्षों तक दुश्मनों की भारत की ओर आँख उठाकर देखने की हिम्मत नहीं हुई। उसी परंपरा में इस सूर्यवंशी कुल

में रावल खुमाण, जेत्रसिंह, अल्हट, रतनसिंह, महाराणा हम्मीर, लाखा, मोकल, कुंभा, सांगा, उदयसिंह, प्रताप, अमरसिंह और राजसिंह जैसे महान् प्रतापी शासक हुए तथा इसी वंश के छत्रपति शिवाजी महाराज और नेपाल में राणावंश ने अपने कुल गौरव को बढ़ाया।

वहीं बीलू-देवा भील, गोरा-बादल, चुंडा, बाघसिंह, राव जयमल-पत्ता, कल्ला, ईसरदास, साईंदास, भामाशाह, राणा पूँजा, हकीम खाँ सूरी, रामशाह तंवर, झाला मन्ना, झाला अज्जा, नरुजी बारहठ, बल्लुसिंह शक्तावत, जेतसिंह चुंडावत, रावत रतनसिंह चुंडावत आदि महान् योद्धाओं ने अपना सर्वस्व बलिदान देकर इस धरा को गौरवान्वित किया।

यहाँ की वीरांगनाएँ भी पुरुषों से कहाँ पीछे रहने वाली थी। वे ही तो उन वीर योद्धाओं की प्रेरणा बनी। पालने में झूलते नन्हे शिशु को भी वह राष्ट्रभक्ति का संस्कार देती है -

इला न देणी आपणी, हालरिये हुलराय।
पूत सिखावै पालणै, मरण बड़ाई माय॥

जब-जब मेवाड़ पर संकट आया, चित्तौड़ धरा धाम की नारियों ने अपना सब कुछ राष्ट्र यज्ञ में होम कर दिया और अमर हो गई। ऐसी महान् नारियों में बरबड़ी देवी, महारानी पद्मिनी, महारानी कर्मवती, माँ पन्नाधाय, फूल कँवर, जवाहर बाई, कोशीथल महारानी, महारानी जयवंता बाई, अजब दे, किरण देवी, हाड़ी रानी सहल कँवर, कृष्णा कुमारी आदि नाम उल्लेखनीय हैं। भक्तशिरोमणि कवयित्री मीरां बाई के दिव्य भजनों की अनुगूंज भी इसी धरा पर आज भी गूँजायमान है। इनसे ही अभिभूत होकर कवि श्यामनारायण पांडेय ने लिखा-

मुझे न जाना गंगा सागर, मुझे न रामेश्वर काशी।
तीर्थराज चित्तौड़ देखने को, मेरी आँखें प्यासी॥

उक्त नामों के अलावा भी हजारों-लाखों अनाम योद्धाओं, वीरांगनाओं और 36 कोम के धरती पुत्रों एवं मातृशक्ति ने इस धरती को अपने रक्त से सींचा, वे हमारे लिए विशेष वंदनीय और प्रणम्य हैं।

मेवाड़ के एक ही राजवंश के नेतृत्व में यहाँ के धरती पुत्रों ने एक हजार से भी अधिक वर्षों तक संघर्ष किया और अपनी मातृभूमि पर शत्रुओं का आधिपत्य नहीं होने दिया, क्योंकि यहाँ राजा कोई मनुष्य नहीं बल्कि भगवान श्री एकलिंगनाथ

रहे। यहाँ के रावल और राणाओं ने उनका दीवान(सेवक) बनकर शासन किया। इसलिए इतने लंबे अर्से तक जनता की उनमें अटूट आस्था रही। यहाँ जब भी कोई अन्यायी शासक बना, सामंतों और जनता ने उसे अपदस्थ कर दिया। मेवाड़ का शासन सदैव जन कल्याणकारी रहा है।

यहाँ का ध्येय वाक्य रहा-

जो दृढ़ राखे धर्म को, तिहि राखे करतार।

हर मुश्किल परिस्थिति में यहाँ की जनता ने समवेत स्वर में उद्घोष किया-

ज्योति जला निज प्राण की, बाती गढ बलिदान की।

चलो उतारें आरती, माँ की पावन आरती।

चित्तौड़गढ़ तर्पण की भूमि है, अर्पण की भूमि है, यह वीरों के रक्त और जौहर की राख से पवित्र भूमि है। यह भूमि सामाजिक समरसता, सांप्रदायिक सद्भाव, नारी सशक्तीकरण, जल संरक्षण, पर्यावरण संरक्षण आदि समसामयिक विषयों के लिए मिसाल है।

भारत की आजादी के आंदोलन और संघर्ष के समय साहित्यकारों ने यहाँ के ऐतिहासिक पात्रों को नायक-नायिका के रूप में ग्रहण करते हुए प्रभूत मात्रा में साहित्य सृजन किया, जिनमें जौहर, हल्दीघाटी, चित्तौड़ की चिता, पेशोला की प्रतिध्वनि, महाराणा का महत्व, दीपदान, सेनाणी आदि उल्लेखनीय हैं।

इस पुस्तक में मूल इतिहास ग्रंथों, हिंदी साहित्य, कला एवं संस्कृति से प्रश्नोत्तर दिए गए हैं। प्रयास किया गया है कि कोई त्रुटि न रहे फिर भी प्रिंट मिस्टेक, ऐतिहासिक तथ्यों, विषय-वस्तु आदि में रही कमियों-न्यूनताओं के बारे में सुधि पाठकों और विद्वानों के सुझावों का सादर स्वागत है।

डॉ. गोपाल लाल जाट
सहायक आचार्य- हिंदी
राजकीय कन्या महाविद्यालय, चित्तौड़गढ़

श्री भजन लाल शर्मा

मानीय मुख्यमंत्री, राजस्थान

संदेश

राजस्थान की धरती अपने शौर्य, त्याग और अद्वितीय सांस्कृतिक परंपराओं के लिए विश्वभर में जानी जाती है। चित्तौड़गढ़ इस गौरवशाली परंपरा का एक प्रमुख प्रतीक है, जहाँ की ऐतिहासिक विरासत, दुर्ग, स्मारक और वीर-वीरांगनाओं की अमर गाथाएँ हमारे इतिहास को विशिष्ट पहचान प्रदान करती हैं। मेवाड़ की यह भूमि राष्ट्रभक्ति, आत्मसम्मान और बलिदान की प्रेरणादायी परंपरा को सदैव जीवित रखे हुए है।

वर्तमान में, संपूर्ण राष्ट्र हल्दीघाटी के 'विजयी युद्ध' के 450 वर्ष पूर्ण होने का गौरवशाली उत्सव मना रहा है। यह पावन अवसर हमें महाराणा प्रताप के उस अटूट स्वाभिमान और पराक्रम की याद दिलाता है, जिसने मेवाड़ की अस्मिता को अक्षुण्ण रखा और आने वाली पीढ़ियों के लिए स्वतंत्रता के संघर्ष का मार्ग प्रशस्त किया।

'चित्तौड़गढ़ गौरव तीर्थ प्रन्यास' द्वारा चित्तौड़ को एक प्रमुख ऐतिहासिक पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित करने तथा मेवाड़ के समृद्ध इतिहास को प्रश्नोत्तरी के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाने की पहल अत्यंत सराहनीय है। मेवाड़ के इतिहास पर आधारित एक हजार प्रश्नों की यह पुस्तक विशेष रूप से विद्यार्थियों, युवाओं तथा इतिहास के प्रति रुचि रखने वाले पाठकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी। इससे नई पीढ़ी को अपने गौरवशाली अतीत को समझने और उससे प्रेरणा लेने का अवसर मिलेगा।

राजस्थान सरकार राज्य की ऐतिहासिक धरोहरों के संरक्षण, संवर्धन और पर्यटन के विकास के लिए निरंतर प्रयासरत है। मुझे विश्वास है कि यह पुस्तक मेवाड़ की समृद्ध परंपरा और चित्तौड़गढ़ की ऐतिहासिक महत्ता को व्यापक स्तर पर प्रसारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

इस सराहनीय पहल के लिए 'चित्तौड़गढ़ गौरव तीर्थ प्रन्यास' को मेरी हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

(भजन लाल शर्मा)

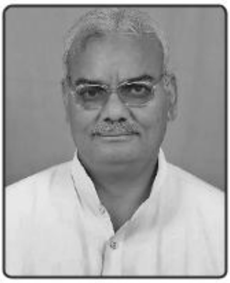

श्री मदन दिलावर
माननीय शिक्षा मंत्री,
राजस्थान सरकार

संदेश

मेवाड़ की पुण्यभूमि सदैव से शौर्य, त्याग और स्वाभिमान की अमिट गाथाओं की साक्षी रही है। वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप जैसे महानायक के आदर्श आज भी हमारी युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणास्त्रोत हैं। ऐसे गौरवशाली इतिहास को नई पीढ़ी तक पहुँचाने का प्रत्येक प्रयास न केवल सराहनीय है, बल्कि समय की आवश्यकता भी है।

राजस्थान सरकार द्वारा महाराणा प्रताप राज्यारोहण दिवस को औपचारिक रुप से मनाने की शुरुआत इस दिशा में एक महत्वपूर्ण एवं प्रेरणादायक कदम है। इस पहल के माध्यम से हमारे विद्यार्थियों को अपने इतिहास के स्वर्णिम अध्यायों से परिचित कराने का मार्ग और अधिक सुदृढ़ हुआ है।

"मेवाड़ गौरव प्रश्नोत्तरी" पुस्तिका का प्रकाशन विद्यार्थियों को अपने इतिहास से जोड़ने की एक अभिनव एवं सार्थक पहल है। यह प्रयास विद्यार्थियों में ऐतिहासिक चेतना, राष्ट्रीय भावना एवं अपने सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति गर्व की भावना विकसित करेगा। विशेष रुप से हल्दीघाटी युद्ध के 450 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर इस प्रकार का आयोजन हमारे इतिहास को पुनः जीवंत करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम बनेगा।

मैं सभी शिक्षकों से आह्वान करता हूँ कि वे विद्यार्थियों को इस प्रकार की गतिविधियों में भाग लेने हेतु प्रेरित करें, जिससे शिक्षा केवल पाठ्यपुस्तकों तक सीमित न रहकर हमारे गौरवशाली अतीत को समझने का माध्यम बने। साथ ही, अभिभावकों की भी महत्वपूर्ण भूमिका है कि वे अपने बच्चों को इतिहास के प्रति जागरुक करें और उनमें राष्ट्र के प्रति सम्मान एवं जिम्मेदारी की भावना विकसित करें।

शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य केवल ज्ञान अर्जन नहीं, बल्कि अपने अतीत से प्रेरणा लेकर उज्ज्वल भविष्य का निर्माण करना है। यह पुस्तिका निश्चित ही इस दिशा में एक प्रभावी कदम सिद्ध होगी।

मैं "चित्तौड़गढ़ गौरव तीर्थ प्रन्यास" को इस उत्कृष्ट प्रयास हेतु हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ और आशा करता हूँ कि यह पहल विद्यार्थियों के जीवन में नई ऊर्जा एवं प्रेरणा का संचार करेगी।

मेरी ओर से इस महत्वपूर्ण प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

21/4/26

(मदन दिलावर)

श्रीमान नारायण जी उपाध्याय

संस्थापक–महाराणा प्रताप
विजयस्मारक संस्थान, दिवेर

संदेश

मेवाड़ की यह पावन धरा मात्र एक भौगोलिक क्षेत्र नहीं, बल्कि त्याग, अदम्य साहस और अडिग स्वाभिमान की जीवंत पाठशाला है। इस भूमि का कण-कण उन वीरों और वीरांगनाओं के बलिदान से पावन है, जिन्होंने अपने धर्म, संस्कृति और स्वाभिमान की रक्षा को सर्वोपरि माना।

भारत के स्वातंत्र्य संग्राम में प्रेरणास्रोत रहा मेवाड़ का गौरवशाली इतिहास हमारी राष्ट्रीय चेतना का प्रतीक है, जो हमें सदैव स्वाधीनता और अस्मिता के प्रति समर्पित रहने की प्रेरणा देता है।हल्दीघाटी युद्ध के 450 वर्ष पूर्ण होने का यह अवसर हमारे लिए गौरव का क्षण है। यह केवल एक युद्ध नहीं, बल्कि स्वतंत्रता और स्वाभिमान के महान संघर्ष का अमर प्रतीक है।

यह हर्ष का विषय है कि चित्तौड़गढ़ गौरव तीर्थ प्रन्यास मेवाड़ के समृद्ध इतिहास को जन-जन तक पहुँचाने का पुनीत कार्य कर रहा है, जो अत्यंत सराहनीय है।'एक हजार प्रश्नोत्तरी' की यह कृति युवाओं और विद्यार्थियों में ज्ञान के साथ-साथ अपने गौरवशाली अतीत के प्रति सम्मान और उत्तरदायित्व की भावना जागृत करेगी। मेरा विश्वास है कि यह नई पीढ़ी को अपनी जड़ों से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

इस पुनीत कार्य हेतु संस्थान के वरिष्ठ सदस्य के नाते मैं प्रन्यास की संपूर्ण टीम को हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

(नारायण उपाध्याय)

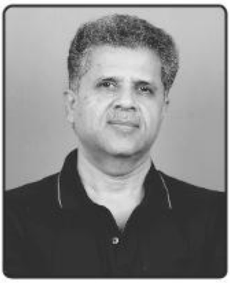

श्रीमान डॉ. ओमेंद्र रत्नु
संस्थापक–धर्मांश फाउण्डेशन, जयपुर

संदेश

अत्यंत गर्व व हर्ष का विषय है कि चित्तौड़गढ़ गौरव तीर्थ प्रन्यास के तत्वावधान में मेवाड़ इतिहास प्रतियोगिता का वृहद आयोजन किया जा रहा है। इस विराट कार्य के लिए किए गए पुरुषार्थ के लिए डॉ. गोपाल जी जाट साधुवाद के पात्र हैं।

धर्मान्शि फ़ाउन्डेशन का यह सौभाग्य है कि हमारे यशस्वी पूर्वजों की स्मृति में किए जा रहे इस यज्ञ में अपनी छोटी सी आहुति डाल सका।

भारतीय इतिहास के सर्वाधिक महिमाशाली अध्याय का जिस प्रकार इस देश के तथाकथित प्रगतिशील इतिहासकारों ने छलपूर्ण मर्दन किया है, यह प्रतियोगिता उस कुत्सित प्रयास को निष्फल करने में बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध होगी, इसी कामना के साथ सभी सहभागियों को हृदय से आभार।

(डॉ. ओमेंद्र रत्नु)

डॉ. सुशीला लड्ढा
सेवानिवृत प्रोफेसर,
पूर्व बाल कल्याण समिति अध्यक्ष, चित्तौड़गढ़

संदेश

विश्व प्रसिद्ध हल्दीघाटी युद्ध के 450 वर्ष पूर्ण होने के पुनीत अवसर पर चित्तौड़ गौरव तीर्थ प्रन्यास चित्तौड़ गौरव गाथा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन कर रहा है। कहा भी है -

"चित्तौड़ तेरी गौरव गाथा, हर युग में गायी जायेगी।
नमन कर तेरी माटी को,मस्तक पर लगायी जायेगी।"

वस्तुत: चित्तौड़गढ़ वीरों का हरिद्वार,देशभक्तों की काशी और पराक्रमियों का प्रयाग है। चित्तौड़ दुर्ग राष्ट्रीय अस्मिता का ज्वलंत प्रतीक है। देश दुनिया का सबसे विशालतम दुर्ग चित्तौड़ त्याग,स्वाभिमान,शौर्य ,भक्ति और बलिदानियों की गाथाओं को महलों के खंडहरों में समेटे सीना ताने आज भी अतीत के शौर्य पूर्ण असीम वैभव को मौन मूक प्रकट करता है। भारत के भावी भविष्य हमारी युवा पीढ़ी और बच्चे इन महापुरुषों बप्पारावल, कुंभा, सांगा, चूंडा, हमीर, लाखा,मोकल,प्रताप गोरा, बादल,जयमल पत्ता,कल्ला, मीराबाई,महारानी पद्मिनी,पन्नाधाय आदि अनेक महानुभावों के श्रेष्ठ और स्तुत्य कार्यों से अनभिज्ञ है।

इस मेवाड़ गौरव गाथा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के माध्यम से हम हमारी युवा पीढ़ी और बच्चों के हृदय में अपनी संस्कृति के प्रति गौरव का भाव जगा कर, देश प्रेम की भावना जागृत करके,राष्ट्र के विकास में योगदान देने के लिए प्रेरित करेंगे। चित्तौड़ दुर्ग के मौन मूक श्रेष्ठ कृत्यों को हम प्रश्नोत्तरी के माध्यम से वाणी प्रदान करके हजार प्रश्नों से साकार रुप दे रहे हैं। जिससे आज की युवा पीढ़ी जो नाच-गान, मौज-मज़ा और सोशल मीडिया में लिप्त हैं, उन्हें सुषुप्तावस्था से जगाकर उनमें राष्ट्र प्रेम जागृत करके,अच्छा कार्य करने की ओर उन्मुख करके श्रेष्ठ मानव जीवन की सार्थकता सिद्ध करने की ओर अग्रसर करेंगे।

उठो उठो चित्तौड़, तुम्हारा स्वाभिमान फिर जागा है।
जागी जन-जन की यह धरती, आसमान भी जागा है।
समय हुआ चिर सुप्त शक्तियों में, नव प्राण जगाना है।
राष्ट्र निष्ठामय कार्य करके, जीवन को सार्थक बनाना है।"

(डॉ. सुशीला लड्ढा)

अनुक्रमणिका

		पेज नं
1.	मेवाड़ : उद्भव एवं गुहिल वंश - रावल शाखा	2
2.	मेवाड़ : गुहिल वंश-सिसोदिया शाखा	12
3.	मेवाड़ : वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप	41
4.	महाराणा प्रताप के बाद मेवाड़	64
5.	दुर्गराज चित्तौड़	75
6.	मेवाड़ : कला-संस्कृति-साहित्य एवं भूगोल	95

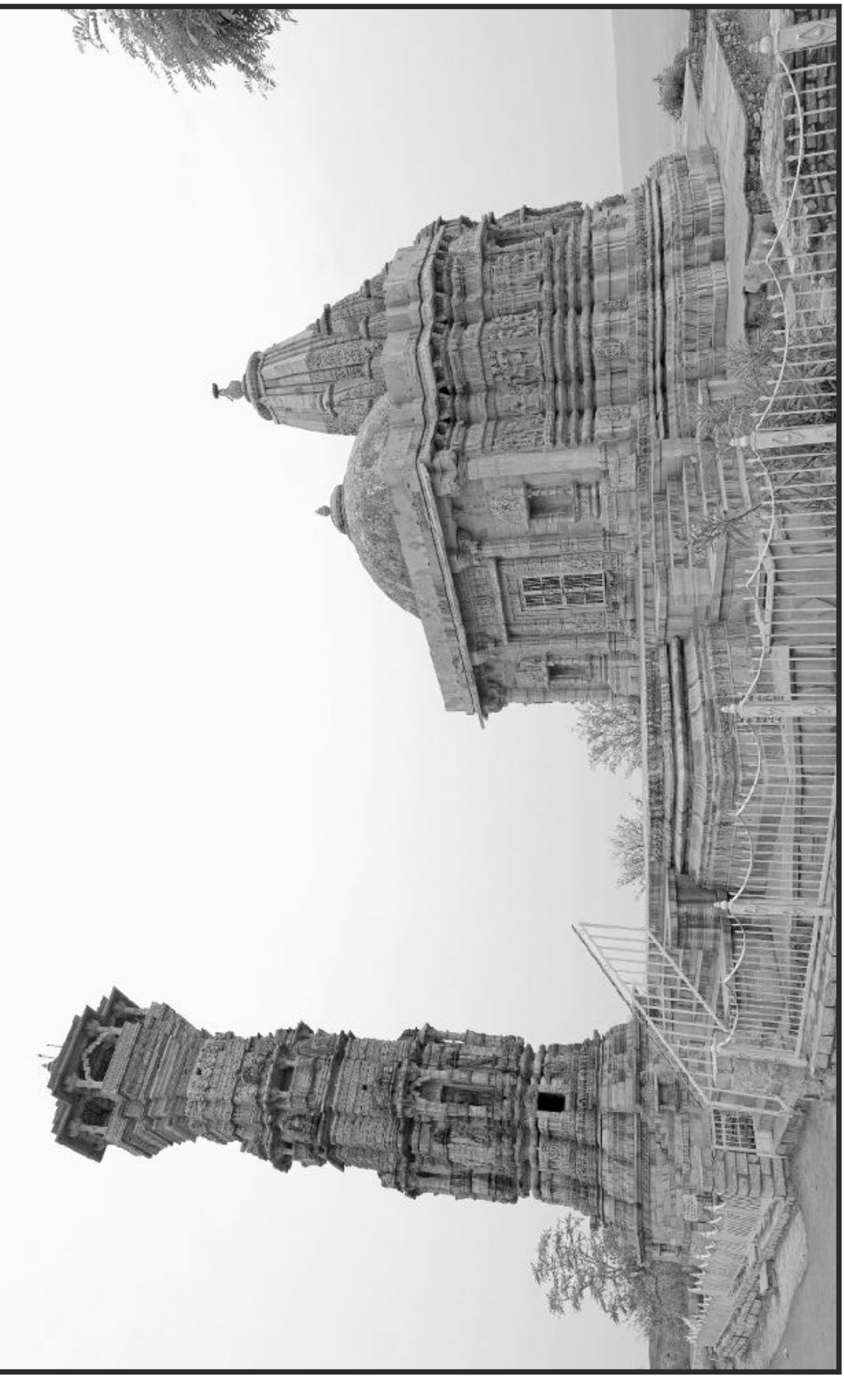

भगवान आदिनाथ को समर्पित कीर्ति स्तम्भ

1. मेवाड़ : उद्भव एवं गुहिल वंश - रावल शाखा

प्रश्न : मेवाड़ का ध्येय वाक्य क्या है?

उत्तर : जो दृढ़ राखे धर्म को, तिहि राखे करतार।

प्रश्न : हिंदू धर्म के रक्षक होने के कारण मेवाड़ के महाराणाओं को क्या कहा जाता था?

उत्तर : हिंदुआ सूरज।

प्रश्न : मेवाड़ राज्य का इतिहास कितना पुराना है?

उत्तर : मेवाड़ राज्य का इतिहास अति प्राचीन है। पाषाण काल से इस क्षेत्र का विशिष्ट महत्व रहा है। बेड़च और बनास नदियों के किनारे पुरातात्विक खोजों से यहाँ एक उन्नत सभ्यता के अवशेष प्राप्त हुए हैं।

प्रश्न : द्वितीय शताब्दी में मेवाड़ किस नाम से प्रसिद्ध था?

उत्तर : शिवि जनपद।

प्रश्न : शिवि जनपद की राजधानी क्या थी?

उत्तर : माध्यमिका(वर्तमान नगरी)।

प्रश्न : संस्कृत ग्रंथों में मेवाड़ को किसकी संज्ञा दी गई?

उत्तर : मेदपाट।

प्रश्न : तत्र चित्रांगदश्च दुर्ग चित्र नगोपरि।

नगरं चित्रकूटारण्यं देवेन तदधिष्ठितम॥

काव्य पक्तियाँ किस ग्रंथ से उद्धृत हैं?

उत्तर : 'कुमारपाल प्रबंध' से

प्रश्न : मेवाड़ के ध्वज का रंग क्या था?

दुर्ग नहीं यह शिलालेख है, वीरों के अनुपम बलिदानों का।
क्या देख रहे विस्मय से तुम, चित्तौड़ दुर्ग दीवानों का।।

उत्तर : केसरिया।

प्रश्न : मेवाड़ के ध्वज पर किस देवता का चित्र अंकित है?

उत्तर : सूर्य देव

प्रश्न : मेवाड़ के ध्वज पर दाहिनी ओर किसका चित्र बना हुआ है?

उत्तर : राजपूत योद्धा का।

प्रश्न : मेवाड़ के ध्वज पर बायीं ओर किसका चित्र बना हुआ है?

उत्तर : भील योद्धा का।

प्रश्न : मेवाड़ राजवंश किस कुल परंपरा से संबंधित माना जाता है?

उत्तर : सूर्यवंशी भगवान राम के पुत्र कुश की परंपरा से संबंधित माना जाता है।

प्रश्न : कुश के वंशज कनकसेन ने अपना राज्य कहाँ स्थापित किया?

उत्तर : सौराष्ट्र में अपना राज्य स्थापित किया और 144 ई. में वीरनगर बसाया।

प्रश्न : कनकसेन की चौथी पीढ़ी के राजा विजयसेन ने किस नगर की स्थापना की?

उत्तर : विजयपुर की स्थापना की जो वर्तमान में धोलका नगरी के नाम से जाना जाता है।

प्रश्न : विजयसेन ने गुजरात में एक और कौन-सा नगर बसाया?

उत्तर : वल्लभीपुर।

प्रश्न : विजयसेन की चौथी पीढ़ी बाद एक पराक्रमी राजा हुए उनका क्या नाम था?

उत्तर : महाराजा शिलादित्य।

प्रश्न : महाराजा शिलादित्य की मृत्यु कैसे हुई?

उत्तर : वे मलेच्छों के आक्रमण का प्रतिकार करते हुए मारे गये।

पग-पग सूरां देवली, पग-पग सतियाँ ठौड़।
मन डरपै डग मेलता, त्यागी धर चित्तौड़।।

प्रश्न : महाराजा शिलादित्य की मृत्यु के बाद उनकी पत्नी महारानी पुष्पावती ने क्या किया?

उत्तर : रानी पुष्पावती अपने पीहर जा रही थी, रास्ते में वीरनगर के पास उसे पति की मृत्यु का दु:खद समाचार मिला। वह गर्भवती थी अतः उसने वहीं एक गुफा में आश्रय लिया। इस गुफा के पास की बस्ती में कमलावती नामक ब्राह्मणी रहती थी। महारानी पुष्पावती ने एक पुत्र को जन्म दिया और कमलावती को उसकी जिम्मेदारी सौंपकर स्वयं चिता जलाकर जीवन लीला समाप्त कर ली।

प्रश्न : महाराजा शिलादित्य और महारानी पुष्पावती के पुत्र का क्या नाम था?

उत्तर : गुफा में जन्म के कारण उसका नाम गोह पड़ा जो कालांतर में गुहिल हो गया।

प्रश्न : गुहिल कहाँ का राजा बना?

उत्तर : गुहिल ने ईडर के वृद्ध राजा मांडलीक से राज्य प्राप्त किया और वहाँ का राजा बन गया।

प्रश्न : गुहिल के वंशज क्या कहलाये?

उत्तर : गुहिलोत।

प्रश्न : गुहिलोतों का राज्य मेवाड़ में कब प्रारंभ हुआ?

उत्तर : 566 ई. से।

प्रश्न : गुहिल के पश्चात् उनके कौन-कौन उत्तराधिकारी हुए?

उत्तर : क्रमश: भोज, महेंद्र और नाग राजा हुए।

प्रश्न : राजा नाग ने अपनी राजधानी कहाँ स्थापित की?

उत्तर : नागदा(एकलिंग जी के पास)।

प्रश्न : राजा नाग की वंश परंपरा में कौन-कौन राजा हुए?

बापा पाट बठाणियो,रगतां टीको देय ।
भील अस्यो कीधौ जठै, चत्रगढ हेला देय ॥

उत्तर : महाराजा शिलादित्य, अपराजित एवं महेंद्र द्वितीय राजा हुए।

प्रश्न : महेंद्र द्वितीय के पुत्र का क्या नाम था?

उत्तर : कालभोज जो बप्पा रावल के नाम से प्रसिद्ध हुए।

प्रश्न : बप्पा रावल के गुरु कौन थे?

उत्तर : ऋषि हारीत।

प्रश्न : किनके मार्गदर्शन में बप्पा रावल ने चित्तौड़ पर आक्रमण किया?

उत्तर : ऋषि हारीत।

प्रश्न : हारीत ऋषि कौन थे?

उत्तर : हारीत ऋषि लकुलीश सम्प्रदाय के शिव भक्त थे(एकलिंग नाथ के) तथा देश पर हुए विदेशी यवनों के आक्रमण के विरुद्ध जन जागरण कर लोक संगठन द्वारा देश की रक्षा का कार्य करते थे।

प्रश्न : बप्पा रावल ने चित्तौड़ के किस राजा को परास्त किया?

उत्तर : राजा मान मोरी।

प्रश्न : बप्पा रावल का राजतिलक करने वाले बीलू व देवा भील किस गाँव के निवासी थे?

उत्तर : उदयपुर के पास ऊँदरी गाँव के निवासी।

प्रश्न : बप्पा रावल को कौन-कौन-सी उपाधियाँ प्राप्त थी?

उत्तर : 1.हिंदुआ सूरज 2. राजगुरु 3. चक्कवै(चारों दिशाओं का विजेता)।

प्रश्न : चित्तौड़ विजय से पूर्व बप्पा रावल की राजधानी क्या थी?

उत्तर : नागदा।

प्रश्न : मेवाड़ राज्य की स्थापना का श्रेय किस राजवंश को जाता है?

उत्तर : गुहिलवंश को।

इण धरती पर गाजता, बादल थोड़ो लज्ज,
पाणी ने कांई पिए, आ रगत पीयोड़ी रज्ज।

प्रश्न : गुहिलवंश के प्रारंभिक शासकों में सबसे प्रतापी शासक कौन थे?

उत्तर : बप्पा रावल।

प्रश्न : बप्पा रावल ने चित्तौड़ पर कब अधिकार किया?

उत्तर : 734 ई. में।

प्रश्न : बप्पा रावल की सेना में कौन-कौन लोग थे?

उत्तर : राजपूत एवं भील।

प्रश्न : बप्पा रावल का राज्याभिषेक चित्तौड़ में किसने किया?

उत्तर : बीलू व देवा भील ने अपने रक्त से बप्पा रावल का राज्याभिषेक किया।

प्रश्न : बप्पा रावल के आराध्य कौन थे?

उत्तर : श्री एकलिंग नाथ जो कि उनके गुरु हारीत के आराध्य थे।

प्रश्न : बप्पा रावल किस रूप में शासन करते थे?

उत्तर : श्री एकलिंग दीवान के रूप में। यही परंपरा वर्तमान तक चली आ रही है।

प्रश्न : मुहम्मद बिन कासिम ने सिंध पर आक्रमण कब किया?

उत्तर : 712 ई. में।

प्रश्न : 712 ई. में सिंध का राजा कौन था?

उत्तर : राजा दाहिरसेन।

प्रश्न : राजा दाहिर के मुहम्मद बिन कासिम के साथ हुए युद्ध में बलिदान का बदला किसने लिया?

उत्तर : उनकी पुत्रियों सूर्य और परमाल ने।

प्रश्न : दाहिर सेन की दूसरी पत्नी ने अपने 5 वर्ष के पुत्र के साथ कहाँ शरण ली?

उत्तर : चित्तौड़ में बप्पा रावल के पास।

चत्रगढ थळ बेजोड़ जग, इक सूं इक बत्ताह।
कवी बापड़ौ कीं कहै,कल्लौ खुद कविताह।।

प्रश्न : बप्पा रावल ने अपने देश पर हुए आक्रमण का प्रतिशोध कैसे लिया?

उत्तर : दाहिर की पत्नी और बच्चे को शरण एवं संरक्षण प्रदान किया। उन्होंने काबुल, इस्तफहान, कंधार, ईरान, इराक, तूरान, काफिस्तान आदि पश्चिम के राजाओं को हराया, हिन्दुकुश की पहाड़ी पर स्थित खैबर के दर्रे पर विजयी ध्वज फहराया तथा उनकी मलेच्छ पुत्रियों से विवाह किया।

प्रश्न : बप्पा रावल की मलेच्छ रानियों से उत्पन्न पुत्र क्या कहलाए?

उत्तर : नौशेरा पठान कहलाए।

प्रश्न : बप्पा रावल के खौफ से कितने वर्ष तक पश्चिमी देशों के आक्रांताओं की भारत पर आक्रमण की हिम्मत नहीं हुई?

उत्तर : 200 वर्ष तक।

प्रश्न : बप्पा रावल ने संन्यास कब लिया?

उत्तर : बप्पा रावल 753 ई. में अपने पुत्र को राज्य सौंपकर संन्यासी हो गए और श्री एकलिंग नाथ की आराधना में लग गए।

प्रश्न : बप्पा रावल की समाधि कहाँ बनी हुई है?

उत्तर : कैलाशपुरी में(श्री एकलिंग नाथ के पास)।

प्रश्न : बप्पा रावल के नाम पर पाकिस्तान में कौन-सा शहर बसा हुआ है?

उत्तर : रावलपिंडी।

प्रश्न : बप्पा रावल के बाद कौन-कौन राजा हुए?

उत्तर : क्रमश: खुमाण, मत्तट, भर्तभट, सिंह, खुमाण द्वितीय, महायक, खुमाण तृतीय, भर्तृभट द्वितीय, रावल अल्लट, नरवाहन, शालिवाहन, शक्तिकुमार, अम्बाप्रसाद राजा हुए। इसके प्रश्चात शुचिवर्मा, नरवर्मा, कीर्तिवर्मा, योगराज, वैराट, हंसपाल, वैरिसिंह, विजयसिंह, अरिसिंह, चोड़सिंह, विक्रमादित्य सिंह, रणसिंह(कर्णसिंह) राजा हुए। 1158 ई. में रणसिंह के बाद उनके दो पुत्रों क्षेमसिंह एवं राहप से दो शाखाएँ विभक्त

इण कुल रो यो वचन है, जिण सारे संसार।
जो दृढ़ राखै धर्म को, तींहि राखे करतार।।

हुईं- एक शाखा रावल कहलाई और दूसरी राणा नाम से प्रसिद्ध हुई।

प्रश्न : रावल अल्लट के समय मेवाड़ की राजधानी क्या थी?

उत्तर : आहड़।

प्रश्न : आहड़ में वराह मंदिर का निर्माण किसने करवाया?

उत्तर : रावल अल्लट ने।

प्रश्न : मेवाड़ में सर्वप्रथम नौकरशाही की स्थापना किसने की?

उत्तर : रावल अल्लट ने।

प्रश्न : हूण राजकुमारी हरिया देवी से विवाह करने वाले मेवाड़ के शासक कौन थे?

उत्तर : रावल अल्लट।

प्रश्न : रावल जैत्रसिंह व इल्तुमिश के बीच 1229 ई. में भयंकर युद्ध हुआ उसका नाम क्या है?

उत्तर : भूताला का युद्ध।

प्रश्न : भूताला के युद्ध में किसकी विजय हुई?

उत्तर : रावल जेत्रसिंह की।

प्रश्न : इल्तुतमिश की लौटती हुई सेना ने मेवाड़ के किस क्षेत्र को लूटा?

उत्तर : नागदा को।

प्रश्न : इल्तुतमिश की लौटती हुई सेना के द्वारा नागदा को लूट लेने पर रावल जैत्रसिंह ने किसे राजधानी बनाया?

उत्तर : चित्तौड़ को।

प्रश्न : रावल एवं राणा शाखाओं में से मेवाड़ के शासक कौन बने?

उत्तर : रावल।

युगों-युगों से यही हमारी बनी हुई परिपाटी है।
खून दिया है मगर नहीं दी कभी देश की माटी है।

प्रश्न : राणा शाखा को कौन-सी जागीर प्राप्त हुई?

उत्तर : वे सिसोदा के जागीरदार बने इसलिए सिसोदिया कहलाये।

प्रश्न : रावल रणसिंह के बाद मेवाड़ के रावल कौन-कौन हुए?

उत्तर : क्रमशः क्षेमसिंह, सामंत सिंह, कुमार सिंह, मंथनसिंह, पद्मसिंह, जैत्रसिंह, तेजसिंह, समरसिंह, और अंतिम शासक महारावल रतनसिंह हुए जिन्होंने अलाउद्दीन खिलजी के साथ संघर्ष किया और वीरगति को प्राप्त हुए।

प्रश्न : रावल रतन सिंह का गद्दार दरबारी जिसने अलाउद्दीन खिलजी को चित्तौड़ पर आक्रमण करने के लिए उकसाया कौन था?

उत्तर : राघव चेतन।

प्रश्न : चित्तौड़ दुर्ग में पद्मिनी का निवास कहाँ माना जाता है?

उत्तर : वर्तमान कुंभा महल।

प्रश्न : डॉ. के. एस. गुप्ता के अनुसार पद्मिनी कहाँ की थी?

उत्तर : सिंध प्रदेश के हम्मीर सिंह चौहान की पुत्री।

प्रश्न : हरिसिंह भाटी द्वारा रचित पुस्तक 'गजनी से जैसलमेर' में महारानी पद्मिनी का क्या परिचय दिया गया है?

उत्तर : महारानी पद्मिनी का जन्म १२८५ ई. में पुंगल में हुआ था(पिता जैसलमेर के रावल पुनपाल जी भाटी एवं माता जाम कँवर चौहान(देवड़ा शाखा)।

प्रश्न : अलाउद्दीन खिलजी से लड़ते हुए रावल रतन सिंह के भाई लक्ष्मण सिंह के कितने भाई और पुत्र बलिदान हुए?

उत्तर : 12 भाई और 7 पुत्र।

प्रश्न : महारावल रतन सिंह एवं महारानी पद्मिनी का ऐतिहासिक संदर्भ मुनि हेमरतन के किस ग्रंथ में मिलता है?

उत्तर : गोरा-बादल पद्मिनी चऊपई में।

नारी जिंद जौहर करे, नर सिर देवण होड़।
मरण उठै इक मिसकरी, मेवाड़ौ चित्तौड़।।

प्रश्न : रतन सिंह और पद्मिनी का वृत्तांत नारायण दास की किस रचना में मिलता है?

उत्तर : छिताई वार्ता में।

प्रश्न : पद्मावत् किसकी रचना है?

उत्तर : मलिक मोहम्मद जायसी।

प्रश्न : पद्मावत की रचना कब हुई?

उत्तर : 1540 ई. में।

प्रश्न : पद्मावत् किस प्रकार की रचना है?

उत्तर : चित्तौड़ के ऐतिहासिक पात्र रावल रतन सिंह और पद्मिनी पर आधारित किंतु कल्पना प्रधान रचना है।

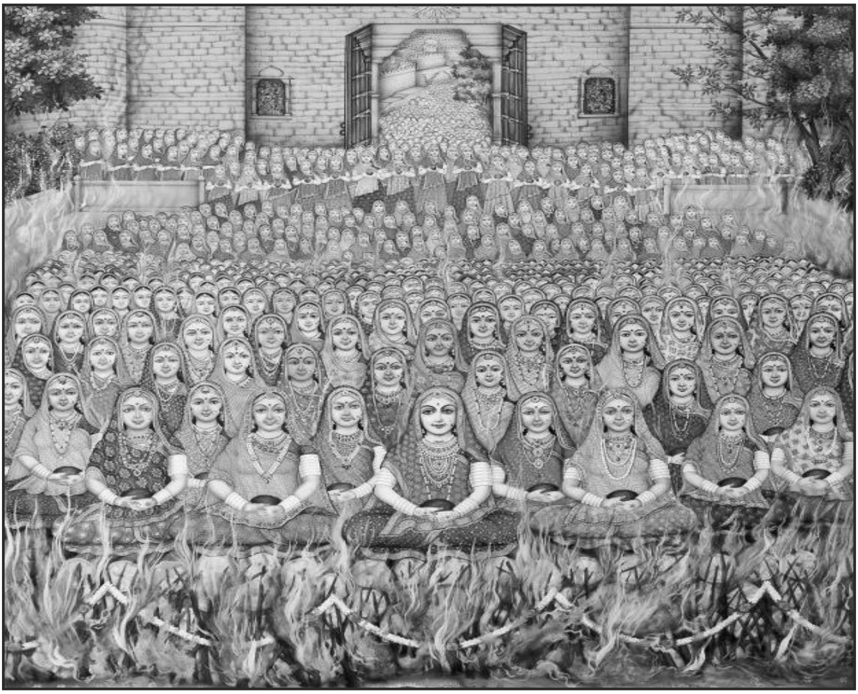

चित्तौड़ दुर्ग पर राव जयमलजी एवं वीर कल्लाजी का अप्रतिम शौर्य

2. मेवाड़ : गुहिल वंश-सिसोदिया शाखा

प्रश्न : मेवाड़ में रावल शाखा समाप्त हो गई, उधर सिसोदा ठिकाने की राणा शाखा में कौन-कौन जागीरदार हुए?

उत्तर : क्रमश: माहप, राहप, नरपति, दिनकर, जसकरण, नागपाल, पूर्णपाल, पृथ्वीपाल, भुवनसिंह, भीमसिंह, जयसिंह और लक्ष्मण सिंह जागीरदार हुए।

प्रश्न : लक्ष्मण सिंह के पुत्रों के क्या नाम थे?

उत्तर : अरिसिंह तथा अजयसिंह।

प्रश्न : अरिसिंह का विवाह कहाँ हुआ?

उत्तर : अरिसिंह का विवाह ऊनवा गाँव की एक ऐसी बहादुर बेटी से हुआ जिसने शिकार के दौरान अरिसिंह को अपने खेत में जाने से रोका, जंगली सूअर को मारकर उसे सौंप दिया, गोफण के पत्थर से अरिसिंह के घोड़े की टांग तोड़ दी, अरिसिंह ने उसे खेत से घर जाते समय सिर पर दो पानी के मटके तथा भैंस के दो बच्चों को ले जाते देखा तब इस बहादुर बेटी का विवाह अरिसिंह के साथ हुआ किंतु पिता के भय के कारण उसे ऊनवा गाँव में ही रखा।

प्रश्न : अरिसिंह और उस बहादुर बेटी के पुत्र का क्या नाम था?

उत्तर : कुँवर हम्मीर।

प्रश्न : कुँवर हम्मीर का जन्म कब हुआ?

उत्तर : 25 अगस्त 1300 ई.।

प्रश्न : कुँवर हम्मीर को सिसोदा कौन लाया?

उत्तर : अरिसिंह की मृत्यु के बाद उसके भाई अजयसिंह को कुँवर हम्मीर के बारे में पता चला तो वे उसे सिसोदा ले आए।

प्रश्न : गोड़वाड़ के सामेरी ग्राम के खुंखार डकैत मुंजा बालेचा को किसने मारा?

बिण बादळ जिण भौम पर, रगतां कादौ रैय।
सैल खगां बरखा जठै, चत्रगढ हेला देय ॥

उत्तर : कुँवर हम्मीर ने उसका सिर काटकर चाचा अजयसिंह को भेंट कर दिया।

प्रश्न : अजय सिंह ने अपना उत्तराधिकारी किसे बनाया?

उत्तर : कुँवर हम्मीर को।

प्रश्न : मेवाड़ के कौन-से शासक ने महाराणा की पदवी को प्रथम बार धारण किया?

उत्तर : महाराणा हम्मीर।

प्रश्न : कुँवर हम्मीर को उत्तराधिकारी बनाने पर अजयसिंह के बेटे सज्जन सिंह व क्षेमसिंह कहाँ चले गए?

उत्तर : महाराष्ट्र के कोल्हापुर चले गए तथा वहाँ राज्य स्थापित किया।

प्रश्न : सज्जन सिंह की कौन-सी पीढ़ी में छत्रपति शिवाजी महाराज हुए?

उत्तर : 18वीं पीढ़ी में छत्रपति शिवाजी महाराज हुए।

प्रश्न : कुँवर हम्मीर ने जागीरदार बनते ही किस पर अधिकार करने की योजना बनाई?

उत्तर : चित्तौड़ पर जो कि उसके पूर्वजों का था जिसे अलाउद्दीन खिलजी ने 1303ई. में जीत लिया था, उस समय उस पर मालदेव सोनगरा का अधिकार था।

प्रश्न : चित्तौड़ पर अधिकार करने में असफल होने पर कुँवर हम्मीर ने किसके आशीर्वाद से चित्तौड़ प्राप्त किया?

उत्तर : बरबड़ी देवी के आशीर्वाद एवं सैन्य सहायता से।

प्रश्न : बरबड़ी देवी के आशीर्वाद एवं सैन्य सहायता से कुँवर हम्मीर का विवाह किससे हुआ?

उत्तर : जालोर के मालदेव सोनगरा की पुत्री से हुआ।

प्रश्न : मालदेव की पुत्री ने अपने पिता से दहेज में किसे मांगा?

रत्ता पाणी पीवियों, माटी म्हारी खाण।
ए वृन्दावन रा तिनकड़ा, गढ़ चित्तौड़ रो जाण॥

उत्तर : प्रखर बुद्धि प्रधानमंत्री मोजीराम को मांगा जिसकी सहायता से कुँवर हम्मीर ने चित्तौड़ प्राप्त किया।

प्रश्न : महाराणा हम्मीर ने अपने पूर्वजों की विरासत चित्तौड़ पर अधिकार कब किया था?

उत्तर : 1326 ई. में।

प्रश्न : महाराणा हम्मीर के समय मेवाड़ पर दिल्ली के किस सुल्तान ने आक्रमण किया था?

उत्तर : सुल्तान मुहम्मद तुगलक ने।

प्रश्न : महाराणा हम्मीर ने दिल्ली के सुल्तान मुहम्मद तुगलक को किस युद्ध में हराकर कैद कर लिया?

उत्तर : सिंगोली के युद्ध में।

प्रश्न : दिल्ली सुल्तान मुहम्मद तुगलक कितने समय महाराणा हम्मीर की कैद में रहा?

उत्तर : 3 मास तक।

प्रश्न : मुहम्मद तुगलक को महाराणा हम्मीर की कैद से मुक्त होने के बदले में क्या देना पड़ा?

उत्तर : 50 लाख रुपये 100 हाथी, अजमेर, रणथंभौर, नागौर, श्योपुर का इलाका देना पड़ा।

प्रश्न : चित्तौड़ का उद्धारक किसे कहा जाता है?

उत्तर : महाराणा हम्मीर को।

प्रश्न : महाराणा हम्मीर का देहावसान कब हुआ?

उत्तर : 1364 ई. में।

प्रश्न : चित्तौड़ दुर्ग स्थित बरबड़ी देवी का मंदिर वर्तमान में किस नाम से जाना

ये जौहर वाली धरती है, स्वतन्त्रता की दीवानी।
टूट गई पर झुकी नहीं, इसकी चट्टानें तूफानी।।

जाता है?

उत्तर : अन्नपूर्णा देवी मंदिर।

प्रश्न : चित्तौड़गढ दुर्ग में बरबड़ी देवी मंदिर जो कि अन्नपूर्णा नाम से विख्यात है, किसने बनवाया?

उत्तर : महाराणा हम्मीर ने।

प्रश्न : महाराणा हम्मीर के चित्तौड़ पर अधिकार करने में सहायता करने वाली बरबड़ी देवी कहाँ की निवासी थी?

उत्तर : गुजरात के खोड़ गाँव की।

प्रश्न : बरबड़ी देवी किसकी पुत्री थी?

उत्तर : खोड़ गाँव के चखड़ा चारण की पुत्री।

प्रश्न : बरबड़ी देवी के पुत्र का क्या नाम था जिसे 500 घोड़े देकर महाराणा हम्मीर की सहायता करने भेजा?

उत्तर : बारू।

प्रश्न : चित्तौड़ के किस शासक को विषम घाटी पंचानन कहा जाता था?

उत्तर : महाराणा हमीर को।

प्रश्न : महाराणा हम्मीर के उत्तराधिकारी कौन हुए?

उत्तर : महाराणा क्षेत्रसिंह (खेता) उसके बाद महाराणा लक्षसिंह (लाखा) हुए।

प्रश्न : मेवाड़ के किस शासक के शासनकाल में जावर में चांदी की खान प्राप्त हुई?

उत्तर : महाराणा लाखा के शासन काल में।

प्रश्न : मुसलमान बादशाहों द्वारा काशी, प्रयाग और गया तीर्थ स्थलों पर लगाये गये भारी कर किस महाराणा द्वारा समाप्त करवाये गये?

उत्तर : महाराणा लाखा।

जौहर जले 'ज' पद्मणी, घास भखे व राण।
देश हितां बिण सिंर लड़े, मेदपाट पहिचाण।।

प्रश्न : मेवाड़ का भीष्म किसे कहा जाता है?

उत्तर : कुँवर चुंडा को।

प्रश्न : रावत चुंडा को मेवाड़ का भीष्म क्यों कहा जाता है?

उत्तर : उन्होंने भी महाभारत के भीष्म की तरह अपने पिता की वृद्धावस्था में विवाह की इच्छापूर्ति के लिए राज्याधिकार का त्याग किया।

प्रश्न : महाराणा लाखा के बाद मेवाड़ के शासकों का राज्याभिषेक कौन करता आया है?

उत्तर : मेवाड़ के भीष्म कहे जाने वाले चुंडा के वंशज चुंडावत।

प्रश्न : मेवाड़ के भीष्म के नाम से प्रसिद्ध रावत चुंडा के माता-पिता का क्या नाम था?

उत्तर : राणी लखमादे-महाराणा लाखा।

प्रश्न : रावत चुंडा के विवाह के लिए किस राजकुमारी का प्रस्ताव आया था?

उत्तर : मारवाड़ के रणमल की बहन हँसा बाई का प्रस्ताव आया था।

प्रश्न: हँसाबाई का विवाह वृद्ध महाराणा लाखा से करवाने के बदले उसके भाई रणमल ने क्या शर्त रखी?

उत्तर : रणमल ने शर्त रखी कि मेरी बहन की कोख से उत्पन्न पुत्र ही मेवाड़ का उत्तराधिकारी होगा।

प्रश्न : हंसाबाई की कोख से किसका जन्म हुआ?

उत्तर : कुँवर मोकल का।

प्रश्न : महाराणा लाखा की मृत्यु के बाद चित्तौड़ पर राजकीय कार्यों में किसका हस्तक्षेप बढ़ गया?

उत्तर : हंसाबाई के भाई रणमल का।

ये एकलिंग की अभय भूमि, श्री आदिदेव शिवशंकर की।
अविनाशी पावन दिव्य ज्योति, अमरत्व लिये प्रलयंकर की।।

प्रश्न : रणमल के षड्यंत्रों से नाराज होकर रावत चुंडा ने क्या किया?

उत्तर : वे मेवाड़ छोड़कर मांडू चले गए। मेवाड़ छोड़ते समय हँसाबाई को कहा-" मैं मेवाड़ छोड़कर जा तो रहा हूँ किंतु जब भी मेरी आवश्यकता हो, मेवाड़ पर संकट आए तो मुझे समाचार करना, मैं दौड़ा चलाऊंगा।"

प्रश्न : चित्तौड़ में निर्मित समिद्धेश्वर मंदिर का जीर्णोद्धार किसने करवाया?

उत्तर : महाराणा मोकल ने।

प्रश्न : चित्तौड़ दुर्ग स्थित समिद्धेश्वर मंदिर का निर्माण किसने करवाया था?

उत्तर : राजा भोज परमार ने।

प्रश्न : महाराणा मोकल के बाद मेवाड़ का शासक कौन बना?

उत्तर : महाराणा कुंभा।

प्रश्न : मोकल की मृत्यु के बाद महत्वाकांक्षी रणमल के मेवाड़ में षड्यंत्रों का अंत करने के लिए उसका वध किसने किया?

उत्तर : हँसाबाई अपने भाई के षड्यंत्रों से परेशान हो गई तथा अपने पोत्र कुंभा की हत्या का संदेह सताने लगा तब उसने रावत चुंडा को मांडू से क्षमायाचना के साथ बुलाया और रावत चुंडा ने आकर रणमल का वध किया।

प्रश्न : रणमल के वध करने में चुंडा की सहायता किसने की?

उत्तर : हंसाबाई की दासी भारमली ने।

प्रश्न : महाराणा कुंभा का राज्याभिषेक कब हुआ?

उत्तर : 1433 ई. में।

प्रश्न : महाराणा कुंभा ने गुजरात के किस शासक को मेवाड़ में छह मास तक कैद में रखा?

उत्तर : मेहमूद खिलजी प्रथम को।

कल्ला जग में मोकळा, सह इण हेठै रैय।
जगत नभां रवि जिम दिपै, चत्रगढ हेला देय।।

हिंदुआ सूरज महाराणा प्रताप

RAS 2024 RESULTS
सफलता का सम्राट स्प्रिंगबोर्ड !!
जहाँ श्रेष्ठता संयोग नहीं, परंपरा है।
Springboard ACADEMY
We Bring The Best Out of You
36 in Top 50 Ranks
72 in Top 100 Ranks
Star achievers who realized their civil services dreams with us
Dinesh Vishnoi RANK- 1 Online Mains Batch
Virendra Charan RANK- 2 Test Series + Interview
Navneet Sharma RANK- 3 Foundation Batch
Vikash Sihag RANK- 5 Mains Batch
Aishwarya Kanwar RANK- 6 Foundation Batch
Dinesh RANK- 7 Mains Batch
Shallu RANK- 8 Test Series
Bhoopender Singh RANK- 9 Foundation Batch
Yashwant Sandu RANK- 11 Test Series + Interview
Chanan Singh Inda RANK- 14 Foundation Batch
Abhay Singh Anjana RANK- 15 Mains Batch
Hariyash Rajpurohit RANK- 17 Foundation Batch
Umang Rawal RANK- 18 Interview
Tanisha Yadav RANK- 19 Foundation Batch
Vrinda Shekhawat RANK- 20 Foundation Batch
Abhishek Amrawat RANK- 21 Online Mains Batch
Virendra Gadhwal RANK- 22 Mains Batch
Sahdev Bidada RANK- 23 Foundation Batch
Paramveer Singh RANK- 24 Online Mains Batch
Swaroop Singh RANK- 25 Online Foundation Batch
Aanchal Nagpal RANK- 26 Mains Batch
Mamta Limba RANK- 27 Interview
Arihant Jain RANK- 28 Foundation Batch
Simran Shekhawat RANK- 29 IAS Foundation Batch
Vinay Mohan RANK- 30 Test Series + Interview
Divyaraj Singh Dawel RANK- 32 Foundation Batch
Lokendra Singh RANK- 33 Foundation Batch
Vikas Choudhary RANK- 34 Online Foundation Batch
Krishanpal Singh RANK- 36 Test series
Mohammad Rasid RANK- 37 Pre + Mains Batch
Monika Chouhan RANK- 39 Test Series
Jitendra RANK- 43 Test Series + Interview
Amit Parihar RANK- 44 Interview
Amar Singh Rathore RANK- 45 Test Series + Interview
Ramavtar Mundel RANK- 49 Test Series + Interview
Dharmraj Singh Rao RANK- 50 Foundation Batch

Neeraj Jangid
RANK- 53
Foundation Batch
Vinod Choudhary
RANK- 54
Test Series + Interview
Ronak
RANK- 55
Pre + Mains Batch
Poonam
RANK- 57
Foundation Batch
Sachin Agrawal
RANK- 58
Mains Batch
Raja Ram Tetarwal
RANK- 60
Foundation Batch
Kamlesh Kumar Sharma
RANK- 61
Interview
Sumitra Bishnoi
RANK- 64
Foundation Batch
Arimardan Singh Chauhan
RANK- 65
Pre + Mains Batch
Unnat Kishor Rajora
RANK- 66
Test Series
Hemlata Choudhary
RANK- 67
Online Foundation Batch
Rahul Saini
RANK- 68
Foundation Batch
Kuldeep Singh
RANK- 69
Recorded Foundation Batch
Kritika Gaur
RANK- 70
Mains Batch
Mahendra
RANK- 72
Recorded Batch
Jayesh Prajapat
RANK- 73
Test Series + Interview
Mahendra Dan
RANK- 74
Foundation Batch
Yashika Kachhwaha
RANK- 75
Foundation Batch
Siddharth Dhakad
RANK- 76
Online Mains Batch
Jyotsana Ranawat
RANK- 77
Foundation Batch
Choudhary Madhu Rooparam
RANK- 78
Mains Batch
Vikash Bishnoi
RANK- 80
Test Series
Aslam Khan
RANK- 81
Foundation Batch
Damodar Pareek
RANK- 82
Interview
Kailash Kumar
RANK- 83
Test Series
Shyam Sunder Meena
RANK- 84
Mains Batch
Mohit Godara
RANK- 85
Interview
Narasi Ram Bishnoi
RANK- 86
Test Series
Mahendra Choudhary
RANK- 88
Test Series
Anchal Rungta
RANK- 90
Mains Batch
Riya Sharma
RANK- 92
Interview
Shirly Jain
RANK- 94
Interview
Shubham Soni
RANK- 95
Foundation Batch
Hemant Seervi
RANK- 96
Foundation Batch
Pankaj Khichar
RANK- 98
Foundation Batch
Vandana Patel
RANK- 100
Mains Batch
IAS/ RAS सेमिनार
3 Year Integrated Course After 12th Pass
IAS, RAS में चयनित अधिकारियों द्वारा मार्गदर्शन
26 अप्रैल 2026, रविवार
@ 10:15 AM
28 अप्रैल से नया बैच प्रारम्भ
RAS
Pre & Foundation Batch
14 अप्रैल से नया बैच प्रारम्भ
Riddhi - Siddhi, Gopalpura Bypass, Jaipur
9636977490, 0141-3555948
Contact us-
Springboard Academy Online
Springboard Academy Jaipur
स्प्रिंगबोर्ड एकेडमी के IAS, RAS हेतु प्रामाणिक क्लास नोट्स उपलब्ध
The Notes Hub 7610010054, 7300134518

दिवेर युद्ध में बहलोल खान को जिरह बख्तर
एवं घोड़े सहित चीरते महाराणा प्रताप

महाराणा प्रताप को मेवाड़ रक्षार्थ अपना सर्वस्व समर्पित करते
महादानी भामाशाह

प्रश्न : महाराणा कुंभा ने विजयस्तंभ किसकी स्मृति में बनवाया?

उत्तर : मालवा के सुल्तान महमूद खिलजी को परास्त किया उस विजय की स्मृति में सन 1440 ई. में विजयस्तंभ का निर्माण कार्य शुरू करवाया।

प्रश्न : विजयस्तंभ की प्रतिष्ठा कब हुई?

उत्तर : 1448 ई. में।

प्रश्न : महाराणा कुंभा ने मेवाड़ में कितने दुर्गों का निर्माण करवाया?

उत्तर : मेवाड़ के 84 छोटे-बड़े किलों में से 32 का निर्माण कुंभा ने करवाया।

प्रश्न : चित्तौड़ दुर्ग के पश्चिम में स्थित सात पोलों का निर्माण किसने करवाया?

उत्तर : महाराणा कुंभा ने।

प्रश्न : चित्तौड़ दुर्ग में कुंभश्याम मंदिर का निर्माण किसने करवाया?

उत्तर : महाराणा कुंभा ने।

प्रश्न : महाराणा कुंभा के माता-पिता का क्या नाम था?

उत्तर : पिता महाराणा मोकल और माता सौभाग्यवती परमार।

प्रश्न : मेवाड़ के भीष्म रावत चुंडा के भाई राघव देव की हत्या किसने करवाई?

उत्तर : हँसाबाई के भाई रणमल ने।

प्रश्न : आंवल-बांवल की संधि किन-किन के मध्य हुई?

उत्तर : जोधपुर के जोधा और मेवाड़ के महाराणा कुंभा के मध्य।

प्रश्न : सारंगपुर का युद्ध किन-किन के मध्य हुआ?

उत्तर : महाराणा कुंभा और मालवा के महमूद खिलजी के मध्य (कुंभा की विजय हुई)।

प्रश्न : महाराणा कुंभा को हराने के लिए चंपानेर की संधि किन-किन के मध्य हुई?

परनाळां पांणी पड़े, झरणां री इण ठौड़।
खून खाल खळकाविया, जुध वीराँ री जोड़॥

उत्तर : मालवा सुल्तान महमूद खिलजी और गुजरात सुल्तान कुतुबुद्दीन शाह के मध्य (1456 ई.)।

प्रश्न : किस युद्ध में कुंभा ने मालवा और गुजरात की संयुक्त सेना को हराया?

उत्तर : बदनौर के युद्ध में(1457 ई.)

प्रश्न : महाराणा कुंभा ने बदनोर(भीलवाड़ा) में किस देवी का मंदिर बनवाया?

उत्तर : कुशाल माता जिसे बैराठ माता मंदिर / जाढ बैराठ भी कहा जाता है।

प्रश्न : कीर्तिस्तंभ, विष्णुध्वज, गरुड़ध्वज, मूर्तियों का अजायबघर, भारतीय मूर्तिकला का विश्वकोश चित्तौड़ दुर्ग स्थित किस इमारत के नाम हैं?

उत्तर : विजयस्तंभ के।

प्रश्न : विजयस्तंभ के वास्तुकार कौन-कौन हैं?

उत्तर : जैता, पोमा, पूजा और नापा।

प्रश्न : कीर्तिस्तंभ प्रशस्ति के लेखक कौन हैं?

उत्तर : अत्रि और महेश।

प्रश्न : विजयस्तंभ की तुलना कुतुबमीनार से किसने की है?

उत्तर : कर्नल जेम्स टॉड।

प्रश्न : विजयस्तंभ की तुलना रोम के टार्जन टॉवर से किसने की है?

उत्तर : फर्ग्युसन ने।

प्रश्न : राजस्थान पुलिस, राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड और अभिनव भारत संगठन का प्रतीक चिह्न क्या है?

उत्तर : विजयस्तंभ।

प्रश्न : कुंभलगढ का वास्तुकार कौन था?

श्रद्धानत है सम्पूर्ण जगत, जौहर के अग्नि आचमन पर।
नारी सत के सम्मान हेतु, संकल्पी प्राण विसर्जन पर।।

उत्तर : मण्डन।

प्रश्न : मेवाड़ की संकटकालीन राजधानी किसे कहा जाता है?

उत्तर : कुंभलगढ़ दुर्ग को।

प्रश्न : मेवाड़-मारवाड़ का सीमा प्रहरी किसे कहा जाता है?

उत्तर : कुंभलगढ़ दुर्ग को।

प्रश्न : मेवाड़ की आँख किसे कहा जाता है?

उत्तर : कुंभलगढ़ दुर्ग स्थित कटारगढ़।

प्रश्न : कुंभलगढ़ प्रशस्ति का लेखक कौन है?

उत्तर : महेश।

प्रश्न : किस प्रशस्ति में कुंभा को धर्म एवं पवित्रता का अवतार बताया गया है?

उत्तर : कुंभलगढ़ प्रशस्ति में।

प्रश्न : कुंभलगढ, अचलगढ, बसंतगढ, मचान दुर्ग, भोमट दुर्ग के निर्माता कौन हैं?

उत्तर : महाराणा कुंभा।

प्रश्न : चित्तौड़ के किस महाराणा को 52 युद्धों का विजेता कहा जाता है?

उत्तर : महाराणा कुंभा।

प्रश्न : कुंभा की पुत्री जिसे संगीत प्रेम के कारण वागीश्वरी कहा जाता था, कौन थी?

उत्तर : रमाबाई।

प्रश्न : सुधा प्रबंध, कामराज, रतिसार, संगीत सुधा, संगीत मीमांसा, संगीत राज, रसिक प्रिया आदि रचनाओं के लेखक कौन हैं?

उत्तर : महाराणा कुंभा।

प्रश्न : एकलिंग माहात्म्य रचना के रचनाकार कौन हैं?

नारी रक्षा में उठी तेग, भीषण विप्लव से नहीं रुकी।
केसरिया अग्नि गर्भा कृपाण, लाखों मुगलों से नहीं झुकी।।

उत्तर : कान्ह व्यास।

प्रश्न : हिंदू सुरताण(हिंदुओं का रक्षक), अभिनव भरताचार्य, राणा रासौ, हाल गुरु(पहाड़ी किले जीतने वाला), चाप गुरु(धनुर्धर), परम भागवत, आदिवराह उपाधियाँ किनकी हैं?

उत्तर : महाराणा कुंभा की।

प्रश्न : उदयकरण से राज्य किसने छीना?

उत्तर : महाराणा कुंभा के दूसरे पुत्र कुँवर रायमल के नेतृत्व में मेवाड़ के सामंतों ने 1473 ई. में उदा से राज्य छीन लिया।

प्रश्न : मंडन, गोविंद, नाथा, सारंग व्यास, सुन्दरगणि,टिल्ला भट्ट मेवाड़ के किस शासक के दरबारी साहित्यकार थे?

उत्तर : महाराणा कुंभा।

प्रश्न : भुवनसुन्दरसूरी, सोमसुंदर सूरि, जयशेखर सूरि, मुनि जिनसेन सूरी, भुवन कीर्ति, सोमदेव, सुंदर सूरि, मुनिसुन्दर, माणिक्य आदि जैनाचार्य मेवाड़ के किस शासक के समकालीन थे?

उत्तर : महाराणा कुंभा।

प्रश्न : कीर्तिस्तंभ प्रशस्ति के अनुसार महाराणा कुंभा किस वाद्य को बजाने में निपुण थे?

उत्तर : वीणा।

प्रश्न : महाराणा कुंभा के संगीत गुरु कौन थे?

उत्तर : श्री सारंग व्यास।

प्रश्न : राजस्थानी वास्तुकला का जनक मेवाड़ के किस शासक को माना जाता है?

उत्तर : महाराणा कुंभा।

प्रश्न : विजयस्तंभ पर 1 रुपये का डाक टिकट कब जारी किया गया?

वे मनुज नहीं अवतारी थी, जलती लपटों में समा गयी।
इस एकलिंग की धरती के, कण-कण को चंदन बना गयी।।

उत्तर : 15 अगस्त, 1949 ई. को।

प्रश्न : मेवाड़ के महाराणा कुंभा एवं मालवा के सुल्तान महमूद खिलजी के मध्य सारंगपुर का युद्ध कब हुआ?

उत्तर : 1437 ई.।

प्रश्न : महाराणा सांगा का जन्म कब हुआ था?

उत्तर : 12 अप्रेल, 1482 ई. को।

प्रश्न : महाराणा सांगा के पिता का नाम क्या था?

उत्तर : महाराणा रायमल।

प्रश्न : महाराणा सांगा के दो बड़े भाई कौन-कौन थे?

उत्तर : कुँवर पृथ्वीराज व जयमल।

प्रश्न : महाराणा सांगा का उनके भाइयों से युद्ध किस बात को लेकर हुआ था?

उत्तर : किसी ज्योतिषी ने राजयोग की भविष्यवाणी में सबसे छोटे भाई सांगा का योग बताया

प्रश्न : कुँवर सांगा एवं उनके भाइयों में कलह समाप्त करवाने के लिए उनके चाचा सारंग देव उन्हें कहाँ लेकर गए?

उत्तर : भीमल ग्राम के देवी मंदिर की पुजारिन के पास।

प्रश्न : भीमल ग्राम के देवी मंदिर की पुजारिन ने किसका राजयोग बताया?

उत्तर : कुँवर सांगा का।

प्रश्न : कुँवर सांगा अपने बड़े भाई पृथ्वीराज से बचने के लिए किस गाँव पहुँचे?

उत्तर : सेवंत्री गाँव।

प्रश्न : सेवंत्री ग्राम में सांगा पर जब बड़े भाई जयमल ने हमला किया तो उनकी रक्षा करते हुए कौन वीरगति को प्राप्त हुआ?

यहाँ घास की रोटी से वैभव ने हार मानी।
इस धरती में गूँज रही जीवन की अमर कहानी।।

उत्तर : राठौड़ बीदा(रूपनारायण के मंदिर में)।

प्रश्न : अपने भाइयों के हमले से बचने के लिए कुँवर सांगा अज्ञातवास में कहाँ रहे?

उत्तर : श्रीनगर(अजमेर जिला)में कर्मचंद पंवार के यहाँ।

प्रश्न : घोसुंडी में बावड़ी का निर्माण किसने करवाया?

उत्तर : महाराणा रायमल की पत्नी श्रृंगार देवी ने।

प्रश्न : उड़ना राजकुमार किसे कहा जाता है?

उत्तर : महाराणा रायमल के बेटे कुँवर पृथ्वीराज को।

प्रश्न : उड़ना राजकुमार पृथ्वीराज ने अपनी पत्नी तारा के नाम पर अजमेर दुर्ग का क्या नाम रखा?

उत्तर : तारागढ़।

प्रश्न : महाराणा सांगा का राज्याभिषेक कब हुआ?

उत्तर : बड़े भाई पृथ्वीराज और जयमल की मृत्यु के बाद 1509 ई. में हुआ।

प्रश्न : महाराणा सांगा ने कुल कितने युद्ध लड़े?

उत्तर : 100 से अधिक युद्ध लड़े।

प्रश्न : चित्तौड़ के महाराणा जिसके शरीर पर 80घाव थे, कौन थे?

उत्तर : महाराणा सांगा।

प्रश्न : राजस्थान के किस शासक को विद्वानों ने 'हिंदुपत' कहा?

उत्तर : महाराणा सांगा (हिंदुओं का रक्षक होने के कारण)।

प्रश्न : महाराणा सांगा ने मालवा के किस शासक को 6 महीने तक कैद करके रखा और बाद में उदारता पूर्वक छोड़ दिया?

उत्तर : महमूद खिलजी द्वितीय को।

बाप कट्यो मायड़ बली, घर सुनो जाणीह।
पूत अंगूठो चूंखतो, राखै निंगराणीह।।

प्रश्न : महाराणा सांगा ने गागरोन के युद्ध में किसको हराया था?

उत्तर : मालवा के शासक महमूद खिलजी द्वितीय को।

प्रश्न : महाराणा सांगा और महमूद खिलजी द्वितीय के मध्य गागरोन का युद्ध कब हुआ?

उत्तर : 1519 ई।.

प्रश्न : महाराणा सांगा ने खातौली के युद्ध में किसे हराया?

उत्तर : इब्राहिम लोदी की सेना को।

प्रश्न : खातौली का युद्ध कब हुआ था?

उत्तर : 1517 ई.।

प्रश्न : खातौली नामक स्थान वर्तमान में किस जिले में है?

उत्तर : कोटा जिले में।

प्रश्न : बाड़ी के युद्ध में महाराणा सांगा ने किसे हराया था?

उत्तर : इब्राहिम लोदी।

प्रश्न : महाराणा सांगा और इब्राहिम लोदी के बीच बाड़ी का युद्ध कब हुआ था?

उत्तर : 1518 ई. में।

प्रश्न : बाड़ी नामक स्थान वर्तमान में किस जिले में है?

उत्तर : धौलपुर जिले में।

प्रश्न : महाराणा सांगा ने बयाना के युद्ध में किसे हराया था?

उत्तर : बाबर को।

प्रश्न : महाराणा सांगा ने बयाना के युद्ध में बाबर को कब हराया?

उत्तर : 21 फरवरी, 1527 ई.।

ये जौहर वाली धरती है, स्वतन्त्रता की दीवानी।
टूट गई पर झुकी नहीं, इसकी चट्टाने तूफानी।।

प्रश्न : महाराणा सांगा और बाबर के मध्य खानवा का युद्ध कब हुआ था?

उत्तर : 17 मार्च 1527 ई.।

प्रश्न : खानवा वर्तमान में किस जिले में है?

उत्तर : भरतपुर जिले में।

प्रश्न : बाबर ने खानवा के युद्ध में किस युद्ध नीति का अनुसरण किया?

उत्तर : तुलुगमा युद्ध नीति।

प्रश्न : खानवा के युद्ध में बाबर ने किस विशेष अस्त्र का प्रयोग किया?

उत्तर : तोपों का प्रयोग किया।

प्रश्न : महाराणा सांगा की सेना में राजस्थान के कौन-कौन से सेनानायकों ने अपना शौर्य दिखाया?

उत्तर : आमेर के राजा पृथ्वीराज, डूंगरपुर के रावल उदयसिंह, चंदेरी के राजा मैदिनी राय, बीकानेर के कुँवर कल्याणमल, प्रतापगढ़ के रावत बाघसिंह, ईडर के राजा भारमल, जोधपुर के कुँवर मालदेव, मेड़ता के रतन सिंह और वीरमदेव, सलूंबर के रतन सिंह चुंडावत, बड़ी सादड़ी से झाला सज्जा और अज्जा, मेहमूद खाँ लोदी और हसन खान मेवाती आदि योद्धा लड़े।

प्रश्न : मेवाड़ के किस महाराणा के नेतृत्व में पूरा राजस्थान पहली बार और अंतिम बार एक होकर के लड़ा?

उत्तर : महाराणा सांगा के नेतृत्व में खानवा के युद्ध में।

प्रश्न : बाबर के खिलाफ पूरे राजस्थान को एक करने के लिए महाराणा सांगा ने क्या किया?

उत्तर : प्रत्येक राजा के पास युद्ध के लिए पाती-परवाना भेजा।

प्रश्न : बयाना के युद्ध में हार झेल चुकी बाबर की भयभीत सेना को बाबर ने खानवा के युद्ध में कैसे उत्साहित किया?

मेरे जौहर और शाकों से यमराज यहाँ खा गए मात।
जब कभी जली शमाँ तभी निज को कर दिया भस्मसात।।

उत्तर : बाबर ने सांगा के विरुद्ध युद्ध हेतु अपने भयभीत सैनिकों को उत्साहित करने के लिए शराब न पीने की कसम खाई, शराब के प्याले तुड़वा दिए, इस युद्ध को 'जिहाद'(धर्म युद्ध) घोषित किया, सैनिकों को कुरान शरीफ हाथ में लेकर युद्ध से विमुख न होने की सौगंध खाने को कहा।

प्रश्न : खानवा के युद्ध में बाबर कहाँ था?

उत्तर : बाबर अपनी रिजर्व सेना का नेतृत्व कर रहा था और युद्ध में सबसे पीछे था?

प्रश्न : खानवा के युद्ध में महाराणा सांगा की क्या भूमिका थी?

उत्तर : महाराणा सांगा खानवा के युद्ध में सबसे आगे हरावल दस्ते का नेतृत्व कर रहे थे

प्रश्न : महाराणा सांगा के घायल हो जाने पर राजपूत सेना का नेतृत्व किसने किया?

उत्तर : राजराणा झाला अज्जा ने महाराणा सांगा के राजचिह्न धारण किए और सेना का नेतृत्व करते हुए बलिदान हुए।

प्रश्न : राजराणा झाला अज्जा कहाँ के निवासी थे?

उत्तर : बड़ीसादड़ी।

प्रश्न : बड़ीसादड़ी के झाला वंश ने मेवाड़ महाराणाओं के लिए निरंतर कितनी पीढ़ी तक बलिदान दिए?

उत्तर : सात पीढ़ी तक।

प्रश्न : महाराणा सांगा के खानवा के युद्ध में घायल हो जाने पर उन्हें किस स्थान पर ले जाया गया?

उत्तर : बसवा नामक स्थान पर।

प्रश्न : महाराणा सांगा ने बसवा नामक स्थान पर क्या प्रतिज्ञा की?

उत्तर : सांगा ने प्रतिज्ञा की कि जब तक बाबर को हरा नहीं दूंगा तब तक चित्तौड़

अस्सी घावों पर भी सांगा तुमने तलवार नहीं छोड़ी।
इस वीर प्रसूता धरती के गौरव की आन नहीं तोड़ी।।

नहीं लौटूंगा, रणथंभौर में एकांत में चले गए, पगड़ी बांधना छोड़ दिया और मात्र एक कपड़े का टुकड़ा लपेटे रहते थे।

प्रश्न : महाराणा सांगा की मृत्यु कैसे हुई?

उत्तर : सांगा पुनः सेना लेकर ईरीच नामक स्थान पर पहुँचे किंतु युद्ध न चाहने वाले सामंतों ने उन्हें विष दे दिया।

प्रश्न : महाराणा सांगा की मृत्यु कब हुई?

उत्तर : 30 जनवरी 1528 ई. को।

प्रश्न : महाराणा सांगा की मृत्यु किस स्थान पर हुई?

उत्तर : कालपी नामक स्थान पर।

प्रश्न : महाराणा सांगा का विधिवत दाह संस्कार कहाँ किया गया?

उत्तर : मांडलगढ़ में किया गया।

प्रश्न : महाराणा सांगा की छतरी कहाँ पर बनी हुई है?

उत्तर : मांडलगढ़ में।

प्रश्न : मृत्यु के समय महाराणा सांगा के शरीर की क्या स्थिति थी?

उत्तर : सांगा के एक आँख, एक हाथ, एक टांग ही सही थी, उनके शरीर पर 80 घाव थे।

प्रश्न : खानवा के युद्ध में राजपूत सैनिकों ने किस प्रकार की वीरता दिखाई?

उत्तर : खानवा के युद्ध में राजपूत सैनिक तोपों के सामने भिड़ गए, अपने मस्तक तोपों की नाल में लगा दिए, कुछ तोपें भी छीन ली किंतु महाराणा सांगा के घायल होने और बाबर की रिजर्व सेना के आक्रमण से वे पीछे हट गए।

प्रश्न : खानवा के युद्ध में जीतने के बाद बाबर की सेना ने क्या किया?

उत्तर : युद्ध के बाद भी बाबर की सेना भयभीत थी और मेवाड़ की ओर नहीं बढ़ी।

नदिया गंडक, नर्बदा, कँकर पुजवै क्रोड ।
कमती उण सूं नह कदी, भाटा गढ़ चित्तौड़।।

प्रश्न : "महाराणा सांगा अपने बहादुरी और तलवार के बल पर बहुत बड़ा हो गया था। मालवा, दिल्ली और गुजरात का कोई अकेला सुल्तान उसे हरा नहीं सकता था। " उपर्युक्त कथन किसकी आत्मकथा में लिखा हुआ है?

उत्तर : बाबर की आत्मकथा में।

प्रश्न : "महाराणा सांगा की सेना में 100000(एक लाख) योद्धा और पाँच सो हाथी थे। सात बड़े राजा, 9 उमराव व 104 रावत उसके अधीन थे।" कथन किस इतिहासकार का है?

उत्तर : कर्नल जेम्स टॉड का।

प्रश्न : महाराणा सांगा का पूरा नाम क्या था?

उत्तर : महाराणा संग्राम सिंह।

प्रश्न : चित्तौड़ के किस महाराणा को कर्नल टॉड ने सैनिकों का भग्नावशेष कहा?

उत्तर : महाराणा सांगा को।

प्रश्न : चित्तौड़ की वीरांगना जिसने बहादुर शाह के आक्रमण के समय सैनिक वेश पहन कर शत्रु सेना का मुकाबला किया कौन थी?

उत्तर : जवाहर बाई राठौड़।

प्रश्न : जवाहर बाई किसकी पत्नी थी?

उत्तर : महाराणा सांगा की।

प्रश्न : चित्तौड़ दुर्ग पर भगवान देवनारायण का मंदिर किसने बनवाया?

उत्तर : महाराणा सांगा ने।

प्रश्न : माँ पन्ना के पुत्र चंदन का जन्म कब हुआ?

उत्तर : जुलाई 1521 ई. में हुआ।

प्रश्न : महाराणा सांगा के पुत्र उदयसिंह का जन्म कब हुआ?

सूर्य झुका, झुक गये कलाधर, झुके गगन के तारे।
अखिल विश्व के शीश झुके, पर झुके न तुम प्रताप प्यारे।।

उत्तर : 14 अगस्त 1521 को हुआ।

प्रश्न : उदयसिंह की माता का नाम क्या था?

उत्तर : महारानी कर्मवती।

प्रश्न : कुँवर उदयसिंह की धाय के रूप में किसे चुना गया?

उत्तर : माँ पन्ना को।

प्रश्न : महाराणा सांगा ने जीवित ही चित्तौड़ का उत्तराधिकारी किसे नियुक्त किया?

उत्तर : रतन सिंह को।

प्रश्न : महाराणा सांगा ने महारानी कर्मवती व उनके पुत्र कुँवर विक्रमादित्य एवं उदयसिंह को कौन-सा क्षेत्र दिया?

उत्तर : रणथंभौर का क्षेत्र।

प्रश्न : बालक उदयसिंह के साथ ही माँ पन्नाधाय कहाँ चली गई?

उत्तर : रणथंभौर।

प्रश्न : महाराणा रतन सिंह की मृत्यु किसके हाथों हुई?

उत्तर : सूरजमल हाड़ा के हाथों हुई।

प्रश्न : महाराणा रतन सिंह के बाद चित्तौड़ का शासक कौन बना?

उत्तर : महाराणा विक्रमादित्य।

प्रश्न : माँ पन्ना कुँवर उदयसिंह के साथ पुनः चित्तौड़ कब आई?

उत्तर : 1331 ई. में जब विक्रमादित्य महाराणा बने।

प्रश्न: महाराणा विक्रमादित्य ने शासक बनते ही सामंतों पर आधारित पारंपरिक सैन्य व्यवस्था में क्या परिवर्तन किया ?उत्तर: अपनी सेना में सात हजार पहलवानों को भर्ती किया।

कुण खग ताणै शीश पै, इण मेवाड़ नरेश ।
जद तक मूछां ताणतो, सिंर धड़ पर शगतेश।।

प्रश्न: महाराणा विक्रमादित्य के समय चित्तौड़ की कमजोर स्थिति को देखकर किसने आक्रमण किया?

उत्तर: गुजरात के शासक बहादुर शाह ने।

प्रश्न: गुजरात के शासक बहादुर शाह ने चित्तौड़गढ़ पर प्रथम आक्रमण कब किया?

उत्तर: 1534 ई.

प्रश्न: बहादुरशाह का दूसरा आक्रमण चित्तौड़ पर कब हुआ?

उत्तर: 1535 ई. में।

प्रश्न: बहादुरशाह के दूसरे आक्रमण के समय राजमाता कर्मवती ने महाराणा विक्रमादित्य और कुँवर उदयसिंह को किसके साथ सुरक्षित बूंदी भेजा?

उत्तर: माँ पन्नाधाय के साथ।

प्रश्न: कुँवर उदयसिंह को सुरक्षित बूंदी भेज कर कर्मवती ने क्या किया?

उत्तर: कर्मवती ने 8 मार्च 1535 ई. में 13000 स्त्रियों के साथ जौहर किया।

प्रश्न: जौहर से पहले कर्मवती ने बालक कुँवर उदयसिंह की रक्षा एवं पालन-पोषण की जिम्मेदारी किसे दी?

उत्तर: माँ पन्नाधाय को।

प्रश्न: कर्मवती के जौहर के बाद चित्तौड़ में हुए केसरिया का नेतृत्व किसने किया?

उत्तर: रावत बाघसिंह ने।

प्रश्न: 1535 ई. में बहादुर शाह द्वारा चित्तौड़गढ़ को जीत लिया गया, पुनः चित्तौड़ को आजाद किसने करवाया?

उत्तर: चित्तौड़ के सामंतों ने कुछ ही दिनों में चित्तौड़ को पुनः जीत लिया और विक्रमादित्य को फिर से मेवाड़ के सिंहासन पर बिठाया।

जय एकलिंग , जय एकलिंग ,जय प्रलयंकर शंकर हर-हर।
जय हर-हर गिरि का बोल उठा, कंकड़-कंकड़ , पत्थर-पत्थर॥

प्रश्न : माँ पन्नाधाय ने बूंदी जाते समय राजमाता कर्मवती को क्या वचन दिया था?

उत्तर : उनके पुत्र कुँवर उदयसिंह की रक्षा का वचन दिया था।

प्रश्न : महाराणा विक्रमादित्य और कुँवर उदयसिंह को कौन मारना चाहता था?

उत्तर : बनवीर।

प्रश्न : बनवीर महाराणा विक्रमादित्य और कुँवर उदयसिंह को क्यों मारना चाहता था?

उत्तर : वह मेवाड़ का महाराणा बनना चाहता था।

प्रश्न : माता पन्नाधाय ने कुँवर उदयसिंह को किसके साथ किले के नीचे तक भेजा?

उत्तर : किरतबारी एवं कासम खां हेला के साथ।

प्रश्न : माता पन्नाधाय ने अपने पुत्र चन्दन का बलिवान किन महलों में दिया?

उत्तर : कँवरपदा के महल(कुम्भा महल)

प्रश्न : बनवीर कौन था?

उत्तर : बनवीर महाराणा सांगा के बड़े भाई पृथ्वीराज का अनौरस(पासवान) पुत्र था, जो यह मानता था कि महाराणा रायमल के सबसे बड़े पुत्र पृथ्वीराज का बड़ा पुत्र होने के नाते मेवाड़ के राज सिंहासन पर मेरा हक है। वह महाराणा सांगा को महाराणा नहीं मानता था, वह महाराणा सांगा के विरुद्ध मांडू सुल्तान के पास चला गया था।

प्रश्न : बनवीर के माता-पिता का नाम क्या था?

उत्तर : पिता पृथ्वीराज, माता पुतलदे।

प्रश्न : कुँवर उदयसिंह नकली है या असली के भ्रम निवारण के लिए क्या उपाय किया गया?

बनकर राणा सदृश महान सीखें हम होना कुर्बान।
चेतक सम लें वाजि खरीद, जननी-पद पर हों बलिदान॥

उत्तर : सामंतों ने उदयसिंह की झूठी थाली में भोजन किया। तब अखेराज सोनगरा ने अपनी पुत्री का विवाह उदयसिंह से करवाया।

प्रश्न : अखेराज सोनगरा कहाँ के थे?

उत्तर : पाली के।

प्रश्न : अखेराज सोनगरा की पुत्री का क्या नाम था, जिसका विवाह महाराणा उदयसिंह के साथ हुआ?

उत्तर : जयवंता बाई।

प्रश्न : महाराणा उदयसिंह और महारानी जयवंता बाई का विवाह कब हुआ?

उत्तर : 1538 ई. में।

प्रश्न : उदयसिंह ने बनवीर को किस युद्ध में हराकर चित्तौड़ पर अधिकार किया?

उत्तर : मावली के युद्ध में।

प्रश्न : मावली का युद्ध कब हुआ?

उत्तर : 1540 ई. में।

प्रश्न : माँ पन्ना धाय ने प्रताप को कितने वर्ष अपनी गोद में खेलाया?

उत्तर : पाँच वर्ष।

प्रश्न : माँ पन्नाधाय का देहांत कब हुआ?

उत्तर : 1545 ई. में।

प्रश्न : अकबर के मेड़ता पर अधिकार कर लेने पर राव जयमल राठौड़ को किसने शरण दी?

उत्तर : चित्तौड़ के महाराणा उदयसिंह ने

प्रश्न : महाराणा उदयसिंह ने राव जयमल को कौन-सी जागीर दी?

उत्तर : बदनोर की जागीर।

आओ खोज निकालें यन्त्र, जिससे रहें न हम परतन्त्र।
फूंकें कान-कान में मन्त्र , बन जायें स्वाधीन-स्वतन्त्र॥

प्रश्न : 1568 ई. में अकबर के चित्तौड़ दुर्ग पर आक्रमण के समय महाराणा उदय सिंह ने दुर्ग की रक्षा की जिम्मेदारी किसे सौंपी?

उत्तर : राव जयमल राठौड़ को।

प्रश्न : राव जयमल राठौड़ को अकबर ने अपनी ओर मिलाने के लिए क्या प्रलोभन दिए?

उत्तर : नागौर और मेड़ता का राज्य तथा पर्याप्त धन, हाथी-घोड़े देने का प्रलोभन दिया।

प्रश्न : राव जयमल जी राठौड़ को अपनी ओर मिलाने के लिए अकबर ने किसे भेजा?

उत्तर : टोडर मल को।

प्रश्न : अकबर के आक्रमण के समय रावत पत्ता चुंडावत की माँ व पत्नी का क्या नाम था, जिन्होंने युद्ध करते हुए वीरगति पाई?

उत्तर : माँ सज्जन कुँवर और पत्नी जीवा बाई।

प्रश्न : चित्तौड़ पर आक्रमण के दौरान वीर कल्ला राठौड़ का सिर कट गया किंतु धड़ कहाँ गिरा ?

उत्तर : सलूंबर के पास रुंडेला ग्राम में।

प्रश्न : राव जयमल और रावत पत्ता की हाथी पर सवार मूर्तियाँ जो आगरे के किले के बाहर लगी थी को किसने तुड़वा दिया?

उत्तर : ओरंगजेब ने।

प्रश्न : महाराणा उदयसिंह ने उदयपुर की स्थापना कब की?

उत्तर : 15 अप्रेल, 1553 ई. आखातीज को।

प्रश्न : महाराणा उदयसिंह ने वीर कल्ला राठौड़ की नियुक्ति कहाँ पर की?

उत्तर : रणढालपुर की जागीर देकर गुजरात की सीमा से लगे क्षेत्र का रक्षक नियुक्त

शीश कटे हित देश रे, रणवीरां री ठौड़।
बिना सिर धड़ रण लड़ै, जय जय जय चित्तौड़॥

किया।

प्रश्न : वीर कल्ला राठौड़ की पत्नी कौन थी?

उत्तर : शिवगढ़ के राव कृष्णदास की पुत्री कृष्णा कुमारी।

प्रश्न : जब महाराणा उदयसिंह का अकबर द्वारा चित्तौड़ पर आक्रमण का समाचार मिला तब वीर कल्ला कहाँ थे?

उत्तर : वे अपने ससुराल बारात के साथ तोरण की रस्म अदायगी कर रहे थे।

प्रश्न : युद्ध का समाचार सुन वीर कल्ला ने क्या किया?

उत्तर : पत्नी को शीघ्र लौटने का आश्वासन देकर तुरंत चित्तौड़ प्रस्थान किया।

प्रश्न : मीरां बाई का जन्म कहाँ हुआ?

उत्तर : मेड़ता रियासत के कुड़की ग्राम में।

प्रश्न : कुड़की ग्राम वर्तमान में किस जिले में हैं?

उत्तर : पाली जिले में।

प्रश्न : मीरां बाई के बचपन का क्या नाम था?

उत्तर : पेमल।

प्रश्न : मीरां बाई के पिता का नाम क्या था?

उत्तर : रतन सिंह राठौड़।

प्रश्न : मीरां बाई की माता का क्या नाम था?

उत्तर : झाली वीर कुँवरी।

प्रश्न : मीरां बाई की माता वीर कुँवरी के पिता कौन थे?

उत्तर : हलवद सौराष्ट्र के झाला सुल्तान सिंह।

प्रश्न : मीरां बाई की माता का देहावसान हुआ तब मीरां बाई की आयु कितनी थी?

कागद में मंडवी मिलै, कीरत बत थोथीह ।
सूर सत्यां सागै कथै, (आ) पथरां री पोथीह॥

उत्तर : 7 वर्ष।

प्रश्न : मीरां बाई के पिता रतन सिंह का बलिदान किस युद्ध में हुआ?

उत्तर : खानवा के युद्ध में।

प्रश्न : माता के देहांत के बाद मीरां बाई का पालन-पोषण किसने किया?

उत्तर : उनके दादा राव दूदा ने।

प्रश्न : मीरां बाई बचपन से ही किसकी भक्त थी?

उत्तर : श्री कृष्ण की।

प्रश्न : मीरां बाई की भक्ति किस प्रकार की थी?

उत्तर : माधुर्य भाव(दाम्पत्य भाव) की भक्ति।

प्रश्न : मीरां बाई के पद क्या कहलाते हैं?

उत्तर : हरजस।

प्रश्न : मीरां बाई का विवाह किसके साथ हुआ?

उत्तर : मेवाड़ के कुँवर भोजराज के साथ।

प्रश्न : मीरां बाई का विवाह कब हुआ?

उत्तर : 1516 ई. के आस-पास।

प्रश्न : मीरां बाई के ससुर कौन थे?

उत्तर : महाराणा सांगा।

प्रश्न : मीरां बाई के पति की मृत्यु कब हुई?

उत्तर : कुँवर भोज राज विवाह के कुछ ही समय बाद किसी युद्ध में घायल होने के बाद उनकी मृत्यु हो गई।

प्रश्न : विधवा हो चुकी मीरां बाई को किसने कष्ट दिए?

बिण बादळ जिण भौम पर, रगतां कादौ रैय।
सैल खगां बरखा जठै, चत्रगढ हेला देय ॥

उत्तर : देवर महाराणा विक्रमादित्य ने।

प्रश्न : महाराणा विक्रमादित्य ने मीरां बाई को कष्ट क्यूँ दिए?

उत्तर : मीरां बाई द्वारा साधु संतों के साथ सत्संग करना महाराणा विक्रमादित्य को रजपूती मर्यादा के खिलाफ लगता था।

प्रश्न : महाराणा विक्रमादित्य ने मीरां बाई को कष्ट पहुँचाने के लिए क्या-क्या उपाय किये?

उत्तर : विष देना, सर्प पिटारा भेजना, पहरा बिठवाना आदि उपाय किए।

प्रश्न : मीरां बाई ने महाराणा विक्रमादित्य द्वारा भिजवाये गए विष को क्या मानकर पी लिया?

उत्तर : मीरां बाई विष को अपने इष्ट सांवरे का चरणामृत मानकर पी गई।

प्रश्न : मीरां बाई पर विष का क्या प्रभाव हुआ?

उत्तर : श्री कृष्ण के प्रति अटूट विश्वास से विष प्रभाव रहित हो गया।

प्रश्न : राणा द्वारा नौसर हार कहकर भेजे गए साँप का क्या प्रभाव हुआ?

उत्तर : वह मीरां बाई के गले में ईश्वर कृपा से अहिंसक वृत्ति वाला हो गया, उसने मीरां बाई को डसा नहीं।

प्रश्न : मीरां बाई का गुरु किसे माना जाता है?

उत्तर : संत रैदास या रविदास।

प्रश्न : मीरां बाई किस संप्रदाय में दीक्षित थी?

उत्तर : मीरां बाई ने किसी संप्रदाय में दीक्षा नहीं ली इसलिए उसे संप्रदायनिर्पेक्ष भक्त कवयित्री कहा जाता है।

प्रश्न : मीरां बाई चित्तौड़ छोड़कर कहाँ गई?

उत्तर : पहले मेड़ता, फिर वृंदावन और द्वारका गई।

सुत दीधौ सत नहं दियौ, असी धाय कुण व्हेय ।
वी पन्ना री खानड़ी,चत्रगढ हेला देय ॥

प्रश्न : मीरां बाई की भेंट वृंदावन में किस संत से हुई?

उत्तर : संत जीव गोस्वामी से भेंट हुई।

प्रश्न : संत जीव गोस्वामी द्वारा स्त्रियों से न मिलने की बात जानकर मीरां बाईने क्या प्रत्युत्तर दिया?

उत्तर : मीरां बाई ने कहा - "मैंने तो सुना है वृदावन में केवल पुरुष कृष्ण हैं, बाकि सब स्त्रियां(आत्मा) हैं तो ये दूसरा पुरुष कौन है?"

प्रश्न : मीरां बाई का प्रत्युत्तर सुनकर संत जीव गोस्वामी ने क्या प्रतिक्रिया व्यक्त की?

उत्तर : संत जीव गोस्वामी का पुरुष होने का अहंकार विलीन हो गया और मीरां बाई से बोले- "माँ आपने आज मेरे ज्ञान चक्षु खोल दिए।"

प्रश्न : स्वस्ति श्री तुलसी कुलभूषण, दूषण हरण गोसाई।

बारहिं बार प्रनाम करहूँ, अब हरहूँ सोक समुदाई॥

उक्त पंक्तियाँ मीरां बाई ने किसे लिखकर भेजी?

उत्तर : संत कवि तुलसीदास को।

प्रश्न : तुलसी दास ने मीरां बाई को चिट्ठी का क्या जवाब दिया?

उत्तर : जाके प्रिय न राम वैदेही।

सो नर तजिए कोटि बैरी सम, जदपि परम स्नेही॥

प्रश्न : मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई,

जाके सिर मोर मुकुट मेरो पति सोई॥

उक्त काव्य पंक्तियाँ किसने लिखी?

उत्तर : मीरां बाई

प्रश्न : किस महाराणा ने मीरां बाई को वापस लाने के लिए अपने पुरोहितों को

भामो सह धन दे दियौ, पातल रो पत रेय।
करम कछेड़ी शाह उण, चत्रगढ हेला देय ।।

द्वारका भेजा?

उत्तर : महाराणा उदयसिंह ने।

प्रश्न : महाराणा उदयसिंह ने अपने पुरोहितों को मीरां बाई को वापस मेवाड़ लाने के लिए द्वारका क्यों भेजा?

उत्तर : मेवाड़ की जनता में यह धारणा हो गई थी कि मेवाड़ में अतिवृष्टि, अकाल, महामारियाँ और आक्रमण होने का कारण मीरां बाई का मेवाड़ छोड़कर जाना है, जिसके कारण ईश्वर रुष्ट हो गए।

प्रश्न : मीरां बाई का देहावसान कैसे हुआ?

उत्तर : एक किंवदंति के अनुसार मीरां बाई मेवाड़ आने की अनुमति मांगने 1547 ई. में द्वारका स्थित कृष्ण मंदिर में गई, वहीं वह मूर्ति में समा गई।

प्रश्न : मीरां बाई के भजनों और गेय पदों में किस रस की प्रधानता है?

उत्तर : भक्ति रस एवं विरह श्रृंगार रस की प्रधानता है।

प्रश्न : मीरां बाई के पदों की भाषा कौन-सी है?

उत्तर : ब्रज मिश्रित पश्चिमी राजस्थानी भाषा।

प्रश्न : मीरां बाई की रचनाएँ कौन-कौन सी हैं?

उत्तर : मीरां बाई पदावली, नरसी जी रो मायरो, राग गोविंद, राग सोरठ, मीरां बाई की मल्हार, गीत गोविंद की टीका आदि।

स्वतंत्रता के लिए मरो, राणा ने पाठ पढ़ाया था।
इस वैदिका पर वीरों ने अपना शीश चढ़ाया था॥

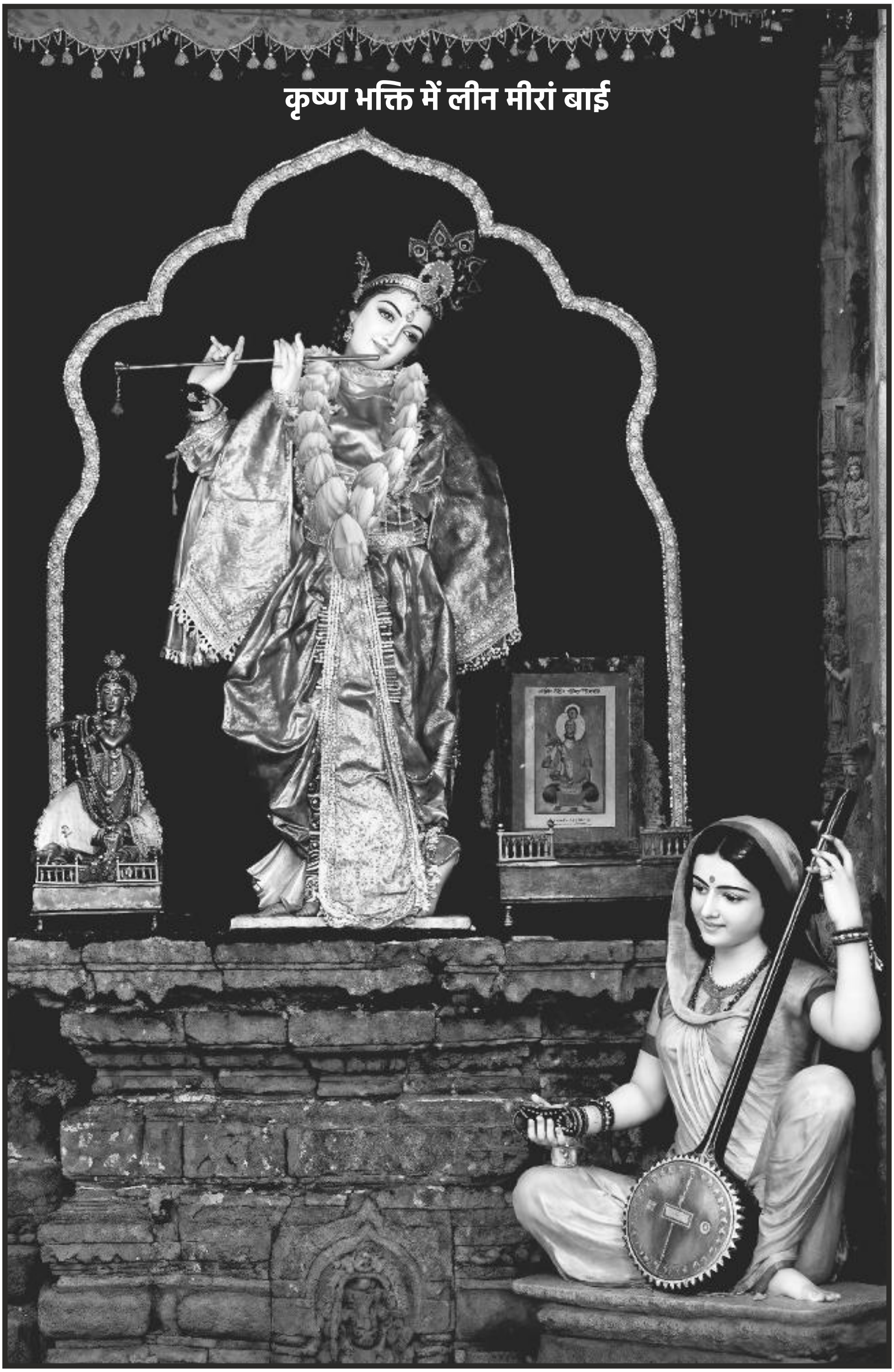

कृष्ण भक्ति में लीन मीरां बाई

किशोरावस्था में बाघ से भिड़ते कुँवर प्रताप

3. मेवाड़ : वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप

प्रश्न : कुँवर प्रताप का जन्म कब हुआ?

उत्तर : 9 मई, 1540 ई. को।

प्रश्न : कुँवर प्रताप का जन्म किस दुर्ग में हुआ?

उत्तर : कुंभलगढ़ दुर्ग में।

प्रश्न : कुँवर प्रताप का जन्म कुंभलगढ़ दुर्ग के किस महल में हुआ?

उत्तर : कटारगढ़ में।

प्रश्न : महाराणा प्रताप का देवलोक गमन कब हुआ?

उत्तर : 19 जनवरी, 1597 ई.।

प्रश्न : महाराणा प्रताप की माता का नाम क्या था?

उत्तर : महारानी जयवंता बाई।

प्रश्न : महाराणा प्रताप के पिता का नाम क्या था?

उत्तर : महाराणा उदयसिंह।

प्रश्न : महाराणा प्रताप की माता महारानी जयवंता बाई किसकी पुत्री थी?

उत्तर : अखेराज सोनगरा की पुत्री थी।

प्रश्न : महाराणा प्रताप का ननिहाल कहाँ था?

उत्तर : पाली।

प्रश्न : महाराणा प्रताप की पटरानी का नाम क्या था?

उत्तर : महारानी अजबदे पंवार।

प्रश्न : महारानी अजबदे पंवार कहाँ की राजकुमारी थी?

उत्तर : बिजोलिया की।

बीसनू तो छोटा हुआ, ले धरती बगसीस।
चूंडो दे मोटो हुवो, अम्बर अडियो सीस ।।

प्रश्न : महाराणा प्रताप के कितने भाइयों का जिक्र इतिहास में आता है?

उत्तर : 25 भाइयों का।

प्रश्न : महाराणा प्रताप को बचपन में प्यार से किस नाम से पुकारा जाता था?

उत्तर : कीका।

प्रश्न : कुँवर प्रताप बचपन में चित्तौड़ में किस स्थान पर रहते थे?

उत्तर : झालीबाव के पास स्थित महलों में।

प्रश्न : प्रताप ने कुँवरपने में किन-किन क्षेत्रों को जीता?

उत्तर : वागड़, छप्पन और गोड़वाड़ क्षेत्र को जीता।

प्रश्न : महाराणा उदयसिंह ने अपना उत्तराधिकारी किसे घोषित किया?

उत्तर : जगमाल को।

प्रश्न : महाराणा उदयसिंह के सबसे बड़े बेटे का नाम क्या था?

उत्तर : कुँवर प्रतापसिंह।

प्रश्न : महाराणा उदयसिंह ने किसके प्रभाव में आकर जगमाल को अपना उत्तराधिकारी बनाया?

उत्तर : भटियाणी राणी धीरबाई।

प्रश्न : किसने जगमाल को गद्दी से उतार कर महाराणा प्रताप का राज्याभिषेक किया?

उत्तर : सलूंबर के रावत किशनदास।

प्रश्न : महाराणा प्रताप का राज्याभिषेक कब हुआ?

उत्तर : 28 फरवरी, 1572 ई. गुरुवार, होली के दिन।

प्रश्न : महाराणा प्रताप का प्रथम राज्याभिषेक कहाँ हुआ?

ब्रज्ज रज्ज, अरु गंग रज, राम रज्ज अण जोड़।
सरब रजां से सेवरो, रज थारी चितौड।।

उत्तर : गोगुंदा, महादेवजी की बावड़ी पर।

प्रश्न : महाराणा प्रताप का विधिवत राज्याभिषेक किस दुर्ग में किया गया?

उत्तर : कुंभलगढ़ दुर्ग में।

प्रश्न : "मैं जब तक देश को स्वाधीन न करलूं, तब तक राजसी ठाठ- बाट से नहीं रहूँगा, सोने-चांदी के बर्तनों में भोजन नहीं करूंगा, पलंग पर न सोकर घास और पथरीली भूमि पर सोऊंगा।" यह प्रतिज्ञा किसने की थी?

उत्तर : महाराणा प्रताप ने।

प्रश्न : महाराणा प्रताप के गुरु का नाम क्या था?

उत्तर : आचार्य राघवेंद्र।

प्रश्न : राजपुरोहित नारायणदासजी पालीवाल ने अपना बलिदान क्यों दिया?

उत्तर : कुँवर प्रताप एवं कुँवर शक्तिसिंह द्वारा सुअर के शिकार में विवाद होने पर दोनों भाइयों को समझाने पर भी ये नहीं माने तब पुरोहितजी ने अपना बलिदान देकर मेवाड़ के भावी युद्धवीरों को बचा लिया।

प्रश्न : महाराणा प्रताप के छोटे भाई महाराज शक्तिसिंह ने हल्दीघाटी युद्ध से बाहर जाते समय किन दो मुगल सैनिकों का वधकर महाराणा की रक्षा की?

उत्तर : खुरसाण एवं मुलतान।

प्रश्न : चेटक की मृत्यु के बाद शक्तिसिंह ने महाराणा प्रताप को अपना घोड़ा दिया, उसका नाम क्या था?

उत्तर : अंकारा।

प्रश्न : अकबर द्वारा चित्तौड़ पर आक्रमण की सूचना महाराणा उदयसिंह को किसने दी?

उत्तर : कुँवर शक्तिसिंह ने।

है कौन नहीं जग में जिससे न कभी चित्तौड़ लड़ा ?
चित्त तोड़ दिए लाखों के, इसलिए नाम चित्तौड़ पड़ा।

प्रश्न : महाराणा प्रताप का सबसे बड़ा दुश्मन कौन मुगल शासक था?

उत्तर : मुगल शासक अकबर।

प्रश्न : मुगल शासक अकबर का मेवाड़ से किस विषय को लेकर के वैमनस्य था?

उत्तर : अकबर मेवाड़ को अपने अधीन कर संपूर्ण भारत का शासक बनना चाहता था, किंतु महाराणा प्रताप उसमें बाधा बने हुए थे।

प्रश्न : मुगल शासक अकबर ने महाराणा प्रताप के पास कितने संधि दूत भेजे थे?

उत्तर : चार।

प्रश्न : मुगल बादशाह अकबर ने महाराणा प्रताप के पास संधि वार्ता हेतु सर्वप्रथम किसे भेजा?

उत्तर : जलाल खाँ कोरची।

प्रश्न : मुगल शासक अकबर ने संधि वार्ता हेतु दूसरी बार किसे भेजा

उत्तर : कुँवर मानसिंह।

प्रश्न : संधि प्रस्ताव लेकर आने वाला मानसिंह कहाँ का राजकुमार था?

उत्तर : आमेर।

प्रश्न : महाराणा प्रताप के पास अकबर की ओर से संधि प्रस्ताव लेकर आए मानसिंह का संबंध किस राजपूत वंश से था?

उत्तर : कच्छावा राजवंश, आमेर।

प्रश्न : मुगल शासक अकबर ने महाराणा प्रताप के पास तीसरे प्रयास में संधि वार्ता हेतु किसे भेजा?

उत्तर : भगवंत दास।

प्रश्न : अकबर की ओर से संधि प्रस्ताव लेकर आए भगवंत दास का संबंध किस राजघराने से था?

विजैथंभ कुंभा तणो, मांडू विजय मोड़।
आजादी संदेशड़ो, देवै गढ़ चित्तौड़ ।।

उत्तर : कच्छावा राजवंश, आमेर।

प्रश्न : मुगल शासक अकबर ने संधि वार्ता हेतु अंतिम प्रयास किस के माध्यम से किया?

उत्तर : टोडरमल।

प्रश्न : मुगल बादशाह अकबर की ओर से संधि वार्ता हेतु आए टोडरमल का संबंध किस दरबार से था?

उत्तर : मुगल शासक अकबर के दरबार में नवरत्नों में से एक था।

प्रश्न : मुगल बादशाह अकबर की ओर से संधि प्रस्ताव लेकर आए मानसिंह और महाराणा प्रताप की भेंट किस स्थान पर हुई?

उत्तर : उदयसागर की पाल पर।

प्रश्न : हल्दीघाटी का युद्ध किन-किन के मध्य लड़ा गया?

उत्तर : महाराणा प्रताप और मुगल बादशाह अकबर के मध्य

प्रश्न : हल्दीघाटी युद्ध के बारे में मेवाड़ के शूरमाओं के प्रति यह वाक्य किसने कहा कि "इज्जत महंगी और जानें सस्ती कर दी।"

उत्तर : बदायूनी ने।

प्रश्न : हल्दीघाटी कहाँ स्थित है?

उत्तर : उदयपुर से उत्तर-पश्चिम में 44 कि. मी. गोगून्दा और खमनौर के मध्य विकट पहाड़ी श्रेणियों में एक तंग रास्ता जहां हल्दी जैसी पीले रंग की मिट्टी का दर्रा ही हल्दीघाटी है।

प्रश्न : अकबर और महाराणा प्रताप के मध्य हल्दीघाटी का युद्ध कब हुआ?

उत्तर : 18 जून, 1576 ई.।

प्रश्न : भारतीय स्वतंत्रता सेनानी अपनी पूजा में किस युद्ध स्थल की मिट्टी को

धन्य धरा चित्तौड़ दुर्ग का गौरव गान,
शक्ति भक्ति की अमर धरोहर रणधीरों की खान।

रखकर धन्यता का अनुभव करते थे?

उत्तर : हल्दीघाटी की मिट्टी।

प्रश्न : मेवाड़ का वह शासक कौन था जिसने मुगल शासक अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की?

उत्तर : महाराणा प्रताप।

प्रश्न : महाराणा प्रताप ने किस युद्ध नीति का अनुसरण किया?

उत्तर : गुरिल्ला युद्ध नीति(छापामार)।

प्रश्न : हल्दीघाटी युद्ध में अकबर की सेना का नेतृत्व किसने किया?

उत्तर : मानसिंह कच्छावा।

प्रश्न : हल्दीघाटी युद्ध से पूर्व महाराणा प्रताप ने अपनी सेना का पड़ाव किस स्थान पर डाला?

उत्तर : लोसिंग नामक स्थान पर।

प्रश्न : हल्दीघाटी युद्ध से पूर्व मुगल सेना ने अपनी सेना का पड़ाव कहाँ डाला?

उत्तर : मोलेला ग्राम में।

प्रश्न : हल्दीघाटी युद्ध में महाराणा प्रताप की सेना के हरावल दस्ते के मध्य भाग का नेतृत्व कौन कर रहे थे?

उत्तर : हकीम खां सूर और सलूंबर के रावत कृष्णदास।

प्रश्न : महाराणा प्रताप के हरावल दस्ते के दाएँ भाग का नेतृत्व कौन कर रहे थे?

उत्तर : स्वयं महाराणा प्रताप और राजराणा झाला मानसिंह।

प्रश्न : हल्दीघाटी युद्ध में महाराणा प्रताप के हरावल दस्ते के बाएँ भाग का नेतृत्व कौन कर रहे थे?

गढ़ किल्लों में गढ़ चित्तौड़ा, आज भी खड़ा सीना ताने,
सिर कटे भले पर झुके नहीं, यह सत्य समूचा जग जाने।

उत्तर: ग्वालियर के राजा रामशाह तंवर, उनके तीन पुत्र शालिवाहन, भवानी सिंह व प्रतापसिंह, भामाशाह और उनके छोटे भाई ताराचंद।

प्रश्न: हल्दीघाटी युद्ध में महाराणा प्रताप की सेना के चंदावल दस्ते(पीछे) का नेतृत्व कौन कर रहे थे?

उत्तर: राणा पूंजा, पुरोहित जगन्नाथ, जैसा चारण आदि।

प्रश्न: अकबर की सेना के सेनानायक आसफ खां से किसने पूछा कि "हमारे राजपूत व शत्रु सेना के राजपूतों में भेद कैसे करें?

उत्तर: बदायूंनी ने।

प्रश्न: "तुम तो तीर चलाए जाओ, तीर किसी को भी लगे मरेंगे तो काफिर ही" ऐसाबदायूंनी को किसने कहा?

उत्तर: आसफ खाँ ने।

प्रश्न: हल्दीघाटी युद्ध के बाद किस इतिहासकार ने अपनी दाढ़ी को राजपूतों के रक्त से रंगा?

उत्तर: बदायूंनी ने।

प्रश्न: हल्दीघाटी युद्ध का आंखों देखा हाल लिखने वाला मुगल इतिहासकार कौन था?

उत्तर: बदायूंनी।

प्रश्न: बदायूंनी ने हल्दीघाटी युद्ध का वर्णन किस पुस्तक में किया है?

उत्तर: मुन्तख़ब उत तवारीख।

प्रश्न: किस इतिहासकार ने लिखा कि हल्दीघाटी युद्ध में प्रताप के प्रथम आक्रमण की भयानकता से डरकर मुगल सेना 8-10 मील तक भागती हुई अपने डेरे तक पहुँच गई?

मंगल जाण्यो मरण नै, सतपथ पाळण सीर।
पद्मणियाँ जौहर जली, रणखेतां रणवीर।।

उत्तर : बदायूंनी ने।

प्रश्न : मुगल शासक अकबर की रिजर्व सेना का सेनानायक कौन था?

उत्तर : मिहत्तर खां।

प्रश्न : हल्दीघाटी युद्ध में महाराणा प्रताप के प्रथम आक्रमण से डरकर भागती मुगल सेना को किसने व कैसे रोका?

उत्तर : मिहत्तर खाँ ने ढोल बजाकर कहा कि भागो मत, बादशाह अकबर स्वयं सेना लेकर प्रताप पर आक्रमण करने आ रहे हैं।

प्रश्न : हल्दीघाटी का मुख्य युद्ध किस स्थान पर हुआ?

उत्तर : रक्त तलाई में जो कि खमनोर ग्राम के पास स्थित है।

प्रश्न : हल्दीघाटी युद्ध में मारे गए प्रताप एवं मुगल सैनिकों का अनुपात क्या था?

उत्तर : 1:2(लगभग)।

प्रश्न : हल्दीघाटी युद्ध में जब महाराणा प्रताप शत्रुओं से चारों ओर से घिर गए तो उनकी रक्षा करने के लिए कौन आगे आए?

उत्तर : राजराणा झाला मन्ना।

प्रश्न : हल्दीघाटी युद्ध में घायल महाराणा प्रताप के राज्य चिह्न धारण कर स्वयं का बलिदान देने वाले राजराणा झाला मन्ना कहाँ के निवासी थे?

उत्तर : बड़ीसादड़ी।

प्रश्न : हल्दीघाटी युद्ध में घायल महाराणा प्रताप की रक्षा राजराणा झाला मन्ना ने कैसे की?

उत्तर : राजराणा झाला मन्ना ने घायल महाराणा प्रताप के राज्य चिह्न को स्वयं धारण कर लिया जिससे शत्रु उन्हें महाराणा प्रताप समझकर वार करते रहे और महाराणा प्रताप युद्ध क्षेत्र से बाहर चले गए।

सूर न पूछे टीपणौ, सुकन न देखै सूर।
मरणां नू मंगळ गिणे, समर चढे मुख नूर॥

प्रश्न : राजराणा झाला मन्ना ने घायल हो चुके महाराणा प्रताप को युद्ध क्षेत्र से बाहर भेजने के लिए किसकी कसम दिलाई?

उत्तर : श्री एकलिंग नाथ की कसम दिलाई और कहा कि मेवाड़ को आपकी जरूरत है।

प्रश्न : महाराणा प्रताप के स्वामी भक्त घोड़े का नाम क्या था?

उत्तर : चेटक।

प्रश्न : हल्दीघाटी युद्ध में महाराणा प्रताप की सेना के हाथियों के नाम क्या-क्या थे?

उत्तर : रामप्रसाद, चक्रवाप, लूणा तथा खांडेराव।

प्रश्न : हल्दीघाटी युद्ध से महाराणा प्रताप के किस हाथी को मुगल सेना पकड़ कर अकबर के पास ले गई?

उत्तर : रामप्रसाद।

प्रश्न : रामप्रसाद हाथी का नाम बदलकर अकबर ने क्या रखा?

उत्तर : पीरप्रसाद।

प्रश्न : महाराणा प्रताप के किस हाथी ने अकबर के यहाँ का खाना-पीना छोड़ दिया और 18 दिन पश्चात् अपने प्राणों को त्याग दिया?

उत्तर : रामप्रसाद।

प्रश्न : हल्दीघाटी युद्ध के समय महाराणा प्रताप की आयु कितनी थी?

उत्तर : 36 वर्ष।

प्रश्न : महाराणा प्रताप के भाले का वजन कितना था?

उत्तर : सवा मण(32 किलोग्राम)।

प्रश्न : हल्दीघाटी युद्ध में जब महाराणा प्रताप ने मानसिंह पर भाले से वार किया

कृपण जतन धन रौ करै, कायर जीव जतन्न।
सूर जतन उण रौ करै, जिण रौ खाधौ अन्न॥

विजय स्तंभ

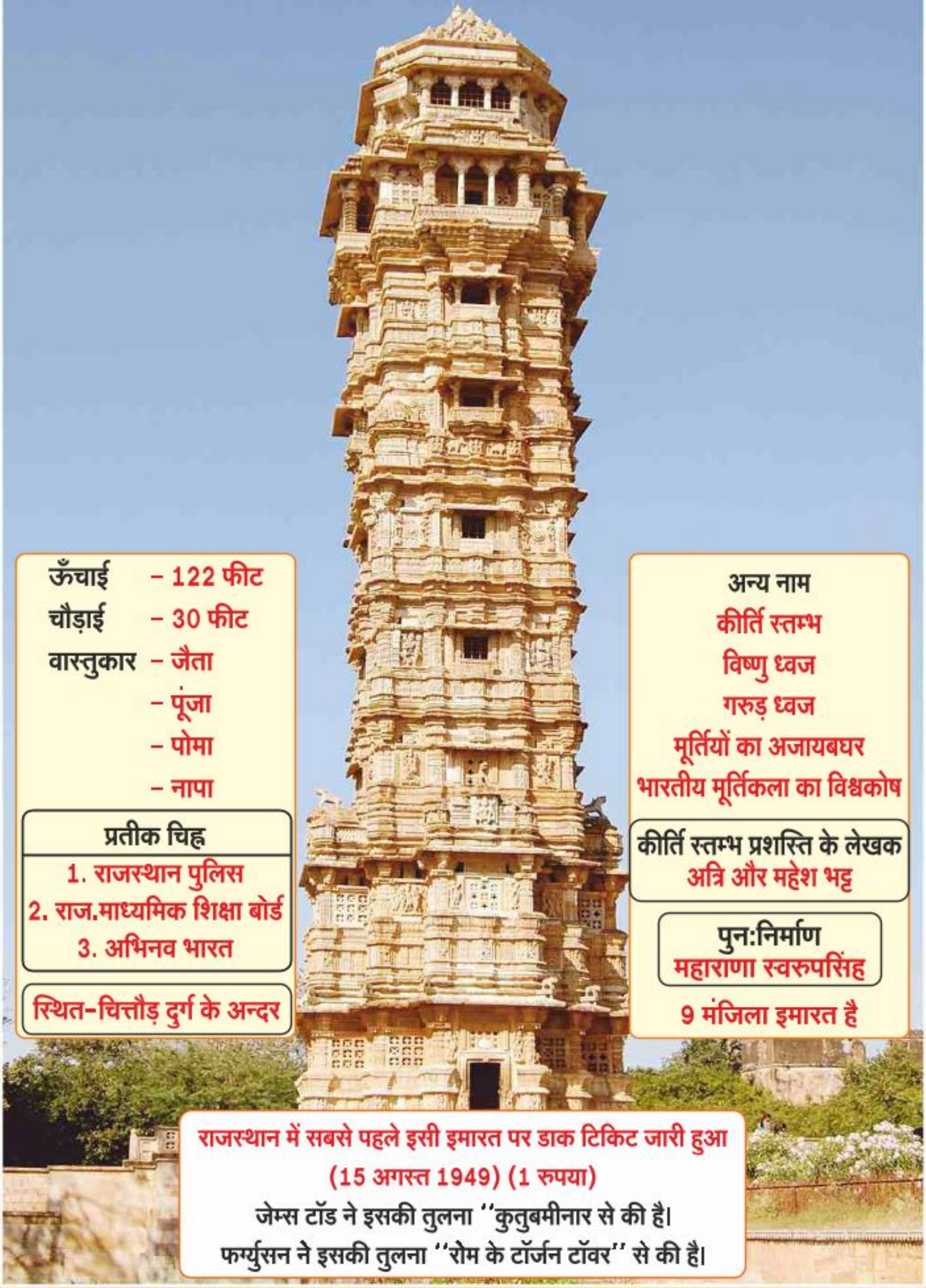

ऊँचाई – 122 फीट
चौड़ाई – 30 फीट
वास्तुकार – जैता
– पूंजा
– पोमा
– नापा

प्रतीक चिह्न
1. राजस्थान पुलिस
2. राज.माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
3. अभिनव भारत

स्थित-चित्तौड़ दुर्ग के अन्दर

अन्य नाम
कीर्ति स्तम्भ
विष्णु ध्वज
गरुड़ ध्वज
मूर्तियों का अजायबघर
भारतीय मूर्तिकला का विश्वकोष

कीर्ति स्तम्भ प्रशस्ति के लेखक
अत्रि और महेश भट्ट

पुन:निर्माण
महाराणा स्वरुपसिंह

9 मंजिला इमारत है

राजस्थान में सबसे पहले इसी इमारत पर डाक टिकिट जारी हुआ
(15 अगस्त 1949) (1 रुपया)
जेम्स टॉड ने इसकी तुलना ''कुतुबमीनार से की है।
फर्ग्युसन ने इसकी तुलना ''रोम के टॉर्जन टॉवर'' से की है।

महाराणा कुम्भा ने सारंगपुर युद्ध (1437) जीतने पर ''विजय स्तम्भ'' का निर्माण 1440 ई. में शुरु करवाया था।

सीकर एकेडमी
सीनियर सैकण्डरी स्कूल
A Great Place to Grow
जिनमें बड़े सपने देखने का हौंसला होता है
अक्सर वहीं कामयाब होते है।
ADMISSION OPEN
2026-27
विज्ञान
कॉमर्स
कृषि विज्ञान
स्कूल
हॉस्टल
कोचिंग
कक्षा 5-12
हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम
www.sikaracademy.in
The Result Factory
क्यों है सीकर एकेडमी औरों से बेहतर विद्यालय-
सीकर व झुंझुनू
के अनुभवी, प्रशिक्षित शिक्षकों द्वारा अध्यापन
की तर्ज पर परीक्षा एवं टेस्ट सीरिज शेड्युल
पर आधारित हाईजेनिक हॉस्टल व व्यक्तिगत देखभाल
के अनुसार Result Oriented Study
की टीम द्वारा मुफ्त कोचिंग / ट्यूशन की सुविधा
की तर्ज पर 11वीं व 12वीं के साथ में NEET / IIT / Ag. Supervisor की तैयारी
की शिक्षण पद्धति के अनुसार नवोदय व सैनिक स्कूल प्रवेश की विशेष तैयारी
की तर्ज पर नवीन शिक्षा नीति के अनुसार अध्यापन
की तर्ज पर हॉस्टल में सायंकालीन व रात्रिकालीन ट्यूशन कक्षाएं
SCAN FOR LOCATION
नोट
सीकर एकेडमी
की अन्य कोई
ब्रांच नहीं है
कक्षा 10 में प्राप्त अंक विषय चयन का आधार नहीं होता है।
अतः काउन्सलिंग करवाकर सही विषय का चयन करें।
कहीं भी Admission कराने से पहले फ्री डेमो क्लास लेकर देखें।
sikar_academy_chittorgarh
सीकर एकेडमी स्कूल चित्तौड़गढ़
Contact : 01472-243123, 94133 28243, 73004 28243, 94148 27679
पटवार भवन के पीछे, उदयपुर रोड़, सैंती, चित्तौड़गढ़

SankalP
MANAGED BY SankalP Group
VISHAL ACADEMY
SR. SEC. SCHOOL, GANDHI NAGAR, CHITTORGARH
AN ACADEMY FOSTERING MODERN EDUCATION ROOTED IN INDIAN VALUES & NATIONALISM
Thank You Chittorgarh
Congratulations Our Shining Stars
STREAMS OFFERED
SCIENCE
COMMERCE
HUMANITIES
VISHAL ACADEMY TOPPER
91.80% 12th
CHARVI RANAWAT
VISHAL ACADEMY TOPPER
91.00% 12th
DIKSHA CHUNDHAWAT
State Merit 10th Rank
VISHAL ACADEMY TOPPER
98.33% 10th
VANSHIKA SHARMA
Maths 100/100
District Merit 3rd Rank
ADMISSIONS OPEN 2026-27
Nursery to XII
ASHLESH K DASHORA
Principal
90.80% 12th
SCIENCE
MAHAK FATEMA
90.60% 12th
ARTS
POOJA KANWAR
89.30% 12th
SCIENCE
ISHITA KABRA
Maths - 100/100
97.33% 10th
PRATIKSHA KANWAR
97.00% 10th
ISHITA SHARMA
91.33% 10th
VIRENDRA PRATAP SINGH
91.00% 10th
AJAY SINGH CHARAN
DEEPAK MISHRA
Administrator
NEP CURRICULUM
MOST RENOWNED FACULTIES OF CHITTORGARH
CONVEYANCE IS AVAILABLE FROM ALL AREAS
RO DRINKING WATER
BEST RESULT PRODUCING SCHOOL OF THE CITY
SMART TEACHING AND LEARNING
SPECIAL BENEFITS IN FEES FOR GIRL CHILD
FOR 95% & ABOVE 100% SCHOLARSHIP
SECTOR 5, GANDHI NAGAR, CHITTORGARH (RAJ.) 9257129555, 8107579090 7230031416 svachittor@gmail.com

MAHARANA PRATAP LAW COLLEGE
PERMANENT NOC BY RAJASTHAN GOVT., AFFILIATED TO ALU. JAIPUR,
APPROVED BY BAR COUNCIL OF INDIA, NEW DELHI
Minimum Fees
Maximum Knowledge
जिले का एकमात्र बहुउद्देशीय
विधि महाविद्यालय
ADMISSION OPEN
LL.B.
3 Year Course
UG/PG: Gen/EWS-45%
OBC-42%, SC/ST-40%
LL.M.
2 Year Course
BALL.B./ LL.B./
Gen-55% /EWS/OBC/SC/ST - 50%
PG.D.L.L.
1 Year Course
BALL.B./ LL.B./ MBA/ MCOM/ MA/
MSW : Gen/EWS/OBC/SC/ST - 48%
डॉ. एस.डी. व्यास
निदेशक
प्रवेश पहले आओ
पहले पाओ
के आधार पर
Follow us : mplawcollege
Maharana Pratap law college
Near Police Line, Dhanet Kalan Road, Chittorgarh
M. 9413716774, 9929312225 / E-Mail : mplawcollegechittorgarh@gmail.com

सभी कीर्तिमान ध्वस्त ... शेखावाटी साईंस एकेडमी एक बार फिर सिरमौर ...
5th STATE MERIT
BOARD RESULTS 2025-26
1st STATE MERIT
1st 12th Arts DISTRICT TOPPER
1st 12th Agriculture RAJASTHAN TOPPER Hosteller
98.80% DIMPAL TELI
Science
96.80% AYUSH JAISWAL
Science
95.40% NAVRAJ KANWAR
Arts
94.80% ARCHITA JAT
Science
94.60% VANDNA DHAKER
Agriculture
94.00% BHAVANA JAT
98.40% VARSHA PRAJAPAT
94.00% LOKENDRA MEENA
93.83% KHUSHI OAD
93.80% KRISHNA DHAKER
BOARD RESULTS AT A GLANCE
51 Girls Selected for Gargi Award
93.60% TEENA DHAKER
93.20% DIVYA DHAKER
93.20% PARMANAND DHAKER
92.80% DURGESH DHAKER
92.67% NEHA SONI
92.60% ANJALI MENARIYA
91.80% GUNJAN GOSWAMI
91.00% ABHISHEK YADAV
90.60% UJJAWAL YADAV
90.40% RENUKA GWALA
SHEKHAWATI SCIENCE ACADEMY में अब SCHOOLING के साथ-साथ COMPETITIVE EXAMS & FOUNDATION COURSES की विशेष तैयारी
CHOOSE THE BEST SCHOOL FACULTY RESULT HOSTEL ENVIRONMENT
SHEKHAWATI SCIENCE ACADEMY CHITTORGARH
Class VI to XII
(हिन्दी & ENGLISH MEDIUM
SCIENCE AGRICULTURE ARTS COMM.
BIRLA HOSPITAL TO BHANDARIYA ROAD, CHITTORGARH
Help Line Number : 9773305105-106-107-108-109
Follow Us- shekhawatiscienceacademy www.shekhawatiscienceacademy

मेवाड़ में चित्तौड़गढ़ श्रेष्ठ.......... चित्तौड़गढ़ में 31 वर्षों से (LBS School Eng Medium) सर्वश्रेष्ठ
LBS English Medium
SR. SECONDARY SCHOOL & Hostel
Website : lbschittor com
ADMISSION OPEN 2026-27
Topper's Factory
100% 1st Class Result
& 31 Yrs Journey
Best Faculty, Dicipline, Sports & Lab-Facility Digital Classes.
विशेष आग्रह तीस वर्षों से अध्ययन कर चुके चित्तौड़वासियों, आप L.B.S. की संस्कारवान, अनुशासित शिक्षा द्वारा हर क्षेत्र में सफल रहे वर्तमान में भी वही गुणवत्ता, संस्कार व अनुशासन प्रिय शिक्षा उपलब्ध है। आज भी आपका विश्वास यथावत है तो आप अपने बालकों, रिश्तेदारों, पड़ौसियों, जान-पहचान वालों में L.B.S. की शिक्षा - दीक्षा का प्रचार-प्रसार कर सक्रिय सहयोग करें। L.B.S. हर कदम पर आपके साथ है व रहेगा। गुरु दक्षिणा में आपका सक्रिय सहयोग अवश्य मिलेगा। धन्यवाद
L.B.S. SPORTS JUNCTION
PLAY GROUP TO XII
Sci. | Com. | Agriculture | Arts
Special Offer for RTE Students
Free Bus for Play group, Nur, L.K.G., U.K.G., 1st
12th Result 2026
10th Result 2026
Shahista Nilgar 96.40% XII Class (Science)
Mahesh Dhakar 93.80% XII Class (Science)
Aditi Jagetiya 89.80% XII Class (Science)
Riya Choudhary 93.60% XII Class (Arts)
Chanchal Ahir 90.60% XII Class (Arts)
Khushi Parashar 91.33% X Class
Aqsha Nilgar 90.00% X Class
Contact Soon
Limited Seat
PRATAP NAGAR, CHITTORGARH Mo. 94141-11777, 94141-94777

X BOARD 2026
599/600
राजस्थान टॉपर
XII BOARD 2026
499/500
1st Rank
05 STUDENTS ABOVE 99%
20 STUDENTS ABOVE 98%
162 STUDENTS ABOVE 95%
386 STUDENTS ABOVE 90%
99.83%
प्रियांशी सुण्डा
पुत्री श्री सीताराम सुण्डा
सांगलिया, सीकर
शेखावाटी
लोसल (सीकर)
99.80%
दिव्या भादू
पुत्री श्री सुजाराम भादू
सोमराड़, बाड़मेर
सीकर-जोधपुर हाईवे, लोसल, जिला- सीकर (राज.) 332025
© 97722 04 962, 97722 04 958, 94130 37 470

तो उसने कहाँ छिपकर अपने प्राण बचाए?

उत्तर : हाथी पर बने हौदे में छिपकर।

प्रश्न : हल्दीघाटी युद्ध में चेटक की एक टांग किससे कट गई?

उत्तर : मानसिंह के हाथी की सूंड में लगी तलवार से।

प्रश्न : हल्दीघाटी युद्ध में मानसिंह किस हाथी पर बैठकर युद्ध कर रहा था?

उत्तर : रणमदार।

प्रश्न : हल्दीघाटी युद्ध में मुगल सेना में कौन-कौन से हाथी थे?

उत्तर : गजमुक्ता, रणमदार, गजराज आदि।

प्रश्न : दिवेर युद्ध में महाराणा प्रताप ने अपनी तलवार के वार से किस मुगल सेनानायक को शिरस्त्राण, जिरह-बख्तर एवं घोड़े सहित चीर दिया?

उत्तर : बहलोल खाँ को।

प्रश्न : महाराणा प्रताप का भाला, तलवार एवं कवच वर्तमान में कहाँ पर रखे हैं?

उत्तर : उदयपुर सिटी पैलेस के संग्रहालय में।

प्रश्न : महाराणा प्रताप के हरावल दस्ते के सेनापति हकीम खाँ सूरी की मजार कहाँ बनी हुई है?

उत्तर : रक्ततलाई में (हकीम खाँ सूरी को हल्दीघाटी में (जिला राजसमंद) मुट्ठी से तलवार नहीं छूटने के कारण रक्ततलाई में तलवार सहित दफनाया गया, जहाँ उसकी मजार बनी हुई है)।

प्रश्न : महाराणा प्रताप से प्रेरणा प्राप्त कर अमेरिका से 20 वर्ष तक संघर्ष करने वाला देश कौन-सा है?

उत्तर : वियतनाम।

प्रश्न : हल्दीघाटी युद्ध के शहीद यौद्धा राजा रामशाह तोमर, राजराणा झाला

बारह बरस लौ कूकर जीवै, अरु तेरह लौ जियै सियार।
बरस अठारह क्षत्री जीवै, आगे जीवै को धिक्कार।।

मान एवं वीर हकीम खाँ शूर के स्मारक किस स्थान पर बने हुए हैं?

उत्तर : रक्त तलाई(राजसमंद जिला)।

प्रश्न : "हल्दीघाटी युद्ध के बाद अगले एक साल तक महाराणा प्रताप ने हल्दीघाटी के आसपास के गाँवों की जमीनों के पट्टे ताम्रपत्र के रूप में जारी गए थे। जमीनों के पट्टे जारी करने का अधिकार केवल राजा का था।" ऐसा कहकर किस विद्वान शोधकर्ता ने हल्दीघाटी में महाराणा प्रताप की विजय को साबित किया?

उत्तर : डॉ. चन्द्रशेखर शर्मा जो कि राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय में उदयपुर में मीरा महाविद्यालय के प्रोफेसर एवं इतिहासकार हैं।

प्रश्न : ख्यातों के अनुसार महाराणा प्रताप और अकबर की सेना की संख्या कितनी थी?

उत्तर : महाराणा प्रताप की सेना की संख्या 20000 और अकबर की सेना की संख्या 80000 थी।

प्रश्न : मुगल इतिहासकार अलबदायुनी के अनुसार महाराणा प्रताप और अकबर की सेना की संख्या कितनी थी?

उत्तर : क्रमशः 3000 और 5000

प्रश्न : अल बदायूंनी के अनुसार हल्दीघाटी युद्ध में कितने वीर रणखेत रहे?

उत्तर : अल बदायूंनी के अनुसार हल्दीघाटी युद्ध में कुल 500 के आसपास वीर रणखेत रहे, जिनमें 300 के लगभग इस्लाम पक्ष के थे।

प्रश्न : "बादशाह ने मेवाड़ के राणा को आपस के समझौते के अधीन किया था, न कि बल से।" ये कथन किसका है?

उत्तर : सर टॉमस रो।

प्रश्न : "हिंदुओं के साथ मुसलमानों की लड़ाई का मुसलमानों द्वारा लिखा वर्णन

केसर निपजै न अठै, नह हीरा निकलन्त ।
सिर कटिया खग झालणा, इण धरती उपजंत ॥

एक पक्षीय होता है, तो भी मुसलमानों के कथन से भी निश्चित है कि शाही सेना की बुरी तरह दुर्दशा हुई और प्रताप सिंह के लौटते समय भी उस सेना की स्थिति ऐसी नहीं रही थी कि वह पीछा कर सके और उसका भय तो उस सेना पर यहाँ तक छाया रहा कि वह स्वप्न देखती थी कि राणा पहाड़ के नीचे रहकर हमें मारने की घात लगाए बैठा है। दो दिन बाद 21 जून को मुगल सेना के गोगुंदा पहुँचने पर भी शाही अफसरों को यही भय बना रहा कि कहीं राणा आकर हमारे पर टूट न पड़े, इसी से उस गाँव के चौतरफा खाई खुदवा कर घोड़ा न फांद सके इतनी ऊँची दीवार बनवाई और गाँव के तमाम मोहल्लों में आड़ खड़ी करवा दी गई। फिर भी शाही सेना गोगुंदा में कैदी की भाँति सीमाबद्ध रही और अन्न तक न ला सकी जिससे उसकी और भी अधिक दुर्दशा हुई। इन सब बातों पर विचार करते हुए यही मानना पड़ता है कि युद्ध में प्रताप सिंह की ही प्रबलता रही।" उक्त कथन किस इतिहासकार का है?

उत्तर : डॉ.गौरी शंकर हीराचंद ओझा, (उदयपुर राज्य का इतिहास, भाग एक, पृष्ठ 442)

प्रश्न : "उदयसिंह से प्रताप सिंह हुए। यह पृथ्वी पर धनुर्धारी तथा धैर्यवान के रूप में प्रसिद्ध हुए। क्षत्रिय कुल के द्वारा मलेच्छ शासक से धर्म को मुक्त करवाया, इस धर्म ने इसकी (प्रताप सिंह) शरण ली।" कथन किस प्रशस्ति का हिंदी अनुवाद है?

उत्तर : वैद्यनाथ मंदिर प्रशस्ति, श्लोक संख्या 34

प्रश्न : "प्रताप सिंह के द्वारा धर्म को सुरक्षित रखा गया, पुष्ट किया गया, जिससे वह तोंद वाला (बड़ा) हो गया। मलेच्छाधिपति अकबर के लिए प्रताप मन में घुसा हुआ कांटा हो गया।" उक्त कथन किस प्रशस्ति से उद्धृत है?

उत्तर : वैद्यनाथ मंदिर प्रशस्ति, श्लोक संख्या 35

प्रश्न : "प्रताप सिंह समुपेम् धन्य सेना सहित आए हुए यवनपति को वश में करने

माई एहड़ा पूत जण, जेहड़ा राणा प्रताप।
अकबर सूतो ओझकै, जाण सिराणै साँप॥

वाले, यवन सेना के निदान(पहचान), यवनपति को एकमात्र तान(मुखिया) मानसिंह का युद्ध में अभिमान चूर्ण कर वीरता रूपी शान का विस्तार किया।" उक्त कथन किस इतिहास ग्रंथ से उद्धृत है?

उत्तर : रणछोड़ भट्ट प्रणत 'अमर काव्यम्' सर्ग 16, श्लोक संख्या 35

प्रश्न : "शत्रुओं के तंबुओं से धन लेकर तथा युद्धभूमि का पुनः अवलोकन कर वह पृथ्वीपति प्रताप सिंह युद्ध भूमि में विजयी होकर उदयपुर की ओर चल पड़ा।" उक्त कथन किस ग्रंथ से उद्धृत है?

उत्तर : राज रत्नाकर : महाकवि सदाशिव(विक्रम संवत् 1734) सप्तम सर्ग, श्लोक संख्या 42

प्रश्न : "परिणामतः मुगलों के लिए यह युद्ध असफल ही रहा। युद्ध के बाद न तो राणा का पीछा किया जा सका, न ही उसे बंदी बनाया जा सका और न मेवाड़ को मुगल साम्राज्य का अंग बनाया जा सका। मुगलों ने कुछ समय के लिए जो क्षेत्र अधीन किया, वह निर्जन, उजाड़ और पथरीला था। इससे मुगल तनिक भी लाभान्वित नहीं हुए। हल्दीघाटी के युद्ध और लूट के नाम पर जो मानसिंह को प्राप्त हुआ वह केवल राणा का प्रसिद्ध हाथी रामप्रसाद था। इस युद्ध में मुगल असफलता के कारण अब यह भ्रम ध्वस्त हो गया कि मुगल सेना अजेय है।" उक्त कथन किस इतिहासकार का है?

उत्तर : प्रोफेसर आर. पी. व्यास, जोधपुर(महाराणा प्रताप, पृष्ठ 135)

प्रश्न : "अपने कई योद्धाओं को खो देने के बावजूद प्रताप और उसकी सेना अपराजित रहकर सुरक्षित पहाड़ों में लौट गई। मानसिंह उसका पीछा नहीं कर सका। वस्तुत: इस युद्ध का अंत गोगुंदा में हुआ जहाँ मुगल सेना की बड़ी दुर्दशा हुई और विफल होकर लौट गई।" उक्त कथन किस इतिहासकार का है?

उत्तर : डॉ. देवीलाल पालीवाल, उदयपुर(महाराणा प्रताप महान, पृष्ठ संख्या 43)

नह पड़ोस कायर नरां, हेली ! वास सुहाय।
बळिहारी जिण देसड़ै, माथा मोल विकाय॥

प्रश्न : "18 जून 1576 ई. सन् का दिन आर्यकुल की वीरता का एक प्रसिद्ध दिवस है। यह आर्य गौरव का एक पवित्र पर्व हुआ, जितने दिन तक मनुष्य वीरता और महानता की पूजा करेंगे, जितने दिन जगत में राजपूत जाति रहेगी, उतने दिन तक इस उपर्युक्त दिन का वृत्तांत मनुष्य के इतिहास में प्रकाशमान और रक्त मिश्रित अक्षरों से लिखा रहेगा। यह दिन अनंत काल तक प्रकाशित करेगा। उस दिन पुण्यभूमि हल्दीघाटी के शैलगात्र और समस्त गिरिमार्ग मेवाड़ के साहसी पुत्रों के पवित्र शोणित से भीग गए थे।" उक्त कथन किस इतिहासकार है?

उत्तर : कर्नल जेम्स टॉड,(उदयपुर राज्य का इतिहास, पृष्ठ संख्या 334)

प्रश्न : "इस वक्त हमारी सेना की पूरी तरह हार हो गई। राणा ने घाटी से निकलकर आसफ खाँ की सेना पर हमला किया और उनकी सेना का संहार कर उसके मध्य जा पहुँचा, जिससे सीकरी के शहजादे शेख मंसूर, गाजी खाँ आदि भाग निकले। हमारी फौज तो पहले हमले में भाग निकली। बनास नदी के पार तक भागती रही।... जब युद्ध के समाचार लेकर मैं अकबर के पास जा रहा था, तब मार्ग में मुगल विजय के बारे में बताता तो कोई इस बात पर विश्वास नहीं करता।" उक्त कथन किस मुगल इतिहासकार का है?

उत्तर : अल बदायूंनी('मुंतखब तवारीख' का हिंदी अनुवाद)।

प्रश्न : कौन-सी घटना हल्दीघाटी युद्ध के बाद भी मेवाड़ में प्रताप के राज्य होने को दर्शाता है?

उत्तर : हल्दीघाटी युद्ध के बाद प्रताप ने अनेक गाँवों के पट्टे अपने लोगों को जारी किए।

प्रश्न : पाथळ नाम से कौन प्रसिद्ध है?

उत्तर : महाराणा प्रताप।

प्रश्न : पीथळ नाम से कौन प्रसिद्ध है?

आज तन, मन और जीवन, धन सभी कुछ हो समर्पण।
राष्ट्र हित की साधना में, हम करें सर्वस्व अर्पण।।

उत्तर : पृथ्वीराज राठौड़, बीकानेर।

प्रश्न : महाराणा प्रताप का यशोगान करने वाली काव्य रचना 'पाथळ और पीथळ' के रचनाकार कौन हैं?

उत्तर : कन्हैया लाल सेठिया।

प्रश्न : दुरसा आढ़ा ने महाराणा प्रताप का गुणगान किस पुस्तक में किया?

उत्तर : विरुद छिहत्तरी।

प्रश्न : कुँवर अमर सिंह किस आक्रमणकारी की बेगम और परिवार का अपहरण कर ले आये?

उत्तर : अब्दुल रहीम खान खाना की बेगम आनी खान और परिवार को।

प्रश्न : महाराणा प्रताप ने रहीम खान खाना की बेगम और परिवार के अपहरण पर अमर सिंह को क्या कहा?

उत्तर : प्रताप ने अमर सिंह को डाटते हुए कहा-"हमारी लड़ाई रहीम खान से हैं महिलाओं और बच्चों से नहीं, इन्हें ससम्मान लौटा कर आओ।"

प्रश्न : महाराणा प्रताप के सहयोगी रहे राणा पूंजा का जन्म कब हुआ था?

उत्तर : 5 अक्टूबर, 1544 ई.।

प्रश्न : राणा पूंजा कहाँ के सरदार थे?

उत्तर : मेरपुर(पानरवा)।

प्रश्न : राणा पूंजा का देहावसान कब हुआ?

उत्तर : 1610 ई. में।

प्रश्न : हल्दीघाटी युद्ध में भील सैनिकों के अस्त्र-शस्त्र क्या थे?

उत्तर : तीर-कमान, पत्थर और गोफण।

है यही संकल्प अपना देश अर्पित प्राण हो।
स्वाभिमान स्वावलंबी देश का निर्माण हो॥

प्रश्न : भामाशाह का जन्म कब हुआ?

उत्तर : 28 जून 1547 ई.।

प्रश्न : भामाशाह का जन्म किस स्थान पर हुआ?

उत्तर : रणथंभौर दुर्ग में।

प्रश्न : भामाशाह के पिता का नाम क्या था?

उत्तर : भारमल।

प्रश्न : भारमल को महाराणा सांगा ने 1523 ई. में किस किले का किलेदार नियुक्त किया था?

उत्तर : रणथंभौर दुर्ग।

प्रश्न : भामाशाह के पिता भारमल किसके आग्रह पर चित्तौड़ आए?

उत्तर : महाराणा उदयसिंह के आग्रह पर।

प्रश्न : भामाशाह के पिता भारमल चित्तौड़ कब आए?

उत्तर : 1554 ई. में।

प्रश्न : कुँवर प्रताप कुंभलगढ़ से चित्तौड़ कब आए?

उत्तर : 1552 ई. में।

प्रश्न : भामाशाह का बाल्यकाल में चित्तौड़ में निवास स्थान कहाँ था?

उत्तर : झालीबाव के निकट हस्तीशाला में।

प्रश्न : चित्तौड़ में झालीबाव कहाँ पर स्थित है?

उत्तर : पाडन पोल के पास।

प्रश्न : कुँवर प्रताप और भामाशाह की मित्रता कहाँ पर हुई?

उत्तर : चित्तौड़गढ में, दोनों के निवास पास-पास ही थे।

मातृ-मंदिर का समर्पित दीप मैं,
चाह मेरी यह कि मैं जलता रहूँ।

प्रश्न : भामाशाह ने चित्तौड़ कब छोड़ा?

उत्तर : भामाशाह 1568 ई. में अकबर के चित्तौड़ आक्रमण के समय कुँवर प्रताप के साथ गोगुंदा आ गए।

प्रश्न : भामाशाह के छोटे भाई का नाम क्या था?

उत्तर : ताराचंद।

प्रश्न : हल्दीघाटी युद्ध में भामाशाह और उनके छोटे भाई ताराचंद की क्या भूमिका रही?

उत्तर : दोनों भाई प्रताप के अंग रक्षक के रूप में लड़े।

प्रश्न : महाराणा प्रताप को हल्दीघाटी युद्ध के पश्चात् आर्थिक तंगी होने पर किस व्यक्ति ने अपनी सारी संपत्ति उन्हें समर्पित कर दी?

उत्तर : भामाशाह ने।

प्रश्न : महाराणा प्रताप को समर्पित संपत्ति भामाशाह ने कहाँ से अर्जित की थी?

उत्तर : वे मालवा को लूटकर जो संपत्ति लाये थे और उनकी समस्त पैतृक संपत्ति भी महाराणा प्रताप को समर्पित कर दी।

प्रश्न : भामाशाह ने अपनी समस्त संपत्ति महाराणा प्रताप को किस स्थान पर प्रदान की?

उत्तर : चुलिया ग्राम में।

प्रश्न : भामाशाह ने अपनी समस्त संपत्ति महाराणा प्रताप को कब समर्पित की?

उत्तर : हल्दीघाटी के युद्ध के बाद 1578 ई. में।

प्रश्न : भामाशाह ने महाराणा प्रताप को कितनी संपत्ति समर्पित की?

उत्तर : 25 लाख रुपए तथा 20000(बीस हजार) स्वर्ण अशर्फियां समर्पित की।यह संपत्ति इतनी थी कि 12000 सैनिकों का 20 वर्ष तक खर्च चलाया जा सके।

निर्माणों के पावन युग में, हम चरित्र निर्माण न भूलें।
स्वार्थ साधना की आँधी में, वसुधा का कल्याण न भूलें॥

प्रश्न : हल्दीघाटी युद्ध से पूर्व भामाशाह ने किस मंदिर के निर्माण के लिए धन संगृहीत किया था?

उत्तर : देलवाड़ा में जैन मंदिर के निर्माण के लिए।

प्रश्न : महाराणा प्रताप ने भामाशाह से कहा- "इस संपत्ति से तो आप मंदिर बनवाना चाहते थे" तब भामाशाह ने क्या उत्तर दिया?

उत्तर : भामाशाह ने कहा- "यदि मेवाड़ सुरक्षित रहा तो ऐसे सैंकड़ों मंदिर बन जाएँगे। यदि मेवाड़ गुलाम हुआ तो बने हुए मंदिर भी तोड़ दिए जाएँगे।"

प्रश्न : भामाशाह द्वारा समर्पित संपत्ति का महाराणा प्रताप ने क्या उपयोग किया?

उत्तर : सैन्य संसाधन जुटाने एवं पुनर्निर्माण के कार्यों में।

प्रश्न : महाराणा प्रताप ने चावंड को राजधानी कब बनाया?

उत्तर : 1585 ई. में।

प्रश्न : चावंड में भामाशाह की क्या भूमिका रही?

उत्तर : कला, साहित्य, कृषि व पुनर्निर्माण के अनुपम कार्यों में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही।

प्रश्न : भामाशाह का देवलोक गमन कब हुआ?

उत्तर : 11 जनवरी, 1600 ई. में।

प्रश्न : भामाशाह का देवलोक गमन किस स्थान पर हुआ?

उत्तर : उदयपुर में।

प्रश्न : भामाशाह का दाह संस्कार कहाँ किया गया?

उत्तर : महासतियाँ, आहड़ में।

प्रश्न : किस आक्रमणकारी ने भामाशाह से भेंट कर उन्हें प्रलोभन देकर खरीदने का

द्वंद्व कहाँ तक पाला जाए, युद्ध कहाँ तक टाला जाए ?
तू भी है राणा का वंशज, फेंक जहाँ तक भाला जाए ॥

असफल प्रयास किया?

उत्तर : अब्दुल रहीम खानखाना ने(किंतु भामाशाह ने इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया था)

प्रश्न : भामाशाह किस धर्म के अनुयायी थे?

उत्तर : भामाशाह जैन धर्म के अनुयायी थे।

प्रश्न : भामाशाह कुल कितने भाई थे?

उत्तर : भामाशाह कुल पाँच भाई थे उनमें से तीन की मृत्यु हो गई भामाशाह और छोटा भाई ताराचंद ही बचे थे।

प्रश्न : भामाशाह के पुत्र का नाम क्या था?

उत्तर : जीवाशाह।

प्रश्न : भामाशाह की पुत्री का क्या नाम था?

उत्तर : जगीशा।

प्रश्न : भामाशाह ने 2 करोड़ रुपये, हाथी, घोड़े, वस्त्र महाराणा अमरसिंह को समर्पित किए, यह संपत्ति किससे प्राप्त की थी?

उत्तर : अहमदाबाद के सेठ मणिधणी से।

प्रश्न : भामाशाह और प्रताप दोनों की मृत्यु तिथि एक ही थी, कौन-सी?

उत्तर : माघ शुक्ला ग्यारस।

प्रश्न : चित्तौड़ निवास के दौरान भामाशाह और कुँवर प्रताप को किसने शस्त्र शिक्षा दी?

उत्तर : कृष्णदास चुंडावत ने।

प्रश्न : भामाशाह के पिता की मृत्यु कैसे हुई थी?

जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं।
वह हृदय नहीं है पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं॥

उत्तर : अकबर के चित्तौड़गढ़ पर आक्रमण के दौरान लड़ते हुए बलिदान हुए।

प्रश्न : महाराणा उदयसिंह की मृत्यु किस दिन हुई थी?

उत्तर : 1572 ई. में होली के दिन।

प्रश्न : अकबर ने चित्तौड़ पर आक्रमण कब किया था?

उत्तर : 1568 ई. में।

प्रश्न : अकबर के आक्रमण के समय चित्तौड़गढ में किसे नियुक्त कर महाराणा उदयसिंह सपरिवार गोगुंदा आ गए?

उत्तर : राव जयमल राठौड़।

प्रश्न : महाराणा उदयसिंह ने चित्तौड़गढ़ दुर्ग को क्यों छोड़ा?

उत्तर : मेवाड़ भूमि की स्वतंत्रता का युद्ध जारी रखने हेतु,सामंतों ने महाराणा उदयसिंह से आग्रह किया कि- "आप चित्तौड़ छोड़कर गोगुंदा चले जाइए और मेवाड़ की स्वतंत्रता का युद्ध जारी रखिए चित्तौड़ दुर्ग की रक्षा हम करेंगे।"

प्रश्न : महाराणा प्रताप ने चित्तौड़ कब छोड़ा?

उत्तर : 1568 ई. में अकबर के आक्रमण के समय सामंतों के आग्रह करने पर।

प्रश्न : महाराणा प्रताप ने किसके स्थान पर भामाशाह को अपना प्रधानमंत्री नियुक्त किया था?

उत्तर : रामा मेहसानी के स्थान पर।

प्रश्न : जब भामाशाह को महाराणा प्रताप ने प्रधानमंत्री नियुक्त किया उस समय भामाशाह की आयु क्या थी?

उत्तर : 30 वर्ष।

प्रश्न : महाराणा प्रताप ने दिवेर का युद्ध किस दिन प्रारंभ किया?

ये वंदन की धरती है, अभिनंदन की धरती है।
ये अर्पण की भूमि है, ये तर्पण की भूमि है॥

उत्तर : 16 सितम्बर 1583 ई. विजयादशमी के दिन सोमवार संवत 1640

प्रश्न : दिवेर के युद्ध को किसने मेवाड़ का मैराथन कहा?

उत्तर : कर्नल जेम्स टॉड ने।

प्रश्न : मेवाड़ का मेराथन कहा जाने वाला युद्ध स्थल दिवेर किस वन्यजीव अभयारण्य में स्थित है?

उत्तर : टॉडगढ़-रावली वन्यजीव अभयारण्य में।

प्रश्न : दिवेर युद्ध का नेतृत्व किसने किया?

उत्तर : कुँवर अमर सिंह ने।

प्रश्न : दिवेर युद्ध में अमर सिंह के अंगरक्षक एवं मुख्य सलाहकार कौन थे?

उत्तर : भामाशाह और ताराचंद।

प्रश्न : 1582 ई. में दिवेर चौकी का थानेदार कौन था?

उत्तर : अकबर का चाचा सुल्तान खाँ।

प्रश्न : दिवेर युद्ध में सुल्तान खाँ को किसने भाला मारा जो उसके सीने को चीरता हुआ घोड़े को पार कर जमीन में गड़ गया?

उत्तर : कुँवर अमर सिंह।

प्रश्न : सुल्तान खाँ के सीने से भाला किसने निकाला?

उत्तर : महाराणा प्रताप के आग्रह पर कुँवर अमर सिंह ने

प्रश्न : दिवेर युद्ध में कुँवर अमर सिंह के भाले से मरणासन्न सुल्तान खाँ के पानी मांगने पर महाराणा प्रताप ने क्या किया?

उत्तर : उसे गंगाजल पिलाया।

प्रश्नः मारवाड़ के लगभग सभी युद्ध नाथ योगियों के आशीर्वाद से लड़े गए।

दोहराता हूँ सुनो रक्त से लिखी हुई कुरबानी।
जिसके कारण मिट्टी भी चन्दन है राजस्थानी।।

मेवाड़ का एक मात्र कौन सा युद्ध है , जो नाथ योगी के आशीर्वाद से लड़ा गया?

उत्तर : दिवेर का युद्ध

प्रश्न : महाराणा प्रताप ने संपूर्ण मेवाड़ को मुगलों से मुक्त करवा लिया किंतु चित्तौड़ और मांडलगढ को छोड़ दिया, क्यों?

उत्तर : क्योंकि इन दोनों स्थानों पर मुगलों की ओर से महाराणा प्रताप का छोटा भाई सगर नियुक्त था?

प्रश्न : हेमरत्न सूरि, चक्रपाणि मिश्र, सादुलनाथ त्रिवेदी, माला सांदू, रामा सांदू किसके दरबारी विद्वान थे?

उत्तर : महाराणा प्रताप।

प्रश्न : अकबर से महावीर को धरती पै गिरावै।

नौरोजे के मेले को भी मिट्टी में मिलावै।

बहुतों के सती-धर्म को निज बल से बचावै।

खाविंद को भी शत्रु के फंदे से छुड़ावै।।

उक्त काव्य पंक्तियों में किस वीरांगना का वर्णन किया गया है?

उत्तर : किरण देवी का।

प्रश्न : किरण सिंहणी सी चढ़ी

उर पर खींच कटार..।

भीख मांगता प्राण की

अकबर हाथ पसार....।।

उक्त काव्य पंक्तियों में वर्णित घटना किस स्थान पर हुई?

धारा से अस्फुट ध्वनि निकली, इस तरह अमर मरना सीखो।
तुम सती मान पर आन बान पर जौहर व्रत करना सीखो॥

उत्तर : आगरा में नौरोजे के मेले की घटना है, जहाँ अकबर स्त्रीवेश में जाता था और सुंदर स्त्रियों को अपने हरम में ले आता था। इसी क्रम में एक दिन महाराणा प्रताप की भतीजी से पाला पड़ गया...।

प्रश्न : नौरोजे के मेले में अकबर को अपने पराक्रम से सबक सिखाने वाली वीरांगना किरण देवी किसकी पुत्री थी?

उत्तर : महाराज शक्तिसिंह की पुत्री।

प्रश्न : किरण देवी का विवाह किसके साथ हुआ था?

उत्तर : बीकानेर के पृथ्वीराज राठौड़ के साथ।

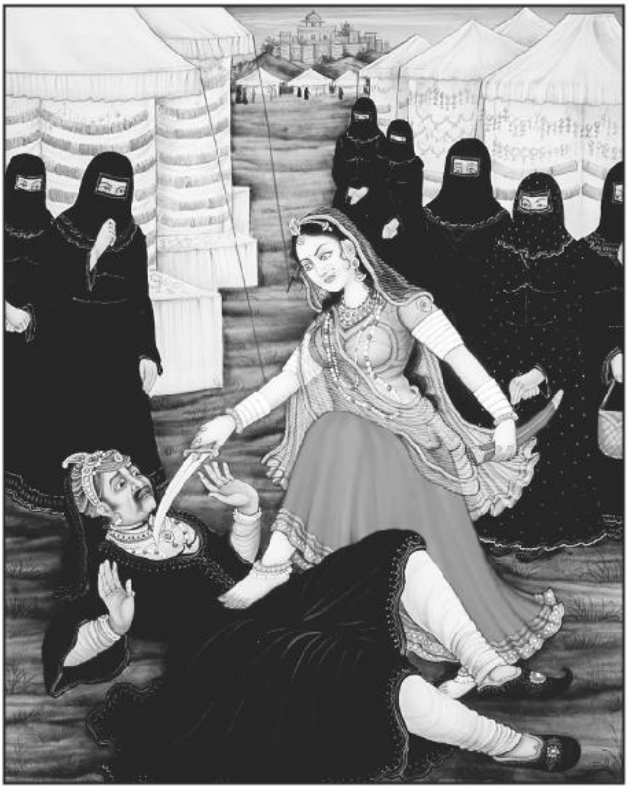

नौरोजे के मेले में अकबर को सबक सिखाती वीरांगना किरण देवी

4. महाराणा प्रताप के बाद मेवाड़

प्रश्न : महाराणा अमर सिंह के समय चुंडावतों और शक्तावतों में किस बात को लेकर विवाद हुआ?

उत्तर : हरावल दस्ते में लड़ने का।

प्रश्न : महाराणा लाखा के समय से हरावल में लड़ने का अधिकार किसे मिला था?

उत्तर : चुंडावतों को।

प्रश्न : चुंडावतों को यह अधिकार किस पुरस्कार स्वरूप मिला था?

उत्तर : महाराणा लाखा के पुत्र चुंडा के उत्तराधिकार के अधिकार के त्याग के बदले।

प्रश्न : महाराणा लाखा ने चुंडावतों को एक और विशेषाधिकार क्या दिया था?

उत्तर : महाराणा के राजतिलक का।

प्रश्न : महाराणा अमर सिंह ने चुंडावतों और शक्तावतों के हरावल में लड़ने के विवाद के निवारण हेतु दोनों को किस दुर्ग को जीतने के लिए भेजा?

उत्तर : उँटाला दुर्ग।

प्रश्न : ऊँटाला दुर्ग महाराणा अमर सिंह के समय किसके अधीन था?

उत्तर : मुगलों के।

प्रश्न : महाराणा अमरसिंह ने चुंडावतों और शक्तावतों के समक्ष क्या शर्त रखी?

उत्तर : जो ऊँटाला दुर्ग में पहले प्रवेश करेगा, वही हरावल में लड़ने का अधिकारी होगा।

प्रश्न : ऊँटाला दुर्ग वर्तमान में कहाँ स्थित है?

उत्तर : वल्लभ नगर में।

मेवाड़-भूमि-बलिवेदी पर, होते बलि शिशु रनिवासों के।
गोरा-बादल-रण-कौशल से, उज्ज्वल पन्ने इतिहासों के॥

प्रश्न : ऊँटाला दुर्ग पर आक्रमण करने के दौरान शक्तावतों का सेनापति कौन था?

उत्तर : बल्लुसिंह शक्तावत।

प्रश्न : ऊँटाला दुर्ग पर आक्रमण करने के दौरान चुंडावतों का सेनापति कौन था?

उत्तर : जेतसिंह चुंडावत।

प्रश्न : बल्लुसिंह ने ऊँटाला पर आक्रमण किस ओर से किया?

उत्तर : मुख्य द्वार की ओर से।

प्रश्न : ऊँटाला दुर्ग के मुख्य द्वार पर लगे कीलों के सामने किसने अपनी छाती अड़ा दी ताकि हाथी उसे अपने सिर की टक्कर से तोड़ सके?

उत्तर : बल्लुसिंह शक्तावत ने।

प्रश्न : शक्तावतों द्वारा द्वार तोड़े जाने की खबर सुनकर जेतसिंह ने क्या किया?

उत्तर : अपना सिर काटकर दुर्ग के अन्दर फेंक दिया।

प्रश्न : महान योद्धा महाराणा अमर सिंह ने जहाँगीर से 1615 ई. में संधि क्यों की?

उत्तर : उस समय मेवाड़ में निरंतर संघर्ष के कारण परिस्थितियाँ ऐसी हो गई कि या तो बुजुर्ग बचे या बच्चे, नौजवानों की संख्या बहुत कम हो गई थी इस कारण मेवाड़ के सामंतों ने मेवाड़ के हित में महाराणा से संधि के लिए आग्रह किया।

प्रश्न : संधि के मुताबिक मुगल दरबार में कौन उपस्थित हुआ?

उत्तर : युवराज कर्णसिंह।

प्रश्न : संधि से दुखी महाराणा अमर सिंह शासन अपने पुत्र कर्ण सिंह को सौंप कर कहाँ चले गए?

उत्तर : आहड़ में एकांत में।

प्रश्न : उदयपुर में जग मंदिर का निर्माण किसने शुरू करवाया?

मूंज़ा के सिर के शोणित से,जिसके भाले की प्यास बुझी।
हम्मीर वीर वह था जिसकी, असि वैरी-उर कर पार जुझी॥

उत्तर : कर्णसिंह ने।

प्रश्न : जगमंदिर का निर्माण किसने पूरा करवाया?

उत्तर : महाराणा जगतसिंह ने।

प्रश्न : उदयपुर में महाराणा जगतसिंह प्रथम द्वारा निर्मित जगदीश मंदिर के वास्तुकार कौन थे?

उत्तर : अर्जुन, भाणा, मुकुंद।

प्रश्न : जगन्नाथ राय प्रशस्ति जिसमें हल्दीघाटी युद्ध की जानकारी मिलती है के लेखक कौन हैं?

उत्तर : कृष्ण भट्ट।

प्रश्न : उदयपुर में अपनी धाय माँ नौजू बाई का मंदिर किस महाराणा ने बनवाया?

उत्तर : जगत सिंह प्रथम ने।

प्रश्न : युद्ध में एक स्त्री जिसने पुरुष वेश पहनकर युद्ध किया, कौन थी?

उत्तर : कोशीथल की महारानी रमा कँवर।

प्रश्न : कोशीथल महारानी युद्ध में लड़ने क्यों आई?

उत्तर : महाराणा का संदेश गया था, जिसमें युद्ध के लिए आह्वान था। कोशिथल ठिकाने के ठाकुर एवं जवान युद्धों में खेत रहे थे, अब केवल बच्चे ही थे। महारानी रमा कँवर का पुत्र केवल 5 वर्ष का था, ऐसी स्थिति में कोई यह न कहे कि जब मेवाड़ पर संकट आया तब कोशिथल ठिकाने से कोई नहीं आया। इसलिए अपनी सेना को नेतृत्व एवं साहस प्रदान करने के लिए कोशीथल महारानी स्वयं पुरुष वेश धारण कर युद्ध में गई।

प्रश्न : युद्ध के बदले कोशिथल महारानी रमा कँवर को महाराणा ने क्या पुरस्कार दिया?

जयमल ने जीवन-दान किया, पत्ता ने अर्पण प्रान किया।
कल्ला ने इसकी रक्षा में, अपना सब कुछ कुबार्न किया॥

उत्तर : महाराणा ने कोशिथल महारानी रमा कँवर को हुँकार की कलंगी प्रदान की जिसे कोशिथल के ठाकुर अपनी पगड़ी में लगाते रहे।

प्रश्न : महाराणा राजसिंह का शासन काल क्या रहा?

उत्तर : 1652 से 1680 ई.।

प्रश्न : महाराणा राजसिंह का जन्म कब हुआ?

उत्तर : 24 सितंबर, 1629 ई.

प्रश्न : महाराणा राजसिंह के माता-पिता कौन थे?

उत्तर : माता जनादे कँवर, पिता जगत सिंह

प्रश्न : महाराणा राजसिंह के जन्म की खुशी में महाराणा जगत सिंह ने किस मंदिर का निर्माण करवाया?

उत्तर : जगतशिरोमणि मंदिर।

प्रश्न : 1568 ई. में अकबर द्वारा चित्तौड़ विध्वंस के बाद चित्तौड़ का पुनर्निर्माण किसने करवाया?

उत्तर : महाराणा राजसिंह ने।

प्रश्न : चित्तौड़ दुर्ग का पुनर्निर्माण करवाकर राजसिंह ने किस संधि का उल्लंघन किया?

उत्तर : 1615 ई. की अमरसिंह व जहाँगीर के मध्य हुई मेवाड़-मुगल संधि का उल्लंघन किया।

प्रश्न : महाराणा राजसिंह द्वारा पुनर्निर्मित चित्तौड़ दुर्ग को नष्ट-भ्रष्ट करने के लिए शाहजहाँ ने किसे भेजा?

उत्तर : सादुल्ला खाँ को 30000 सेना देकर भेजा जिसने अक्टूबर, 1656 ई. में पुनः चित्तौड़ दुर्ग को ध्वस्त कर दिया।

प्रश्न : चित्तौड़ दुर्ग के ध्वंस के बाद राजसिंह ने मुगलों के साथ कैसी नीति

सांगा को अस्सी घाव लगे, मरहमपट्टी थी आँखों पर।
तो भी उसकी असि बिजली सी, फिर गई छपाछप लाखों पर॥

अपनाई?

उत्तर : लात मारो और सहलाओ की नीति अपनाई।

प्रश्न : महाराणा राजसिंह ने अपनी विजय यात्रा की शुरुआत कब की?

उत्तर : अक्टूबर,1657 ई.

प्रश्न : राजसिंह ने अपनी विजय यात्रा किस रूप में प्रारंभ की।

उत्तर : टीका दौड़ के रूप में।

प्रश्न : महाराणा राजसिंह ने टीका दौड़ के रूप में किन क्षेत्रों पर अपना अधिकार किया?

उत्तर : मांडलगढ़, खेराबाद, पुर, दरीबा, बनेड़ा, शाहपुरा, सावर, जहाजपुर, केकड़ी आदि क्षेत्रों पर अधिकार किया। मालपुरा पर आक्रमण कर 50 लाख रुपये प्राप्त किए।

प्रश्न : सैन्य अभियान के दौरान महाराणा राजसिंह की सेना का स्वरूप क्या था?

उत्तर : 100 हाथी, 50000 घुड़सवार और दो लाख पदाति सैनिक थे।

प्रश्न : ओरंगजेब किशनगढ़ की किस राजकुमारी से विवाह करना चाहता था?

उत्तर : राजकुमारी चारुमती।

प्रश्न : चारुमती ने महाराणा राजसिंह को पत्र में क्या लिखा?

उत्तर : चारुमति ने महाराणा राजसिंह को लिखा- "हिंदू कुलभूषण! मैं आपको पति मान चुकी हूँ, मैं विधर्मी से विवाह नहीं करूँगी, मैं आप से ही विवाह करूँगी अन्यथा अपने प्राण त्याग दूँगी, दुष्ट औरंगजेब से मेरी रक्षा करो।"

प्रश्न : महाराणा राजसिंह ने चारुमति से विवाह कब किया?

उत्तर : चैत्र पूर्णिमा, 1660 ई.।

प्रश्न : औरंगजेब को राह में रोकने के लिए महाराणा राजसिंह ने किसको भेजा?

क्रीड़ा होती हथियारों से , होती थी केलि कटारों से।
असि-धार देखने को ऊँगली, कट जाती थी तलवारों से॥

उत्तर : सलूंबर के रावत रतन सिंह चुंडावत को सेना देकर भेजा।

प्रश्न : जब रावत रतन सिंह औरंगजेब से युद्ध करने गए तब उनके विवाह को कितना समय हो गया था?

उत्तर : रावत रतन सिंह नव विवाहित ही थे अभी उनकी वधू की विवाह की मेहंदी भी नहीं सूखी थी।

प्रश्न : रावत रतन सिंह की पत्नी का क्या नाम था?

उत्तर : हाड़ी रानी सहल कँवर/सल्ह कँवर /इंद्र कँवर।

प्रश्न : हाड़ी रानी सहल कँवर का पीहर कहाँ था?

उत्तर : बूंदी।

प्रश्न : औरंगजेब से युद्ध करने जाते समय रावत रतन सिंह का मन किस कारण कमजोर हो रहा था?

उत्तर : नव विवाहिता पत्नी सहल कँवर के मोह के कारण।

प्रश्न : रावत रतन सिंह ने निशानी लेने के लिए हाड़ी रानी के पास किसे भेजा?

उत्तर : अपने पुरोहित को भेजा।

प्रश्न : हाड़ी रानी ने निशानी के रूप में रावत रतन सिंह को क्या भेजा?

उत्तर : अपना सिर काट करके भेज दिया।

प्रश्न : हाड़ी रानी सहल कँवर ने अपने पति रतन सिंह को अपना सिर काट करके क्यों भेजा?

उत्तर : क्योंकि वह अपने पति की मनःस्थिति को समझ चुकी थी, उसने सोचा कि अगर मेरा पति मेरे मोह में पड़ा रहा तो युद्ध ठीक से नहीं कर पाएगा और हमारी सेना हार जाएगी। मेरे कारण हमारी सेना हार जाए यह एक क्षत्राणी के लिए उचित नहीं है। ऐसा सोचकर उसने अपना सिर काट करके भेज दिया ताकि उसका पति पूर्ण मनोयोग से युद्ध कर सके।

हल्दी-घाटी का भैरव-पथ, रंग दिया गया था खूनों से।
जननी-पद-अर्चन किया गया, जीवन के विकच प्रसूनों से॥

प्रश्न : रावत रतन सिंह ने अपनी पत्नी के सिर का क्या किया?

उत्तर : रावत रतन सिंह ने अपनी पत्नी के सिर को अपने गले में लटका करके औरंगजेब की सेना से भीषण युद्ध किया और युद्ध लड़ते हुए बलिदान हो गए, किंतु मेवाड़ की सेना युद्ध जीत गई।

प्रश्न : महाराणा राजसिंह के शासन काल में ब्रज के मंदिरों को तोड़ने का आदेश किसने दिया?

उत्तर : मुगल शासक औरंगजेब ने।

प्रश्न : ब्रज क्षेत्र से मूर्तियाँ लेकर भागे पुजारियों को संरक्षण किसने दिया?

उत्तर : महाराणा राजसिंह ने।

प्रश्न : महाराणा राजसिंह ने मूर्तियों को बचाने के लिए द्वारकाधीश मंदिर किस स्थान पर बनवाया?

उत्तर : आसोटिया गाँव(कांकरोली)।

प्रश्न : महाराणा राजसिंह ने श्रीनाथ जी का मंदिर कहाँ बनवाया?

उत्तर : सिहाड़ गाँव(श्रीनाथ जी) में।

प्रश्न : ओरंगजेब द्वारा हिंदुओं पर लगाए जजिया कर का विरोध किसने किया?

उत्तर : महाराणा राजसिंह ने।

प्रश्न : मुगलों के विरुद्ध छत्रसाल, शिवाजी, दुर्गादास व गुरु गोविंद सिंह को एक कर हिंदुओं के ध्रुवीकरण का प्रयास किसने किया?

उत्तर : महाराणा राजसिंह ने।

प्रश्न : दुर्गादास राठौड़ और राजकुमार अजीत सिंह राठौड़ जब औरंगजेब की कैद से भाग निकले तो उन्हें किसने शरण दी?

उत्तर : महाराणा राजसिंह ने।

प्रश्न : 1679 ई. में ओरंगजेब के मेवाड़ पर आक्रमण के समय जगदीश मंदिर की

भीलों में रण–झंकार अभी, लटकी कटि में तलवार अभी।
भोलेपन में ललकार अभी, आँखों में हैं अंगार अभी॥

रक्षा करते हुए कौन वीरगति को प्राप्त हुए?

उत्तर : चारण नरुजी बारहठ।

प्रश्न : 1679 ई. में औरंगजेब और राजसिंह के मध्य हुए युद्ध में किसकी जीत हुई?

उत्तर : महाराणा राजसिंह की।

प्रश्न : राजसमंद झील का निर्माण किसने करवाया?

उत्तर : महाराणा राजसिंह ने।

प्रश्न : राजप्रशस्ति का निर्माण किसने करवाया?

उत्तर : महाराणा राजसिंह ने।

प्रश्न : राजप्रशस्ति के लेखक कौन थे?

उत्तर : लेखक रणछोड़ भट्ट थे, इनके द्वारा प्रणत 'राजप्रशस्ति' नामक संस्कृत ग्रंथ को झील के चारों ओर लगी शिलाओं पर उत्कीर्ण करवाया गया।

प्रश्न : औरंगजेब ने 2 अप्रैल सन 1679 ई. को समस्त हिन्दुओं पर जजिया कर लगाया। जजिया मुसलमानों के राज्य में रहने वाले तमाम विधर्मियों से प्रति वर्ष लिया जाने वाला अपमानजनक कर था। औरंगजेब ने जजिया वसूलने के लिए सख्ती की, इसका घोर विरोध किसने किया?

उत्तर : महाराणा राजसिंह ने।

प्रश्न : किशोरदास, सदाशिव, रणछोड़ भट्ट तैलंग किसके दरबारी विद्वान थे?

उत्तर : महाराणा राजसिंह के।

प्रश्न : राजप्रशस्ति और अमरकाव्य वंशावली के लेखक कौन हैं?

उत्तर : रणछोड़ भट्ट तैलंग।

प्रश्न : संस्कृत भाषा का सबसे बड़ा अभिलेख किसे माना जाता है?

उत्तर : राजप्रशस्ति को(राजसमंद झील के पास नौ चौकी पाल पर 25 पत्थरों पर

चूड़ावत ने तन भूषित कर, युवती के सिर की माला से।
खलबली मचा दी मुगलों में ,अपने भीषणतम भाला से॥

उत्कीर्ण)

प्रश्न : राजसमंद झील के निर्माण में महाराणा राजसिंह जी ने कितने रुपये खर्च किये?

उत्तर : 1,05,07,584 रुपये।

प्रश्न : राजप्रशस्ति से क्या जानकारी मिलती है?

उत्तर : बप्पा रावल से महाराणा राजसिंह तक की जानकारी।

प्रश्न : विजय कटकातु और हाइड्रोलिक रूलर किसे कहा गया है?

उत्तर : महाराणा राजसिंह को।

प्रश्न : 17वीं शताब्दी में मुगलों के विरुद्ध 'सिसोदिया-राठौड़ गठबंधन' में मेवाड़ के शासक कौन थे?

उत्तर : महाराणा राजसिंह(मारवाड़ के दुर्गादास राठौड़)।

प्रश्न : महाराणा राजसिंह का देहांत कैसे हुआ?

उत्तर : औरंगजेब से संघर्ष के दौरान कुंभलगढ़ के पास ओड़ा ग्राम में विश्राम कर रहे राजसिंह को खाने में जहर दिए जाने के कारण उनकी मृत्यु हो गई।

प्रश्न : महाराणा राजसिंह की मृत्यु 22 अक्टूबर 1680 ई. को हुई, इनका स्मारक कहाँ बना हुआ है?

उत्तर : ओड़ा गाँव(राजसमंद)।

प्रश्न : महाराणा जयसिंह ने गोमती, झामरी, रुपारेल और बगार नामक चार छोटी नदियों का जल संगठित इकाई के रूप में दो पहाड़ों के बीच ढेबर नामक नाके से होकर निकलता था, इस पर 22 मई 1601 ई. को बाँध बनवाया इस बाँध का क्या नाम है?

उत्तर : जयसमन्द।

प्रश्न : महाराणा राजसिंह के बेटे सुरताण सिंह वर्तमान में सगस जी बावजी के रूप

यह एकलिंग का आसन है, इस पर न किसी का शासन है।
नित सिहक रहा कमलासन है, यह सिंहासन है सिंहासन है॥

में कहाँ विराजमान हैं?

उत्तर : सर्वऋतु विलास उदयपुर में। उनका एक देवरा चित्तौड़ के धनेत ग्राम में भी बना हुआ है और भक्तों की मनोकामनाएँ पूर्ण कर रहे हैं।

प्रश्न : महाराणा राजसिंह के बेटे सरदार सिंह जी सगसजी के रूप में कहाँ विराजमान हैं?

उत्तर : उदयपुर कुँवरपदे में विराजमान हैं।

प्रश्न : सरदार सिंह जी ने किस महत्वपूर्ण ग्रंथ का संपादन किया था?

उत्तर : पृथ्वीराज रासो की एक प्रति का संपादन किया था।

प्रश्न : उदयपुर में सहेलियों की बाड़ी का निर्माण किसने करवाया?

उत्तर : महाराणा संग्राम सिंह द्वितीय ने।

प्रश्न : मराठाओं के विरुद्ध राजस्थान के सभी राजाओं के संगठन हेतु हुरड़ा सम्मेलन की अध्यक्षता किसने की?

उत्तर : महाराणा जगतसिंह द्वितीय ने।

प्रश्न : अंग्रेज शासन द्वारा 1903 ई. व 1911 ई. में दिल्ली में भव्य दरबार लगा, जिसमें भारत के सभी नरेश व प्रतिष्ठित व्यक्ति सम्मिलित हुए पर मेवाड़ के कौन-से महाराणा अपने वंश गौरव का विचार कर दरबार में सम्मिलित नहीं हुए?

उत्तर : महाराणा फतहसिंह।

शक्ति के विद्युत्कण जो व्यस्त, विकल बिखरे हैं, हो निरुपाय।
समन्वय उसका करे समस्त, विजयिनी मानवता हो जाय॥

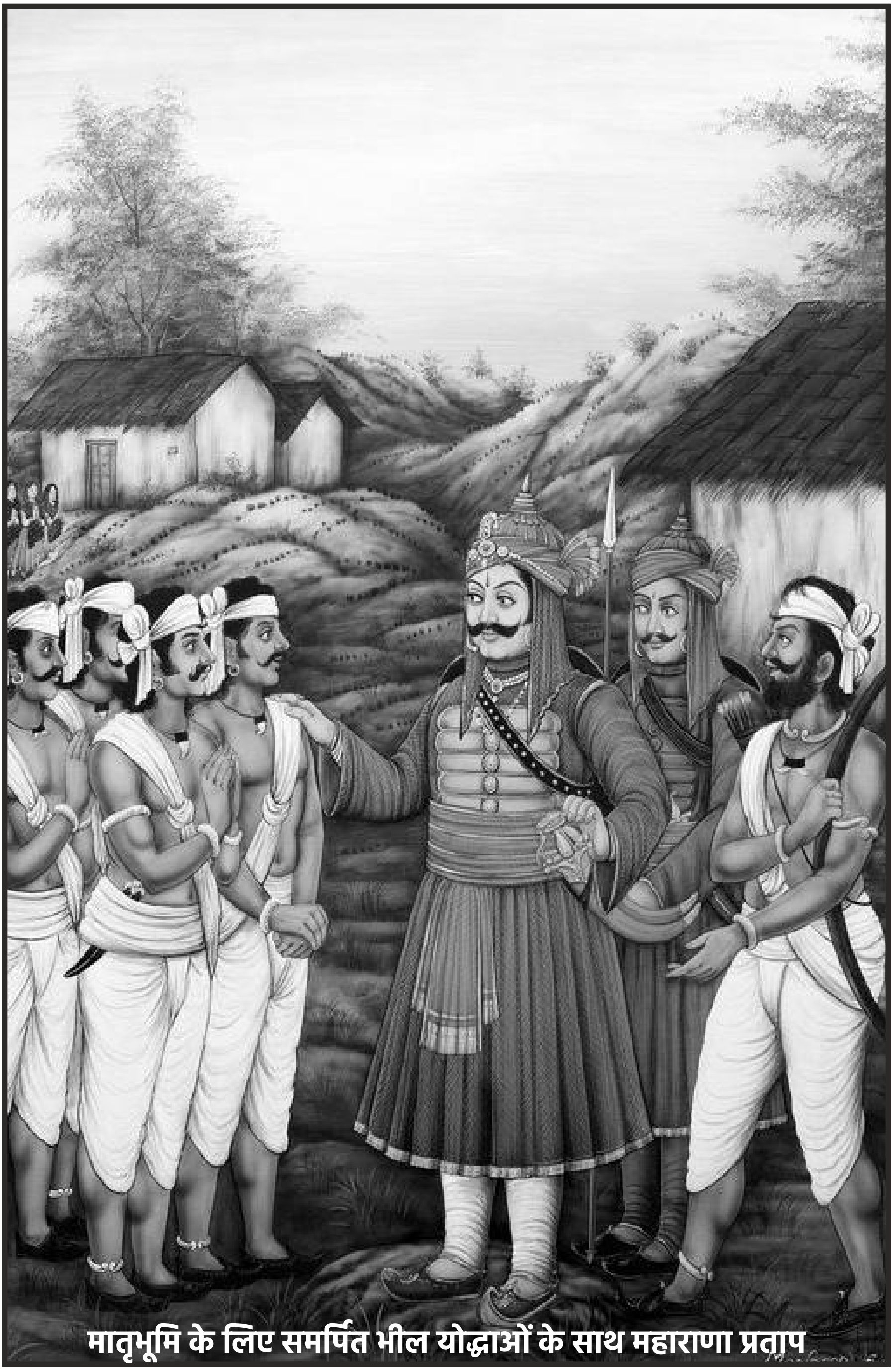

मातृभूमि के लिए समर्पित भील योद्धाओं के साथ महाराणा प्रताप

5. दुर्गराज चित्तौड़

प्रश्न : किंवदंतियों के अनुसार चित्तौड़गढ़ दुर्ग का निर्माण सर्वप्रथम किसने किया?

उत्तर : पांडवों ने(महाभारत काल में लगभग 5000 वर्ष पूर्व)।

प्रश्न : पांडवों ने किसकी शर्त पर दुर्ग का निर्माण किया?

उत्तर : निर्भय नाथ जी की शर्त पर।

प्रश्न : पांडव निर्भय नाथ जी से क्या प्राप्त करना चाहते थे?

उत्तर : पारस पत्थर।

प्रश्न : पांडव पारस पत्थर प्राप्त करने में सफल क्यों नहीं हुए?

उत्तर : निर्भय नाथ जी की शर्त के अनुसार दुर्ग निर्माण एक रात में करना था किंतु थोड़ा सा बाकी रहा और मुर्गे ने बांग दी पांडवों ने सूर्योदय नजदीक जानकर कार्य करना छोड़ दिया।

प्रश्न : ऐतिहासिक दृष्टि से चित्तौड़गढ़ दुर्ग का निर्माण किसने करवाया?

उत्तर : चित्रांगद मौर्य ने।

प्रश्न : चित्रांगद मौर्य ने चित्तौड़ दुर्ग का निर्माण कब करवाया?

उत्तर : छठी शताब्दी में।

प्रश्न : चित्तौड़गढ़ का नाम सबसे पहले क्या था?

उत्तर : चित्रकूट(चित्रांगद मौर्य के नाम पर)।

प्रश्न : चित्तौड़गढ़ दुर्ग कौन से पठार पर बना हुआ है?

उत्तर : मेसा पठार पर।

प्रश्न : चित्तौड़ दुर्ग स्थित भीमगौड़ी क्या है?

उत्तर : एक जलाशय का नाम।

है कौन विघ्न ऐसा जग में, टिक सके आदमी के मग में।
खम ठोक ठेलता है जब नर,पर्वत के जाते पाँव उखड़॥

प्रश्न : चित्तौड़ दुर्ग स्थित रतन सिंह महल अन्य किस नाम से जाना जाता है?

उत्तर : हिंगलू अहाड़ा के महल।

प्रश्न : चित्तौड़ दुर्ग में लगभग कितने जलाशय हैं?

उत्तर : 84

प्रश्न : चित्तौड़ दुर्ग की किस बावड़ी का निर्माण जेतु देवी ने सूत कातने से अर्जित आय से करवाया?

उत्तर : कातन बावड़ी।

प्रश्न : चित्तौड़ में बनवीर ने दीपदान का कार्यक्रम किस मंदिर के यहाँ करवाया और महाराणा विक्रमादित्य और कुँवर उदयसिंह की हत्या की योजना बनवाई?

उत्तर : तुलजा भवानी।

प्रश्न : चित्तौड़ दुर्ग में भामाशाह के महल कहाँ बने हुए हैं?

उत्तर : टिकट खिड़की के पूर्व में तोपखाने के पास।

प्रश्न : चित्तौड़ दुर्ग पर चित्तौड़ी बुर्ज किस दिशा में बनी हुई है?

उत्तर : दक्षिण दिशा में।

प्रश्न : चित्तौड़ दुर्ग पर बीकाखोह दुर्ग की किस दिशा में बनी हुई है?

उत्तर : दक्षिण दिशा में।

प्रश्न : चित्तौड़ दुर्ग पर महाराणा कुंभा की पुत्री का विवाह स्थल 'जैन मंदिर' वर्तमान में किस नाम से जाना जाता है?

उत्तर : श्रृंगार चंवरी।

प्रश्न : चित्तौड़ के पास चौथी सदी का विष्णु मंदिर किस स्थान पर मिला?

उत्तर : नगरी।

देशभक्त वीरों, मरने से नेक नहीं डरना होगा।
प्राणों का बलिदान देश की वेदी पर करना होगा॥

प्रश्न : चित्तौड़ आक्रमण के दौरान बादशाह अकबर ने सैन्य शिविर कहाँ बनाया?

उत्तर : नगरी।

प्रश्न : राजस्थान का राज्य चिह्न क्या है?

उत्तर : विजयस्तंभ।

प्रश्न : विजयस्तंभ कितने मंजिल की इमारत है?

उत्तर : 9 मंजिला।

प्रश्न : विजयस्तंभ की ऊँचाई कितनी है?

उत्तर : 122 फीट।

प्रश्न : विजयस्तंभ किस भगवान को समर्पित हैं?

उत्तर : भगवान विष्णु को।

प्रश्न : चित्तौड़गढ़ में कुल कितने जौहर-साके हुए?

उत्तर : तीन।

प्रश्न : युद्ध में हार निश्चित जानकर महिलाएं जौहर करती है और पुरुष केसरिया करते हैं उसे क्या कहा जाता है?

उत्तर : साका।

प्रश्न : युद्ध में हार निश्चित जानकर अपने चरित्र की रक्षा के लिए महिलाएं जीते जी आग में कूद कर अपने प्राणों का बलिदान कर देती है, उसे क्या कहा जाता है?

उत्तर : जौहर।

प्रश्न : चित्तौड़ दुर्ग में प्रथम जौहर कब हुआ?

उत्तर : विक्रम संवत् 1360 भाद्रपद शुक्ल त्रयोदसी, 25 अगस्त, 13O3 ई.

प्रश्न : 1303 ई. का जौहर किसके नेतृत्व में हुआ?

देश उठेगा अपने पैरों, निज गौरव के भान से।
स्नेह भरा विश्वास जगाकर, जीयें सुख सम्मान से॥

उत्तर : महारानी पद्मिनी के नेतृत्व में।

प्रश्न : प्रथम जौहर के समय चित्तौड़ पर किसने आक्रमण किया था?

उत्तर : अलाउद्दीन खिलजी ने।

प्रश्न : प्रथम जौहर के समय चित्तौड़ के शासक का क्या नाम था?

उत्तर : रावल रतन सिंह।

प्रश्न : पद्मिनी के पति का नाम क्या था?

उत्तर : रावल रतनसिंह।

प्रश्न : चित्तौड़ दुर्ग में द्वितीय जौहर कब हुआ?

उत्तर : विक्रम संवत् 1592 चैत्र शुक्ल चतुर्थी सोमवार, 8 मार्च 1535 ई.

प्रश्न : चित्तौड़ का दूसरा जौहर किसके नेतृत्व में हुआ?

उत्तर : महारानी कर्मवती के नेतृत्व में।

प्रश्न : महारानी कर्मवती किसकी पत्नी थी?

उत्तर : महाराणा सांगा की पत्नी।

प्रश्न : महारानी कर्मवती के जौहर के समय चित्तौड़ पर किसने आक्रमण किया था

उत्तर : मालवा के शासक बहादुर शाह ने।

प्रश्न : चित्तौड़ दुर्ग में तीसरा जौहर कब हुआ?

उत्तर : विक्रम संवत 1624 चैत्र कृष्ण एकादशी, सोमवार 23 फरवरी, 1568 ई.

प्रश्न : चित्तौड़ का तीसरा जौहर किसके नेतृत्व में हुआ?

उत्तर : फूल कँवर के नेतृत्व में।

प्रश्न : फूल कँवर किसकी पत्नी थी?

उत्तर : रावत पत्ता सिसोदिया।

सेनानी करो प्रयाण अभय, भावी इतिहास तुम्हारा है।
ये नखत अमाँ के बुझते हैं, सारा आकाश तुम्हारा है॥

प्रश्न : चित्तौड़ का दूसरा जौहर कहाँ हुआ

उत्तर : विजयस्तंभ के पास।

प्रश्न : चित्तौड़ दुर्ग में तीसरा जौहर कहाँ हुआ?

उत्तर : यह जनजौहर था, जो मुख्य रूप से चार जगह हुआ:-

- रावत पत्ता चुंडावत की हवेली
- रावत साहिब खाँ चौहान की हवेली
- राठौड़ ईसर दास की हवेली
- महासतियों के चबूतरे के पास

प्रश्न : तीसरे जौहर को जनजौहर क्यों कहा जाता है?

उत्तर : क्यों कि इस समय क्षत्राणियों के अतिरिक्त सामान्य स्त्रियों ने भी जौहर किया था।

प्रश्न : मुगल आक्रमण के समय ही जौहर क्यों हुए?

उत्तर : क्योंकि मुगल बड़े क्रूर हुआ करते थे, जिस क्षेत्र को वे जीतते वहाँ वे बड़ा कत्लेआम करते, महिलाओं का सामूहिक बलात्कार करना, उनके अंग नौचना और फिर उन्हें बेच देना, बच्चों को माताओं के सामने बेदर्दी से तड़फा-तड़फा कर मारना उनके लिए मनोरंजन हुआ करता था, इसलिए वे अपने चरित्र की रक्षा के लिए जौहर कर लेती थीं।

प्रश्न : चित्तौड़ के तीसरे जौहर के समय चित्तौड़ के शासक कौन थे?

उत्तर : महाराणा उदयसिंह।

प्रश्न : 1568 ई. में चित्तौड़ पर किसने आक्रमण किया?

उत्तर : अकबर ने।

प्रश्न : अकबर ने चित्तौड़ को जीतकर कितने निर्दोष लोगों का कत्लेआम करवाया?

मेरी हार देश की जय हो, स्वार्थ-भाव का क्षण-क्षण क्षय हो
जल-जल कर जीवन दूँ जग को, बस इतना सम्मान चाहिए॥

उत्तर : 30,000 लोगों का।

प्रश्न : 1568 ई. में अकबर के चित्तौड़ दुर्ग पर आक्रमण के समय मेवाड़ी सेना का नेतृत्व किसने किया?

उत्तर : राव जयमल जी राठौड़।

प्रश्न : राव जयमल जी के पैर में अकबर की संग्राम नामक बंदूक की गोली लगने पर उन्हें कंधे पर बिठाकर किसने युद्ध किया?

उत्तर : वीरकल्ला जी राठौड़।

प्रश्न : चित्तौड़ के किन योद्धाओं की वीरता से प्रभावित होकर अकबर ने उनकी मूर्तियाँ आगरा के किले में दरवाजे पर लगवाई?

उत्तर : राव जयमल और पत्ता।

प्रश्न : चित्तौड़ दुर्ग स्थित त्रिभुवन नारायण का मंदिर किसने बनवाया?

उत्तर : राजा भोज परमार ने।

प्रश्न : चित्तौड़ के पूर्वी द्वार का नाम क्या है?

उत्तर : सूरजपोल।

प्रश्न : चित्तौड़गढ़ के उत्तरी द्वारा का नाम क्या है?

उत्तर : लाखोटा बारी।

प्रश्न : चित्तौड़ दुर्ग के पश्चिम में कितने द्वार हैं?

उत्तर : सात द्वार।

प्रश्न : चित्तौड दुर्ग के पश्चिम में सात पोलों का निर्माण किसने करवाया?

उत्तर : महाराणा कुंभा ने।

प्रश्न : चित्तौड़ दुर्ग के पश्चिम में क्रमशः कौन-कौन से द्वार हैं?

उत्तर : पाडनपोल, भेरूपोल, हनुमानपोल, गणेशपोल, जोड़लापोल, लक्ष्मणपोल

जीवन पुष्प चढ़ा चरणों में, मांगे मातृभूमि से यह वर ।
तेरा वैभव अमर रहे माँ, हम दिन चार रहें न रहें॥

और राम पोल।

प्रश्न : राव जयमल जी और वीरकल्ला जी की छतरी किन दो पोलों के बीच बनी हुई हैं?

उत्तर : हनुमान पोल और भैरव पोल के बीच।

प्रश्न : सिसोदिया वंश की कुलदेवी कौन है?

उत्तर : बायण माता।

प्रश्न : चित्तौड़ दुर्ग में बायण माता का मंदिर कहाँ स्थित है?

उत्तर : दुर्ग स्थित गाँव के बीच में।

प्रश्न : चित्तौड़ दुर्ग किन दो नदियों के संगम के पास बना हुआ है?

उत्तर : बेड़च और गंभीरी नदी के संगम के पास।

प्रश्न : चित्तौड़ दुर्ग के पाडन पोल पर किस वीर का स्मारक है?

उत्तर : रावत बाघ सिंह का।

प्रश्न : रावत बाघ सिंह किस युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए?

उत्तर : 1535 ई बहादुर शाह के आक्रमण के समय।

प्रश्न : महाभारत काल में चित्तौड़ दुर्ग किसकी तपोस्थली रहा?

उत्तर : निर्भय नाथ जी की।

प्रश्न : चित्तौड़ में प्रतिवर्ष जौहर श्रद्धांजलि समारोह कब आयोजित होता है?

उत्तर : चेत्र कृष्ण एकादशी।

प्रश्न : चित्तौड़ दुर्ग स्थित कालिका माता मंदिर पूर्व में सूर्य मंदिर था, उसे किसने तोड़ा?

उत्तर : अलाउद्दीन खिलजी ने।

प्रश्न : चित्तौड़ दुर्ग पर सूर्य मंदिर का निर्माण किसने करवाया था?

तलवारों की धारों पर, इतिहास हमेशा बनता है ।
जिस ओर जवानी चलती है, उस ओर ज़माना चलता है ॥

उत्तर : बप्पा रावल ने, क्योंकि वे सूर्यवंशी थे।

प्रश्न : अलाउद्दीन खिलजी द्वारा सूर्य मंदिर को तोड़ दिए जाने पर उसमें कालिका माता की मूर्ति की स्थापना किसने करवाई?

उत्तर : महाराणा हमीर ने।

प्रश्न : चित्तौड़ दुर्ग स्थित चतरंग तालाब का निर्माण किसने करवाया?

उत्तर : चित्रांगद मौर्य ने।

प्रश्न : चित्तौड़ दुर्ग पर गाड़िया लोहारों की बस्ती किस तालाब के किनारे थी?

उत्तर : चतरंग तालाब के पूर्वी किनारे पर।

प्रश्न : गाड़िया लोहारों ने किस महाराणा के समय चित्तौड़ दुर्ग छोड़ा?

उत्तर : महाराणा प्रताप के समय।

प्रश्न : गाड़िया लोहारों की क्या प्रतिज्ञा थी?

उत्तर : जब तक चित्तौड़ आजाद नहीं होगा, हम चित्तौड़ दुर्ग पर नहीं चढेंगे, घर बनाकर नहीं रहेंगे, खाट पर नहीं सोएंगे, दीपक नहीं जलाएंगे, पानी खींचने का रस्सा नहीं रखेंगे।

प्रश्न : चित्तौड़ में प्रथम साका में वीरगति को प्राप्त हुए गोरा और बादल का पैनोरमा कहाँ पर बना हुआ है?

उत्तर : उनके बलिदान स्थल भोंईखेड़ा गाँव में।

प्रश्न : माँ पन्नाधाय का पैनोरमा कहाँ निर्माणाधीन है?

उत्तर : पांडोली ग्राम में।

प्रश्न : संत रविदास का पैनोरमा कहाँ बना हुआ है?

उत्तर : मोहर मंगरी के पास।

प्रश्न : मोहर मंगरी का निर्माण किसने करवाया?

केसरी बना सजाए, वीर का श्रृंगार कर।
ले चले हम राष्ट्र नौका, को भंवर से पार कर॥

उत्तर : मुगल शासक अकबर ने।

प्रश्न : अकबर ने मोहर मंगरी का निर्माण क्यों करवाया?

उत्तर : तोप चढ़ाने और दुर्ग की दक्षिणी दीवार को तोड़ने के लिए।

प्रश्न : अकबर ने मोहर मंगरी के निर्माण में सहायक मजदूरों का क्या हाल किया?

उत्तर : जब मजदूरों ने काम के बदले मोहर मांगी तो उन्हें मौत के घाट उतार दिया और उसी मंगरी में दफना दिया।

प्रश्न : अकबर की सेना से मुकाबला करते हुए चुंडावत साईं दास कहाँ वीरगति को प्राप्त हुए?

उत्तर : सूरजपोल के पास।

प्रश्न : चित्तौड़ दुर्ग में रावत पत्ता सिसोदिया का स्मारक कहाँ बना हुआ है?

उत्तर : राम पोल के अंदर।

प्रश्न : चित्तौड़ दुर्ग स्थित जैन कीर्तिस्तंभ का निर्माण किसने करवाया?

उत्तर : जैन शाह जीजा ने 12वीं शताब्दी में।

प्रश्न : जैन कीर्तिस्तंभ किसे समर्पित है?

उत्तर : भगवान आदिनाथ को।

प्रश्न : जैन कीर्तिस्तंभ कितने मंजिला है?

उत्तर : सात मंजिल।

प्रश्न : समिद्धेश्वर मंदिर का जीर्णोद्धार किसने करवाया?

उत्तर : महाराणा मोकल ने।

प्रश्न : श्रीनाथजी की मेवाड़ में कब स्थापना की गई?

उत्तर : फाल्गुन वदि 7 वि. सं. 1720(ई. 1671)

प्रश्न : चित्तौड़गढ़ किले की मरम्मत के लिए प्रतिवर्ष 24000 रुपये लगाना कौन-

राष्ट्र भक्ति ले हृदय में, हो खड़ा यदि देश सारा।
संकटों पर मात कर यह, राष्ट्र विजयी हो हमारा॥

से महाराणा ने शुरु किया?

उत्तर : महाराणा सज्जन सिंह जी ने।

प्रश्न : महाराणा भूपालसिंहजी ने मेवाड़ को राजस्थान में कब विलय किया?

उत्तर : 18 अप्रैल 1948 ई.।

प्रश्नः- चित्तौड़ शहर में गंभीरी पूल से 200 मीटर दूर दक्षिण दिशा में चौमुखा महादेव मंदिर एवं गुंसाई साधुओं की समाधि विद्यमान है, इसका क्या नाम हैं?

उत्तर : शंकर घट्टा।

प्रश्न : चित्तौड़ दुर्ग के नीचे पाडन पोल के पास महाराणा उदयसिंह की पत्नी वीर कँवर झाली द्वारा निर्मित बावड़ी का क्या नाम है?

उत्तर : झाली बाव।

प्रश्न : चित्तौड़ दुर्ग में हाथी तालाब व झरना कहाँ पर अवस्थित हैं?

उत्तर : पाडन पोल के अन्दर प्रवेश करते समय दायीं तरफ।

प्रश्न : चित्तौडगढ़ में राव जयमल राठौड़ की छतरी कितने खम्भों की बनी हुई है?

उत्तर : छह खम्भों की।

प्रश्न : जोरला पोल एवं लक्ष्मणपोल के यहां अकबर से युद्ध में कौन लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए?

उत्तर : ईसरदास चौहान एवं ईसरदास राठौड़।

प्रश्न : चित्तौडगढ़ दुर्ग के रामपोल दरवाजे में प्रवेश करते ही दाहिनी ओर किसका मंदिर बना हुआ है?

उत्तर : श्री रामचन्द्रजी का मंदिर।

प्रश्न : चित्तौड़ दुर्ग में पुरोहितजी की हवेली के गणेशजी का मन्दिर कहाँ है?

भाग हूँ न भड़ मिले, मिले न तप रे ताप ।
अनगिन माँ जीवित जले, जद जन्मे प्रताप॥

उत्तर: रामपोल एव तुलजा भवानी मन्दिर के बीच में।

प्रश्न: श्री तुलजा माताजी को किसकी कुलदेवी माना जाता है?

उत्तर: छत्रपति शिवाजी महाराज की।

प्रश्न: श्रृंगार चंवरी का निर्माण महाराणा कुम्भा के शासन में किसने करवाया था?

उत्तर: शाह बेलका(महाराणा कुम्भा के कोषाध्यक्ष)।

प्रश्न: कुम्भा महल के मुख्य द्वार का क्या नाम है?

उत्तर: बड़ीपोल।

प्रश्न: घोड़ों की पायगा(अस्तबल) का निर्माण किस महल में किया गया है?

उत्तर: कुम्भा महल में।

प्रश्न: सूरज गोखड़ा कौनसे महल में बना हुआ है?

उत्तर: कुम्भा महल।

प्रश्न: चित्तौड़गढ़ दुर्ग में मीराबाई मेड़तणी का निवास स्थान कहाँ पर था?

उत्तर: कँवरपदा के महल(कुंभा महल)।

प्रश्न: मीराबाई द्वारा पूजित पुराना मंदिर कहाँ स्थित है?

उत्तर: गड़िया मंदिर(कुंभा महल के परिसर में)।

प्रश्न: चित्तौड़ दुर्ग में सास-बहू मंदिर कहाँ स्थित है ?

उत्तर: बायण माता मंदिर के दक्षिण दरवाजे के बाहर।

प्रश्न: पुराने चांदी के सिक्के स्वरूप शाही फर्श में कहाँ लगे हुए हैं?

उत्तर: श्री चारभुजा नाथ जी मंदिर में।

प्रश्न: चित्तौड़गढ़ दुर्ग में संचालित राजकीय संग्रहालय(म्यूजियम) जिस महल में

सूरा सो पहचानिए, जो लड़े दीन के हेत,
पुरजा-पुरजा कट मरे, कबहुँ न छांड़े खेत।

संचालित हो रहा है, उस महल का निर्माण किसने करवाया था?

उत्तर : महाराणा फतह सिंह जी ने।

प्रश्न : 1907 ई. में फतह प्रकाश महल महाराणा फतह सिंह जी द्वारा कितनी राशि में बनवाया गया?

उत्तर : छह लाख रुपये में।

प्रश्न : सातबीस देवरी में मुख्य मंदिर मंडप के वितान में सुंदर अलंकरण के साथ कितनी नर्तकियों को अंकित किया गया है?

उत्तर : सोलह।

प्रश्न : चित्तौड़गढ़ दुर्ग में योद्धा के रूप में सुरसुंदरी एवं देवांगना आम्रलुंबिनी की मूर्तियाँ कहाँ लगी हुई हैं?

उत्तर : सातबीस देवरी मंदिर में।

प्रश्न : भगवान वराहावतार,नृसिंहावतार, भगवान विष्णु के त्रिविक्रम अवतार की मूर्तियाँ ताकों में कहाँ लगी हुई हैं?

उत्तर : कुंभश्याम मंदिर(चित्तौड़गढ़)।

प्रश्न : चित्तौड़गढ़ दुर्ग में भगवान कृष्ण का लीलापट एवं भगवान शिव-पार्वती विवाह की मूर्तियाँ कहाँ पर स्थित हैं?

उत्तर : कुंभश्याम मंदिर में।

प्रश्न : भगवान हरिहर एवं भगवान लकुलिश, अर्धनारीश्वर की मूर्तियाँ कहाँ पर स्थित हैं?

उत्तर : कुंभश्याम मंदिर की बाहरी दीवार पर।

प्रश्न : महाराणा कुंभा ने कुंभश्याम के मंदिर कहाँ-कहाँ पर बनवाये?

उत्तर : पहला चित्तौड़गढ़, दूसरा कुंभलगढ़ और तीसरा अचलगढ़ में।

प्रश्न : चित्तौड़गढ़ दुर्ग में एक विशेष मानव आकृति बनी हुई है जिसके एक सिर

तीर भाल और खाग सा भड़ अणगिण महाराण।
ढालाँ हारी जिण जगांह, सिर मांड्यो मखवाण॥

और पाँच धड़ हैं, यह कहाँ पर बनी हुई है?

उत्तर : संत रविदास की छतरी के गुंबद के नीचे।

प्रश्न : चित्तौड़गढ़ दुर्ग में घी-तेल की बावड़ी का निर्माण कहाँ पर हुआ था?

उत्तर : कुंभश्याम मंदिर के पीछे।

प्रश्न : चित्तौड़गढ़ दुर्ग में वैद्यनाथ की मूर्ति कहाँ पर स्थित है?

उत्तर : जटाशंकर महादेव मंदिर के पृष्ठ भाग में।

प्रश्न : चित्तौड़गढ़ दुर्ग में भगवान विष्णु के रूप भगवान जनार्दन की मूर्ति कहाँ लगी हुई है?

उत्तर : विजयस्तंभ के मुख्य द्वार के अंदर।

प्रश्न : चित्तौड़गढ़ दुर्ग में दिग्पाल वरुण की सपत्नीक भव्य मूर्ति कहाँ पर बनी हुई है?

उत्तर : विजयस्तंभ की दूसरी मंजिल के पश्चिम दिशा में।

प्रश्न : चित्तौड़गढ़ दुर्ग में दिग्पाल वायु की सपत्नीक मूर्ति कहाँ पर बनी हुई है?

उत्तर : विजयस्तंभ की दूसरी मंजिल के उत्तर दिशा में।

प्रश्न : चित्तौड़गढ़ दुर्ग में महाभैरव एवं चिंतामणि गणेश की मूर्ति कहाँ पर स्थित है?

उत्तर : विजयस्तंभ की चतुर्थ मंजिल के दक्षिण दिशा में।

प्रश्न : चित्तौड़गढ़ दुर्ग में सहस्त्र दल कमल कहाँ बना हुआ है?

उत्तर : विजयस्तंभ की पाँचवी मंजिल पर।

प्रश्न : चित्तौड़गढ़ दुर्ग में विष्णु की विश्वरूप मूर्ति कहाँ पर स्थित है?

उत्तर : विजयस्तंभ के पास विष्णु मंदिर की बाहरी दीवार पर।

प्रश्न : चित्तौड़गढ़ दुर्ग में महासती स्थल के द्वार किसने बनवाए थे?

मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर देना तुम फेंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जावें वीर अनेक॥

उत्तर : महारावल समर सिंह जी ने।

प्रश्न : चित्तौड़गढ़ दुर्ग में बैलगाड़ी, राजा द्वारा शेर का शिकार, मरणासन्न राजसी महिला की चित्र वल्लरी किस मंदिर के बाहरी भाग पर बनी हुई है?

उत्तर : समिद्धेश्वर-मंदिर।

प्रश्न : कुंभा महल से गौमुख कुंड तक एक गुफा आती है, उसका नाम क्या है?

उत्तर : रानी गुफा।

प्रश्न : चित्तौड़ दुर्ग में राव जयमल राठौड़ की हवेली कहाँ स्थित है?

उत्तर : रावत पता जी की हवेली के पीछे।

प्रश्न : चित्तौड़ दुर्ग में अष्ट दिग्पाल की मूर्तियाँ एक मंदिर के गर्भगृह के चारों तरफ बनी हुई है उस मंदिर का क्या नाम है?

उत्तर : कालिका माता मंदिर।

प्रश्न : महाराणा कुंभा ने सारंगपुर के युद्ध में मालवा के सुल्तान महमूद खिलजी को परास्त करके चित्तौड़ दुर्ग में कहाँ पर कैद कर रखा?

उत्तर : बादशाह की भाक्सी में।

प्रश्न : महाराणा सांगा की रानी जवाहर बाई राठौड़ तीसरे साके में युद्ध में जहां वीरगति को प्राप्त हुई वह स्थान चित्तौड़ दुर्ग पर कहाँ है?

उत्तर : बिकाखोह।

प्रश्न : चित्तौड़ दुर्ग में अप्सरा ढोलक वादिनी, उष्ट्रवाहिनी पत्रलेखा, अप्सरा पुत्र वल्लभा की मूर्तियाँ कहाँ बनी हुई हैं?

उत्तर : अद्भुतजी के मंदिर के पृष्ठ भाग पर।

प्रश्न : चित्तौड़ दुर्ग में महालक्ष्मी माता की वार्षिक पूजा कब की जाती है?

उत्तर : दीपावली के दिन।

सहणी सबरी हूँ सखी, दो उर उलटी दाह।
दूध लजाणौ पूत सम, बलय लजाणौ नाह।।

प्रश्न : जैनकीर्ति स्तंभ में चारों दिशाओं में किसकी भव्य मूर्तियाँ बनी हुई हैं?

उत्तर : भगवान आदिनाथ।

प्रश्न : चित्तौड़ दुर्ग में भगवान विष्णु का वामन अवतार एवं अप्सरा अलसा की सुंदर मूर्तियाँ कहाँ स्थित हैं?

उत्तर : महावीर मंदिर में।

प्रश्न : चित्तौड़ दुर्ग में सप्तमातृका पट्ट एवं नवग्रह पट्ट कहाँ पर बने हुए हैं?

उत्तर : रतन सिंह महल के पास रत्नेश्वर तालाब की पश्चिमी दीवार पर।

प्रश्न : विजयस्तंभ के निर्माण में कुल कितना खर्चा आया?

उत्तर : 90 लाख रुपए।

प्रश्न : भारतीय मूर्ति कला का विश्वकोश चित्तौड़ दुर्ग की किस इमारत को कहा गया है?

उत्तर : विजयस्तंभ।

प्रश्न : विजयस्तंभ विश्वभर में किस नाम से प्रसिद्ध है?

उत्तर : टावर ऑफ विक्ट्री।

प्रश्न : चित्तौड़ दुर्ग में विजयस्तंभ के समीप स्थित झालाओं की हवेली का क्या नाम है?

उत्तर : काला महल।

प्रश्न : चित्तौड़ में रक्तपात का नाला, बरसाती नाले की भाँति बहकर मुख्य द्वार तक आया जिसमें एक पाड़ा नीचे तक बहता हुआ आ गया जिसकी स्मृति में प्रथम द्वार का नाम पाडनपोल रखा गया। यह घटना किस युद्ध के समय घटित हुई मानी जाती है?

उत्तर : 1535 ई. गुजरात के बहादुरशाह के आक्रमण के समय।

हूँ बलिहारी राणियां, जाया वंस छतीस ।
सेर सलूणो चूण ले, सीस करै बगसीस॥

प्रश्न : आक्रांताओं के भय से स्त्रियों ने अपने बच्चों को अफीम खिलाकर तालाबों और कुण्डों में फेंक दिया था, बाद में लगभग 300 बालकों के शव तालाबों व बावड़ियों में से जाल डाल कर निकाले गये। यह घटना किस जौहर के समय की है?

उत्तर : दूसरा जौहर 1535 ई. ।

प्रश्न : चित्तौड़ दुर्ग में हुए प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय जोहर में कितनी वीरांगनाओं ने जौहर किया था?

उत्तर : क्रमश: सोलह हजार, तेरह हजार और सात हजार वीरांगनाओं ने ।

प्रश्न : 'ऊभदिवट' जिस पर बादशाह अकबर ने चित्तौड़ आक्रमण के समय बहुत बड़ा दीपक जलाकर मुगल सेना के लिए प्रकाश की व्यवस्था की थी, किस ग्राम में स्थित है?

उत्तर : नगरी ।

प्रश्न : चित्तौड़गढ़ दुर्ग में उत्तरी द्वार लाखोटा बारी के पास किस देवता का स्थान है?

उत्तर : सकस बावजी ।

प्रश्न : चित्तौड़ दुर्ग में महाभारत काल में भीम द्वारा स्थापित शिवलिंग वर्तमान में किस नाम से प्रसिद्ध है?

उत्तर : नीलकंठ महादेव ।

प्रश्न : चित्तौड़ दुर्ग पर बाटक्या भैरुजी का देवरा किस पोल के पास है?

उत्तर : सूरजपोल से नीचे उतरते समय 200 मीटर नीचे ।

प्रश्न : चित्तौड़ दुर्ग में जहाँ बीलू भील ने अपने अँगूठे के रक्त से बप्पा रावल का राज्याभिषेक किया था वह राजटीला नामक स्थान किस सरोवर के पास स्थित है?

उत्तर : चित्रंग तालाब ।

मैं झुकूं कियां ? है आण मनैं, कुळ रा केसरिया बानां री ।
मैं बुझूं कियां ? हूं सेस लपट, आजादी रै परवानां री॥

प्रश्न : चित्तौड़ दुर्ग पर मृगवन में स्थित छोटा तालाब जो वन्य जीवों के पानी पीने के उपयोग में आता है, उसका क्या नाम है?

उत्तर : दूध तलाई।

प्रश्न : चित्तौड़ दुर्ग में गुप्तेश्वर मंदिर कहाँ बना हुआ है?

उत्तर : मृगवन के प्रवेश द्वार के सामने।

प्रश्न : चित्तौड़ दुर्ग पर चित्रंग तालाब के पास स्थित राजटीले के दाहिनीं ओर एक गहरा गर्त है वह किस नाम से जाना जाता है?

उत्तर : रक्ततलाई।

प्रश्न : चित्तौड़ दुर्ग में राजटीले से उत्तर की ओर आते समय सड़क के पश्चिमी किनारे पर दो गुमटे(गुम्बज) दिखाई देते हैं, उन्हें क्या कहा जाता है?

उत्तर : गौरा-बादल के गुमटे।

प्रश्न : चित्तौड़ दुर्ग पर गाड़िया लौहारों का पूजा स्थल गाड़िया देवरा किस तालाब के पास स्थित है?

उत्तर : चित्रांग (चतरंग) तालाब।

प्रश्न : चित्तौड़गढ़ दुर्ग पर स्थित वह स्थान जहाँ प्राचीन काल में सैन्य प्रशिक्षण, घोड़ा दौड़ एवं खेल गतिविधियाँ संपन्न होती थी, किस नाम से जाना जाता है?

उत्तर : चौगानिया।

प्रश्न : चित्तौड़ दुर्ग पर प्राचीन शस्त्रागार कहाँ स्थित है?

उत्तर : चौगानिया के पास।

प्रश्न : चित्तौड़ दुर्ग पर पद्मिनी महल से दक्षिण की ओर कुछ ही दूरी पर सड़क के दाएँ किनारे बने महल किस नाम से जाने जाते हैं?

उत्तर : रामपुरा-बूंदी की हवेली।

मेवाड़ धधकतो अंगारो, आंध्यां में चमचम चमकै लो ।
कड़खै री उठती तानां पर, पग पग पर खांडो खड़कैलो॥

प्रश्न : चित्तौड़ दुर्ग पर पद्मिनी महल के दक्षिण-पूर्व में कुछ खंडहर दिखाई देते हैं, उनका नाम क्या है?

उत्तर : खातण राणी का महल (महाराणा खेता की पासवान करमेती खाती के महल)

प्रश्न : मेवाड़ के भीष्म रावत चूण्डा की हवेली कहाँ स्थित है?

उत्तर : कालिका माता के ठीक दक्षिण में।

प्रश्न : चित्तौड़ दुर्ग पर कालिका माता मंदिर के दक्षिण-पूर्व में सुकारिया तालाब के बीच किस देवी का मंदिर है?

उत्तर : क्षेमकरी देवी मंदिर।

प्रश्न : चित्तौड़ दुर्ग पर कालिका माता मंदिर(प्राचीन सूर्यमंदिर) के सामने स्थित कुंड जिसके बारे में लोक मान्यता है कि संकट के समय यहाँ से चित्तौड़ की रक्षा के लिए सशस्त्र अश्वारोही निकला करता था और शत्रुओं का नाश करता था, उस कुंड क्या नाम है?

उत्तर : सूरज कुंड।

प्रश्न : चित्तौड़ में चित्तौड़ी आठम का मेला कब भरता है?

उत्तर : वैशाख शुक्ला अष्टमी, प्रतिवर्ष।

प्रश्न : चित्तौड़ दुर्ग स्थित कालिका माता मंदिर में किस-किस की मूर्तियाँ हैं?

उत्तर : कालिका माता, अम्बा माता, भैरुजी और गणेश जी।

प्रश्न : चित्तौड़ दुर्ग में स्थित प्राचीन सूर्यमंदिर(वर्तमान कालिका माता मंदिर) जिसका निर्माण 8 वीं सदी में बप्पा रावल ने करवाया था और अल्लाउद्दीन खिलजी ने 1303 ई. में तोड़ दिया, उसमें कालिका माता की मूर्ति की स्थापना किसने करवाई थी?

उत्तर : महाराणा हम्मीर।

हर अरावली की चोटी पर, सिकता के सरित करारों में ।
मैं ढूँढ़ रहा वह पगड़ी, जो झुकी नहीं दरबारों में॥

प्रश्न: चित्तौड़ दुर्ग पर 1568 ई. के शाके के महान बलिदानी योद्धा राव जयमल और रावत पत्ता के महल कहाँ बने हुए हैं?

उत्तर : कालिका माता मंदिर जाते समय मंदिर के ठीक पहले सड़क के दायीं ओर जयमल-पत्ता तालाब के सामने।

प्रश्न: चित्तौड़ दुर्ग पर राज परिवार का श्मशान स्थल 'महासती स्थल/जौहर स्थल कहाँ पर है?

उत्तर: विजयस्तंभ और समिद्धेश्वर मंदिर के मध्य।

प्रश्न: चित्तौड़ दुर्ग पर चारभुजानाथ मंदिर से दक्षिण में स्थित बावड़ी 'भीमगोड़ी' के पास स्थित सिसोदिया राजकुल के भैरुजी किस नाम से प्रसिद्ध है?

उत्तर: चित्तौडिया भैरुजी।

प्रश्न: चित्तौड़ दुर्ग पर फतह प्रकाश महल के सामने व बड़ी पोल से उत्तर की ओर सड़क के बाएँ किनारे दिखाई देने वाले प्राचीन खंडहर क्या कहलाते हैं?

उत्तर: मोती व रतन बाजार।

प्रश्न: चित्तौड़ दुर्ग पर महाराणा सांगा के इष्ट देव देवनारायण का मंदिर कहाँ स्थित है?

उत्तर: कुंभा महल के समीप।

हरावल दस्ते में लड़ने के लिए ऊँटाला दुर्ग में शक्तावत एवं चुंडावत सरदार शौर्य प्रदर्शन करते हुए

दिवेर युद्ध में कुँवर अमर सिंह के भाले से मरणासन्न सुल्तान खान

6. मेवाड़ : कला-संस्कृति-साहित्य एवं भूगोल

प्रश्न : मेवाड़ (राजस्थान) में बिना मुहुर्त के विवाह सम्पन्न होते है, ऐसी तिथि कौनसी है?

उत्तर : आखातीज (वैशाख शुक्ल तृतीया)।

प्रश्न : मेवाड़ की लोक संस्कृति की प्रतीक गवरी-शिव तथा भष्मासुर की नृत्य नाटिका कौनसा समुदाय करता है?

उत्तर : भील समुदाय।

प्रश्न : मेवाड़ में गवरी नृत्य कब खेला जाता है?

उत्तर : गवरी प्रति वर्ष रक्षाबन्धन के दूसरे दिन(ठण्डी राखी) से डोकरी नवमी (श्राद्ध पक्ष की नवमी अर्थात सवा महिने पर्यन्त) प्रतिदिन लोकमंचों पर प्रस्तुत किया जाता है।

प्रश्न : गवरी(राई) नृत्य में महिला एवं पुरुष में से कौन भाग ले सकता है?

उत्तर : केवल पुरुष।

प्रश्न : गवरी में मुख्य रूप से कौनसे वाद्य यंत्रों का प्रयोग किया जाता है?

उत्तर : मांदळ और थाली।

प्रश्न : गवरी में मांदळ बजाने वाला जादू-टोना, तंत्र-मंत्र-मूठ का बड़ा जानकार होता है, पूरी गवरी को सभी प्रकार के अनिष्ठों से बचाये रखता है, इसका नाम क्या होता है?

उत्तर : मांदल्या।

प्रश्न : गवरी में मुख्य पात्र के मुखोटे पर बड़ी-बड़ी मूछें व बड़े-बड़े डरावने दांत रहते है, सिर पर गमछा वस्त्र बंधा रहता है, यह गवरी में बाकी पात्रों से उल्टी दिशा में चलता है, इसका नाम क्या होता है?

हम भारत के भरत खेलते, शेरों की संतान से।
कोई देश नहीं दुनिया में, बढ़कर हिन्दुस्तान से ।।

उत्तर : राई बुढ़िया।

प्रश्न : मेवाड़ में होली के अवसर पर किया जाने वाला नृत्य क्या कहलाता है?

उत्तर : गैर नृत्य।

प्रश्न : भीलों के गाँव के मुखिया को किस नाम से जाना जाता है?

उत्तर : गमेती।

प्रश्न : राजसमंद जिले का मोलेला गाँव किस कला के लिए विश्व प्रसिद्ध है?

उत्तर : टेराकोटा(मिट्टी की मूर्तियों बनाने की कला)

प्रश्न : लकड़ी के आठ-दस पाटों पर चित्रित धार्मिक और ऐतिहासिक लोककला जो कावड़ कला के नाम से प्रसिद्ध है, इसका निर्माण कहाँ होता है?

उत्तर : बस्सी(चित्तौडगढ़)।

प्रश्न : मानसी वाकल एवं साबरमती नदियों का उद्गम स्थल कहाँ है?

उत्तर : फुलवारी की नाल (उदयपुर)।

प्रश्न : दिवेर का दर्रा किस जिले में स्थित है?

उत्तर : राजसमंद।

प्रश्न : उड़न गिलहरी कौन-से अभयारण्य में पाई जाती है?

उत्तर : सीतामाता वन्यजीव अभयारण्य।

प्रश्न : बनास नदी का उद्गम स्थल कहाँ से है?

उत्तर : खमनोर की पहाड़ियों से(राजसमंद)।

प्रश्न : मेवाड़ की पहाड़ियों को स्थानीय भाषा में क्या कहा जाता है?

उत्तर : मंगरा।

प्रश्न : उदयपुर के चारों तरफ तस्तरीनुमा पहाड़ियों क्या कहलाती हैं?

इस मिट्टी में पैदा होना, बड़े गर्व की बात है।
साहस और वीरता, अपने पुरखों की सौगात है ।।

उत्तर : गिरवाँ।

प्रश्न : कुम्भलगढ़ दुर्ग की दीवार, जिसको विश्व की दूसरे नम्बर की दीवार के रूप में जाना जाता है, उसकी लम्बाई कितनी है?

उत्तर : 36 कि. मी.।

प्रश्न : रणकपुर के जैन मन्दिर में कितने स्तम्भ हैं?

उत्तर : 1444 स्तम्भ।

प्रश्न : भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में अभिनव भारत समिति, जिसका उद्देश्य सशस्त्र क्रान्ति द्वारा देश को स्वतन्त्र कराना था के सदस्यों को शपथ लेने कहा आना पड़ता था?

उत्तर : विजयस्तम्भ के नीचे (चित्तौडगढ़)।

प्रश्न : महात्मा भूरी बाई का जन्म 1892 ई. में माता केसर बाई की कोख से गाँव सरदारगढ़ राजसमंद में हुआ, इनके पिता का क्या नाम था?

उत्तर : रुपाजी सुथार।

प्रश्न : मेवाड़ में पट्टों व परवानों पर श्री एकलिंगजी री आण है, चित्तौड़ मारया रो पाप है की बातें अवश्य ही लिखी जाती है, इससे क्या अभिप्राय है?

उत्तर : मेवाड़ की जनता को चित्तौड दुर्ग में निर्दोष लोगों की आक्रांताओं द्वारा की गई हत्या याद रहे।

प्रश्न : चित्तौडगढ़ के पास में बहने वाली गम्भीरी का उद्गम स्थान कहाँ से है?

उत्तर : मध्यप्रदेश में जावद की पहाड़ियों से।

प्रश्न : बनास नदी का उद्गम स्थल कहाँ से है?

उत्तर : कुंभलगढ़ के पास खमनोर की पहाड़ियों में स्थित वेरों का मठ नामक स्थान से।

वीर धरा रजथान री, सूरां मैं सिर मौड़।
हल्दी घाटी घाटियाँ, गढ़ा सूँ गढ़ चित्तौड़ ।।

प्रश्न : बेडच नदी का निकास व बहाव क्षेत्र कौनसा है?

उत्तर : उदयपुर के निकट गोगूंदा की पहाडियों से निकलकर प्रारम्भ में आयड़ फिर उदयसागर का नाला और अन्त में बेड़च इन तीन नामों से प्रसिद्ध यह नदी 200 कि. मी बहने के बाद भीलवाड़ा के बीगोद कस्बे के समीप बनास एवं मैनाली नदी में मिलकर त्रिवेणी संगम का निर्माण करती है।

प्रश्न : मेवाड़ में वृक्षों के देवत्व रूप का बोध है, इसलिए वृक्ष न काटकर दिसम्बर से फरवरी माह के बीच डालियों की छटनी की जाती है, जिससे जलाऊ लकड़ी प्राप्त करते हैं, छटनी किये हुए वृक्ष पुनः मार्च-अप्रैल तक घेरदार हो जाते हैं, वृक्ष की छटनी करने को क्या कहते हैं?

उत्तर : छंगाई करना।

प्रश्न : मेवाड़ में वस्त्रनगरी के रूप में विख्यात नगर कौनसा है?

उत्तर : भीलवाड़ा।

प्रश्न : महाराणा राजसिंह ने अपनी रानी के कहने पर गणगौर का अतिरिक्त उत्सव वैशाख कृष्ण तृतीया को मनाना प्रारंभ किया था, उसका क्या नाम है?

उत्तर : धींगा गणगौर।

प्रश्न : मेवाड़ की वह कला जिसमें काँच पर सोने के बारीक जालीदार काम द्वारा राधा-कृष्ण, रामायण और प्रकृति के दृश्यों को दर्शाया जाता है, क्या कहलाती है?

उत्तर : थेवा कला।

प्रश्न : थेवा कला कहाँ की प्रसिद्ध है?

उत्तर : प्रतापगढ़(राजस्थान)।

प्रश्न : राजस्थान के चित्तौड़गढ़ जिले के आकोला गाँव की हस्त-ब्लॉक प्रिंटिंग

बल बंको रण बंकड़ौ, सूर-सती सिर मौड़ ।
प्रण बंकौ प्रबली धरा, चंगो गढ़ चित्तौड़ ।।

कला विश्व प्रसिद्ध है, जिसे प्राकृतिक रंगों(जैसे लाल और काले) का उपयोग करके मिट्टी की मदद से की जाती है, क्या कहलाती है?

उत्तर : दाबू प्रिंट।

प्रश्न : मेवाड़ का हरिद्वार किसे कहा जाता है?

उत्तर : मातृकुंडिया।

प्रश्न : मेवाड़ में भगवान परशुराम जी का पेनोरमा कहाँ बना हुआ है?

उत्तर : मातृकुंडिया।

प्रश्न : मेवाड़ में विश्व प्रसिद्ध मंदिर साँवरिया धाम कहाँ बना हुआ है?

उत्तर : चित्तौड़ से लगभग 40 कि.मी. पश्चिम में मंडफिया ग्राम में।

प्रश्न : मेवाड़ के किस अभयारण्य में उड़न गिलहरी पायी जाती है?

उत्तर : सीतामाता अभयारण्य में।

प्रश्न : मेवाड़ में प्रचलित सिक्कों के नाम क्या थे?

उत्तर : चित्तौड़ी, चांदोडी, स्वरुपशाही, ढींगला,त्रिशूलिया, भिलाड़ी।

प्रश्न : अरावली पर्वतमाला किन राज्यों में है व इसकी लम्बाई कितनी है?

उत्तर : यह पर्वतमाला गुजरात, राजस्थान, हरियाणा और केन्द्र शासित प्रदेश दिल्ली में है व इसकी कुल लम्बाई 692 कि. मी. है।

प्रश्न : मेवाड़ में बहने वाली नदियों के नाम क्या है?

उत्तर : बेड़च, वाकल, सोम, जाखम, साबरमती, मानसी, गोमती, बनास, ब्रामणी, वागन, औराई, गम्भीरी, वारदा, कोठारी, मैनाली, खारी, चन्द्रभागा, कदमाली आदि।

प्रश्न : मेजा बाँध किस नदी पर स्थित है?

उत्तर : कोठारी नदी पर।

नारी रक्षा में उठी तेग, भीषण विप्लव से नहीं रुकी।
केसरिया अग्नि गर्भा कृपाण, लाखों मुगलों से नहीं झुकी ।।

प्रश्न : मेवाड़ का ऊपरमाल किसे कहते हैं?

उत्तर : मेवाड़ की अरावली पर्वत शृंखला जो मांडलगढ़, बिजोलिया, भैंसरोड़गढ है, इसकी समुद्रतल से ऊँचाई 2000 फीट है इसी ऊपरमाल में मेनाल का झरना 200 फीट ऊँचाई से बड़े वेग के साथ पहाड़ों से गिरता है।

प्रश्न : चित्तौड़ आक्रमण के दौरान बादशाह अकबर ने सैन्य शिविर कहाँ बनाया?

उत्तर : नगरी।

प्रश्न : 'ऐतिहासिक गढ़ चित्तौडगढ़' काव्य रचना किसकी हैं?

उत्तर : कवि उम्मेद सिंहजी राठौड़ की।

प्रश्न : जौहर और हल्दीघाटी महाकाव्य किसकी रचनाएँ हैं?

उत्तर : श्याम नारायण पाण्डेय की।

प्रश्न : 'चित्तौड़ की चिता' किसकी काव्य रचना है?

उत्तर : रामकुमार वर्मा।

प्रश्न : माँ पन्नाधाय के चंदन के बलिदान से संबंधित 'दीपदान' एकांकी किसकी रचना है?

उत्तर : रामकुमार वर्मा की।

प्रश्न : 'चत्रगढ़ हेला देय' काव्य रचना किसकी है?

उत्तर : प्रो. देवकरण सिंह रूपाहेली की।

प्रश्न : 'चित्तौड़ दुर्ग दीवानों का' खंड काव्य के रचनाकार कौन हैं?

उत्तर : कवि मन्ना लाल परदेशी।

प्रश्न : नैणसी की ख्यात में गुहिलों की कितनी शाखाओं का उल्लेख किया है?

उत्तर : चौबीस।

प्रश्न : कविराज श्यामलदास ने गुहिलों की कितनी शाखाएँ बताई?

बादल बारह बरस रो, लड़ियो लाखां साथ।
सारी दुनिया देखियो, वो खाण्डो वै हाथ॥

उत्तर : छत्तीस।

प्रश्न : चित्तौड़ पर उलाउद्दीन खिलजी के आक्रमण के समय प्रसिद्ध इतिहासकार अमीर खुसरो साथ था, उसने इस आक्रमण का वर्णन किस पुस्तक में किया?

उत्तर : खजाइन-उल-फुतूह में।

प्रश्न : सीसारमा गाँव में वैद्यनाथ का विशाल मंदिर किसने बनवाया?

उत्तर : महाराणा संग्राम सिंह द्वितीय।

प्रश्न : जोधपुर के राजा अजीतसिंह द्वारा वीर दुर्गादास राठौड़ को मारवाड़ से निकाले जाने पर मेवाड़ के किस शासक ने दुर्गादास को शरण देकर विजयपुर की जागीर दी एवं फिर रामपुरा का हाकिम नियुक्त किया?

उत्तर : महाराणा संग्राम सिंह द्वितीय।

प्रश्न : मेवाड़ के किस महाराणा ने अपने राज्य में सर्वप्रथम कन्यावध निषेध, डाकन प्रथा पर रोक, सती प्रथा पर रोक, समाधि प्रथा पर रोक हेतु आदेश जारी किए?

उत्तर : महाराणा स्वरूप सिंह।

प्रश्न : "उनकी विचित्र और भव्य बनावट का यथावत् वर्णन करना लेखनी की शक्ति से बाहर है, मानो हुनर का खजाना खाली कर दिया गया है।" कर्नल टॉड का यह कथन किस मंदिर समूह के लिए हैं?

उत्तर : बाडोली के मंदिर समूह के लिए(ये रावतभाटा के पास ब्राह्मणी एवं चंबल नदी के संगम पर स्थित हैं)।

प्रश्न : अंबिका माता मंदिर कहाँ स्थित है?

उत्तर : जगत(मेवाड़ का खजुराहो माना जाता है जो उदयपुर से 55 किमी.दूर स्थित है)

प्रश्न : चित्तौड़ का कुंभ स्वामी मंदिर किस देवता को समर्पित हैं?

होतो नह मेवाड़ तौ, होती नह हिन्दवाण ।
खांडो कदै न खड़कतौ, भारत छिपतो भाण ।।

उत्तर : भगवान विष्णु।

प्रश्न : नाथद्वारा मंदिर में श्रीनाथजी के स्वरूप के पीछे सज्जा के लिए बड़े आकार के कपड़े के पर्दे पर बनाए गए चित्र किस नाम से जाने जाते हैं?

उत्तर : पिछवाइयाँ।

प्रश्न : नारायण, चतुर्भुज, घासीराम, उदयराम आदि चित्रकार किस चित्रशैली से संबंधित हैं?

उत्तर : नाथद्वारा।

प्रश्न : हीरानंद, साहिबदीन, मनोहर, जगन्नाथ, कमलचंद्र, धनसार आदि चित्रकार किस चित्र शैली के चित्रकार हैं?

उत्तर : मेवाड़ चित्र शैली।

प्रश्न : कलीला-दमना क्या हैं?

उत्तर : मेवाड़ चित्रशैली की कहानी के दो पात्र।

प्रश्न : उदयपुर के राजमहलों में स्थित चितेरों की ओवरी का निर्माण किसने करवाया था?

उत्तर : महाराणा जगतसिंह ने।

प्रश्न : लकड़ी से निर्मित सिंहासन जिस पर ठाकुर जी की मूर्ति को श्रृंगारित करके बैठाया जाता है और देव झूलनी एकादशी पर झाँकी निकाली जाती है, उसे मेवाड़ में क्या कहा जाता है?

उत्तर : बेवाण।

प्रश्न : कौन-सा नृत्य भीलों द्वारा होली के तीसरे दिन किया जाता है?

उत्तर : नेजा।

प्रश्न : चित्तौड़, निंबाहेड़ा और घोसूण्डा में लोकप्रिय तुर्रा-कलंगी ख्याल में तुर्रा

है अमित सामर्थ्य मुझमें, याचना मैं क्यों करूँगा ?
रुद्र हूँ विष छोड़ मधु की कामना मैं क्यों करूँगा ?

और कलंगी किसके प्रतीक हैं?

उत्तर : तुर्रा शिव और कलंगी पार्वती का प्रतीक माना जाता है

प्रश्न : एक मात्र लोक देवी जो बिना पति के सती हुई थी, जिसका मंदिर राजसमंद झील की पाल पर स्थित है उसका क्या नाम है?

उत्तर : घेवर माता।

प्रश्न : आदिनाथजी/ऋषभ देवजी/केसरियानाथजी/कालाजी/धुलैव देवजी का मंदिर कहाँ स्थित है?

उत्तर : उदयपुर के धुलैव स्थान पर।

प्रश्न : मेवाड़ी भाषा में योगसूत्र, भगवद्गीता एवं सांख्यकारिका ग्रंथों की रचना किसने की?

उत्तर : संत कवि महाराज चतुरसिंह जी (बावजी चतुरसिंह जी)।

प्रश्न : राजविलास ग्रंथ जिसमें महाराणा राजसिंह की उपलब्धियों का वर्णन है की रचना किसने की?

उत्तर : मानकवि।

प्रश्न : मेवाड़ के गौरवशाली इतिहास वर्णन करने वाले इतिहास ग्रंथ 'वीर विनोद' के प्रणेता कौन हैं?

उत्तर : कविराजा श्यामलदास।

प्रश्न : महाराणा प्रताप के छोटे भाई शक्ति सिंह के चरित्र का वर्णन करने वाले डिंगल भाषा के ग्रंथ सगत रासो के रचनाकार कौन हैं?

उत्तर : गिरधर आसिया।

प्रश्न : राजस्थान का कश्मीर, सैलानियों का स्वर्ग, पूर्व का वेनिस, झीलों की नगरी, फाउंटेन व माउंटेन का शहर किसे कहा जाता है?

वह जीवन भी क्या जीवन है, जो काम देश के आ न सका ।
वह चंदन भी क्या चंदन है, जो अपना वन महका न सका॥

उत्तर: उदयपुर।

प्रश्न: उदयपुर में स्थित सौर वैधशाला में देश की सबसे बड़ी बहुउपयोगी सौर दूरबीन(मस्ट) का उद्घाटन कब किया गया?

उत्तर: 4 अगस्त, 2015 ई.।

प्रश्न: देश का पहला तथा एकमात्र वर्जुअल फिश एक्वेरियम उदयपुर की किस झील की पाल पर स्थित हैं?

उत्तर: फतहसागर झील।

प्रश्न: उदयपुर में स्थित वह संस्था जो लोक कलाओं, प्रदर्शनोपयोगी लोक कलाओं एवं पुतलियों के शोध, सर्वेक्षण, प्रशिक्षण एवं लोक कलाओं का प्रचार-प्रसार करती है, कौनसी है?

उत्तर: भारतीय लोक कला मण्डल (उदयपुर)।

प्रश्न: पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र का मुख्यालय कहाँ स्थित है?

उत्तर: उदयपुर में पिछोला झील के किनारे बागोर हवेली में।

प्रश्न: हल्दीघाटी में महाराणा प्रताप संग्रहालय की स्थापना किसके द्वारा की गई?

उत्तर: श्री मोहन श्रीमाली।

प्रश्न: उदयपुर स्थित राजस्थान साहित्य अकादमी की स्थापना कब हुई?

उत्तर: 28 जनवरी, 1958 ई.।

प्रश्न: राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर का सर्वोच्च पुरस्कार कौन सा है?

उत्तर: मीरां पुरस्कार।

प्रश्न: साहित्यिक पत्रिका मधुमति किस संस्था द्वारा संपादित की जाती है?

उत्तर: राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर द्वारा।

प्रश्न: किसान आंदोलन का सूत्रपात कहाँ से माना जाता है?

बलिदानों की धरती यह, मीरां ने मिश्री सी घोली है।
इस मिट्टी से तिलक करो, यह कुंकुं चंदन रोली है॥

उत्तर : बिजोलिया(मेवाड़)।

प्रश्न : साधु सीताराम, विजय सिंह पथिक एवं रामनारायण चौधरी का संबंध किस किसान आंदोलन से हैं?

उत्तर : बिजोलिया किसान आंदोलन।

प्रश्न : शहीद रूपाजी-कृपाजी का संबंध किस किसान आंदोलन से है?

उत्तर : बेगूँ(चित्तौड़गढ़)।

प्रश्न : श्रीमती रमा देवी, अंजना देवी चौधरी, नारायण देवी वर्मा किस किसान आंदोलन से संबद्ध रही?

उत्तर : बिजोलिया।

प्रश्न : 30 मार्च, 1949 को वृहत् राजस्थान नामक संघ के महाराज प्रमुख किसे बनाया गया?

उत्तर : महाराणा भूपाल सिंह जी, उदयपुर को।

प्रश्न : 1857 की क्रांति के दौरान तांत्या टोपे को मेवाड़ के किस व्यक्ति ने रसद सामग्री उपलब्ध करवाई?

उत्तर : सलूंबर के रावत केसरी सिंह ने।

प्रश्न : स्वामी दयानंद सरस्वती ने 'सत्यार्थ प्रकाश' ग्रंथ की रचना कहाँ की?

उत्तर : उदयपुर के नवलखा महल में।

प्रश्न : बरेली जेल में अंग्रेजी जेलर (चार्ल्स क्लीवलैंड) द्वारा यातनाएं देने और साथियों के नाम उगलवाने के प्रयास पर कहा था कि, "मेरी मां रोती है तो रोने दो, मैं अपनी मां को हंसाने के लिए सैकड़ों माताओं को रुलाना (साथियों के नाम बताना) पसंद नहीं करूँगा"। मेवाड़ का वह क्रांतिकारी युवा कौन था?

निज पूर्वजों के सद्गुणों को यत्न से मन में धरो सब, आत्म-परिभव-भाव तज निज रुप का चिंतन करो।
निज पूर्वजों के सद्गुणों का गर्व जो रखती नहीं, वह जाति जीवित जातियों में रह नहीं सकती कहीं॥

उत्तर : प्रताप सिंह बारहठ (केसरी सिंह जी बारहठ का पुत्र)।

प्रश्न : मेवाड़ का वह क्रांतिकारी जिसे राजस्थान का चंद्रशेखर आजाद कहा जाता है, कौन है?

उत्तर : जोरावर सिंह (केसरी सिंह जी बारहठ का छोटा भाई)।

प्रश्न : "ऐसा बालक मैंने जीवन में नहीं देखा जो टूट गया पर झुका नहीं", प्रताप सिंह बारहठ के बारे में यह कथन किसका है?

उत्तर : बरेली जेल के ब्रिटिश अधिकारी क्लीवलैंड का।

प्रश्न : भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में पूरे परिवार को झौंक देने वाले मेवाड़ के क्रांतिकारी केसरी सिंह बारहठ कहाँ के रहने वाले थे?

उत्तर : मेवाड़ राज्य के क्षेत्र शाहपुरा के पास देवखेड़ा /देवपुरा ग्राम।

प्रश्न : आधुनिक तकनीक के माध्यम से मेवाड़ के गौरवशाली इतिहास और वीरता को प्रदर्शित करने वाला 'प्रताप गौरव केंद्र' कहाँ स्थित है?

उत्तर : उदयपुर में बड़गाँव की टाईगर हिल्स पर।

प्रश्न : मेवाड़ में शिल्पग्राम कहाँ स्थित है?

उत्तर : हवाला गाँव, उदयपुर में।

प्रश्न : मेवाड़ की राजधानियाँ कौन-कौन सी रही हैं?

उत्तर : नागदा, आहड़, चित्तौड़गढ़, गोगुंदा, कुंभलगढ़, चावंड, उदयपुर आदि।

प्रश्न : चित्तौड़ के पास स्थित आसावरा माताजी के बचपन का नाम क्या था?

उत्तर : केसर कँवर राठौड़।

प्रश्न : मेवाड़ के महाराणा ने अपनी बहन चांद कँवर के नाम पर कौन-से सिक्के चलाए?

उत्तर : चांदोड़ी।

किस भाँति जीना चाहिए, किस भाँति मरना चाहिए, वो सब हमें निज पूर्वजों से याद करना चाहिए।
पद-चिह्न उनके यत्नपूर्वक खोज लेना चाहिए, निज पूर्व-गौरव-दीप को बुझने न देना चाहिए॥

प्रश्न : 'एतिहासिक गढ़ चित्तौड़' काव्य रचना के रचनाकार कौन हैं?

उत्तर : ठा. उम्मेदसिंह जी राठौड़।

प्रश्न : 'ऊ यो ही चित्तौड़' काव्य रचना के रचनाकार कौन हैं?

उत्तर : केसरी सिंह जी बारहठ।

प्रश्न : 'चित्तौड़ एवं उदयपुर की गजल' काव्य रचना के रचनाकार कौन हैं?

उत्तर : खेतल मुनि।

प्रश्न : 'गोरा-बादल चउपई' काव्य रचना के रचनाकार कौन हैं?

उत्तर : जटमल नाहर।

प्रश्न : 'खुम्माण रासो ' काव्य रचना के रचनाकार कौन हैं?

उत्तर : दलपति विजय।

प्रश्न : 'चत्रगढ़ हेला देय' काव्य रचना के रचनाकार कौन हैं?

उत्तर : ठा. देवकर्ण सिंह जी राठौड़।

प्रश्न : 'अमर बेल बलिदान की' काव्य रचना के रचनाकार कौन हैं?

उत्तर : कविवर नरेंद्र मिश्र।

प्रश्न : 'चित्तौड की चिता' काव्य रचना के रचनाकार कौन हैं?

उत्तर : रामकुमार वर्मा।

प्रश्न : 'पद्मिनी चरित चौपई' काव्य रचना के रचनाकार कौन हैं?

उत्तर : लब्धोदय।

प्रश्न : 'जौहर' एवं 'हल्दीघाटी' काव्य रचना के रचनाकार कौन हैं?

उत्तर : कविराज श्याम नारायण पाण्डेय।

प्रश्न : 'गोरा-बादल चौपई' काव्य रचना के रचनाकार कौन हैं?

संसार की समरस्थली में धीरता धारण करो, चलते हुए निज इष्ट-पथ में संकटों से मत डरो।
जीते हुए भी मृतक-सम रह कर न केवल दिन भरो, वर वीर बन कर आप अपनी विघ्न-बाधाएँ हरो॥

उत्तर : हेमरतन।

प्रश्न : कुँवर उदयसिंह की रक्षार्थ पन्नाधाय द्वारा चंदन के बलिदान के कथानक पर आधारित 'राजमुकुट' नाट्य रचना के रचनाकार कौन हैं?

उत्तर : गोविंद वल्लभ पंत।

प्रश्न : 'प्रताप प्रतिज्ञा' नाट्य रचना के रचनाकार कौन हैं?

उत्तर : जगन्नाथ प्रसाद मिलिंद।

प्रश्न : 'महारानी पद्मावती' नाट्य रचना के रचनाकार कौन हैं?

उत्तर : राधाकृष्ण दास।

प्रश्न : ऊँटाला दुर्ग विजय के कथानक पर आधारित नाट्य रचना 'हिरोल' के रचनाकार कौन हैं?

उत्तर : शिव प्रसाद चारण।

प्रश्न : 'कीर्तिस्तंभ' एवं 'रक्षाबंधन' नाट्य रचना के रचनाकार कौन हैं?

उत्तर : हरिकृष्ण प्रेमी।

प्रश्न : मेवाड़ के भीष्म रावत चुंडा के चरित्र पर आधारित उपन्यास 'अमृत पुत्र' के रचनाकार कौन है?

उत्तर : आनंद शर्मा।

प्रश्न : औपन्यासिक रचना 'बप्पा रावल' के रचनाकार कौन है?

उत्तर : मनु शर्मा।

प्रश्न : मेवाड़ के उद्धारक महाराणा हमीर के कथानक पर आधारित उपन्यास 'खून का टीका' के रचनाकार कौन है?

उत्तर : यादवेंद्र शर्मा चंद्र।

प्रश्न : जौहर की राख से शिखर तक, दर्प, 'धरती का सूरज, महाराणा संग्राम सिंह,

वीरो! उठो, अब तो कुयश की कालिमा को मेट दो,निज देश को जीवन सहित तन, मन तथा धन भेंट दो।
रघु, राम, भीष्म तथा युधिष्ठिर-सम न हो जो ओज से, तो वीर विक्रम से बनें, विद्यानुरागी भोज-से॥

मेवाड़ का भीष्म, युग पुरुष महर्षि श्री हारीत आदि उपन्यासों के रचनाकार कौन हैं?

उत्तर : श्याम सुंदर भट्ट।

प्रश्न : 'चित्तौड़ की रानी पद्मिनी' ग्रंथ के रचनाकार कौन हैं?

उत्तर : राजेंद्र शंकर भट्ट।

प्रश्न : महाराणा प्रताप के जीवन पर आधारित उपन्यास 'महाराणा प्रताप' के रचनाकार कौन है?

उत्तर : सूर्यकांत त्रिपाठी निराला।

प्रश्न : महाराणा का महत्व एवं पेशोला की प्रतिध्वनि काव्य रचनाओं के रचनाकार कौन है?

उत्तर : जयशंकर प्रसाद।

प्रश्न : 'कालजयी मेवाड़' काव्य रचना के रचनाकार कौन है?

उत्तर : कविवर नरेंद्र मिश्र।

प्रश्न : 'मेवाड़ की कला और स्थापत्य' के रचनाकार कौन है?

उत्तर : राजशेखर व्यास।

प्रश्न : 'विश्व विरासत दुर्ग चित्तौड़' की रचनाकार कौन है?

उत्तर : डॉ. सुशीला लड्ढा।

प्रश्न : 'चित्तौड़ फाइल्स' के रचनाकार कौन है?

उत्तर : बाबा निरंजन नाथ।

प्रश्न : 'चंदन और उदय' बाल उपन्यास के रचनाकार कौन है?

उत्तर : शिवमृदुल।

प्रश्न : मेवाड़ की यशोगाथा को प्रदर्शित करता 'महाराणा सहस्त्र वर्षों का धर्मयुद्ध'

हम कौन थे, क्या हो गए हैं और क्या होंगे अभी ? आओ, विचारें आज मिलकर ये समस्याएँ सभी।
यद्यपि हमें इतिहास अपना प्राप्त पूरा है नहीं, हम कौन थे, इस ज्ञान को, फिर भी अधूरा है नहीं॥

ग्रंथ के रचनाकार कौन है?

उत्तर : डॉ. ओमेंद्र रत्नू।

प्रश्न : महाबलिदानी, धाय माँ पन्ना, महाराणा सांगा, महासती महारानी पद्मिनी जैसे ऐतिहासिक जीवनीपरक लघु पुस्तिकाओं के रचनाकार कौन है?

उत्तर : इतिहासकार डॉ. के. एस. गुप्ता।

प्रश्न : भक्त शिरोमणि मीरां बाई, मेवाड़ के अनमोल रत्न, हल्दीघाटी विजय युद्ध, महादानी भामाशाह जैसी ऐतिहासिक लघुपुस्तिकाओं के लेखक कौन है?

उत्तर : श्री ओमप्रकाश जी।

प्रश्न : चित्तौड़ दुर्ग के गौरवशाली इतिहास एवं उसके चप्पे-चप्पे को सचित्र दर्शाती पुस्तक 'राष्ट्रीय गौरव दुर्गराज चित्तौड़गढ़' के रचनाकार कौन है?

उत्तर : वीरेंद्रसिंह तलावदा।

प्रश्न : चित्तौड़ अपने आपमें वृत्तांत यहाँ, देशभक्ति का ज्वलंत दृष्टांत यहाँ।
जिनमें तनिक भी देशभक्ति उनके के लिए,
देशभक्ति का चित्तौड़ वेदांत यहाँ॥
वीरों की वसुंधरा का निचोड़ है ये, भक्ति की परंपरा में बेजोड़ है ये।
खंडित होकर भी अखंडित रहा ऐसा, स्वयंसिद्ध जग प्रसिद्ध चित्तौड़ है ये॥
उक्त काव्य पंक्तियाँ किस कवि की हैं ?

उत्तर : कैलाश त्रिपाठी आजाद('चित्तौड संदेश'रचना से)।

प्रश्न : इस एकलिंग की धरती पर धधकी है जौहर की ज्वाला,
शिव ने खोला है तीन बार वह नयन तीसरा विकराला,
चढ़ गयी चिता पर मातृ शक्ति वीरों ने केसरिया पहना,

पहनादी काल भैरवी को अगणित नरमुण्डों की माला।।

उक्त काव्य पंक्तियाँ किस कवि की है?

उत्तर : पं.नरेंद्र मिश्र।

प्रश्न : झोंक दिया तन झाल में, सतियाँ री सिरमोड़।

रंग पदमण धण राणियाँ, ऊ यो ही चित्तौड़॥

उक्त काव्य पंक्तियाँ किस कवि की है?

उत्तर : ठा. केसरी सिंह जी बारहठ।

प्रश्न : भूख न मेटे मेड़तो, न मेटे नागौर।

रजवट भूख अनोखड़ी, मिटे मरयां चित्तौड़॥

उक्त काव्य पंक्तियाँ किस योद्धा के विषय में हैं?

उत्तर : राव जयमल राठौड़ का अकबर को जवाब।

प्रश्न : हे गढ़ म्हारो हूँ धणी, असुर फिरै किम आण।

कूँची गढ़ चित्तौड़ री, दीवी मुज्झ दिवाण।।

1568 ई. में चित्तौड़ पर आक्रमण के समय बादशाह अकबर को यह जवाब किस योद्धा ने दिया था?

उत्तर : राव जयमल राठौड़

प्रश्न : मायड़ थारो वो पूत कठे?

वो एकलिंग दीवान कठे?

वो महाराणा प्रताप कठे?

उक्त काव्य पंक्तियाँ किस कवि द्वारा लिखी गई?

उत्तर : कवि माधव दरक।

भू-लोक का गौरव प्रकृति का पुण्य लीला-स्थल कहाँ ? फैला मनोहर गिरी हिमालय और गंगाजल जहाँ । सम्पूर्ण देशों से अधिक किस देश का उत्कर्ष है,उसका कि जो ऋषिभूमि है, वह कौन ? भारत वर्ष है॥

प्रश्न : तुरक कहासी मुख पतो, इण तन सूँ इकलिंग।
उगे जांही ऊगसी, प्राची बीच पतंग।।
खुसी हूँत पीथळ कमध, पटको मूँछा पाण।
पलटण है जेते पतो, कलमा सिर केवाण॥
उक्त काव्य पंक्तियाँ महाराणा प्रताप ने भ्रम मिटाने के लिए किसे लिख भिजवाई?

उत्तर : महाराज पृथ्वीराज राठौड़(बीकानेर)।

प्रश्न : इला न देणी आपणी, रण खेतां भिड़ जाय।
पूत सिखावे पालणे, मरण बड़ाई माय॥
उक्त पंक्तियाँ किस कवि की है?

उत्तर : सूर्यमल मिसण (वीर सतसई)।

प्रश्न : पग पग भम्या पहाड़, धरा छाँड़ राख्यो धरम।
ईंसूं महाराणा मेवाड़, हिरदे बसिया हिंद रै॥
उक्त पंक्तियाँ किस कवि की है?

उत्तर : केसरी सिंह जी बारहठ की।

प्रश्न : अकबर कुटिल अनीत, और बिटळ सिर आदरै।
रघुकुल उत्तम रीत, फळै राण प्रतापसी॥
उक्त पंक्तियाँ किस कवि की है?

उत्तर : दुरसा आढ़ा।

प्रश्न : राज मिलै सुख साज मिलै, महाराज असंभव हूँ मिल जाई।
भक्ति किये भगवान मिलै पर, शक्ति समान मिले नहीं भाई॥

यह पुण्य भूमि प्रसिद्ध है, इसके निवासी 'आर्य' हैं, विद्या, कला-कौशल सबके, जो प्रथम आचार्य हैं।
संतान उनकी आज यद्यपि, हम अधोगति में पड़े, पर चिन्ह उनकी उच्चता के, आज भी कुछ है खड़े॥

महाराज शक्तिसिंह के विषय में उक्त काव्य पंक्तियाँ किसकी हैं?

उत्तर : केसरी सिंह बारहठ।

प्रश्न : चुंडावत मांगी सेनानी, सिर काट दे दियो क्षत्राणी॥

उक्त काव्य पंक्तियाँ किस कवि की हैं?

उत्तर : कवि मेघराज मुकुल।

प्रश्न : चत्रगढ़ थल बेजोड़ जग, इक सूं इक बत्ताह।

कवि बापड़ो कीं कहै, कल्लौ खुद कविताह।।

उक्त काव्य पंक्तियाँ किस कवि की हैं?

उत्तर : प्रो. देवकरण सिंह रूपाहेली की।

प्रश्न : है कौन नहीं जग में, जिससे न कभी चित्तौड़ लड़ा?

चित्त तोड़ दिए लाखों के, इसलिए नाम चित्तौड़ पड़ा।।

उक्त काव्य पंक्तियाँ किस पुस्तक से उद्धृत हैं?

उत्तर : चित्तौड़ दुर्ग दीवानों का।

प्रश्न : कण-कण में सोया शहीद, पत्थर-पत्थर इतिहास है।

कंकर-कंकर चिंगारी है, जौहर हर प्रश्वांस है।।

उक्त काव्य पंक्तियाँ किस दुर्ग के विषय में लिखी गई?

उत्तर : चित्तौड़ दुर्ग।

प्रश्न : रणचंडी रो मोड़ दुर्ग, चित्तौड़ कि मौत भी हारती,

जौहर री लपटां नें रोज निहारती, उतारो आरती।

उक्त काव्य पंक्तियाँ किस कवि की हैं?

उत्तर : श्री नंदलाल जोशी की।

उन पूर्वजों की कीर्ति का वर्णन अतीव अपार है,गाते नहीं उनके हमीं गुण गा रहा संसार है ।
वे धर्म पर करते निछावर तृण-समान शरीर थे,उनसे वही गम्भीर थे, वरवीर थे, ध्रुव धीर थे॥

प्रश्न : चित्तौड़ चंपक ही रहा यद्यपि यवन अलि हो गए,
धर्मार्थ हल्दीघाटी में कितने सूभट बली हो गए।
कुलमान जब तक प्राण तब तक, यह नहीं तो वह नहीं,
मेवाड़ भर में वक्तृताएँ गूंजती ऐसी रही।।
उक्त काव्य पंक्तियाँ किस कवि की हैं?

उत्तर : राष्ट्र कवि मैथिली शरण गुप्त की('भारत भारती' रचना से)

प्रश्न : हर अरावली की चोटी पर सिकता के सरित करारों में,
मैं ढूँढ रहा वह चुनड़ी जो, जली नहीं अंगारों में।।
उक्त काव्य पंक्तियाँ किस कवि की हैं?

उत्तर : कवि जयशिव व्यास श्रीमाली की

प्रश्न : अस्सी घाव लगे थे तन में, ।
फिर भी व्यथा नहीं थी मन में,
खानवा के घोर समर में॥
पंक्तियाँ मेवाड़ के किस राणा के विषय में लिखी गई है?

उत्तर : महाराणा सांगा।

प्रश्न : "वनचर कहेंगे, फलचर कहेंगे लोग।
त्रनचर कहेंगे पै, अनुचर कहायेंगे ना॥
उक्त पंक्तियाँ महाराणा प्रताप के विषय में किसने लिखी?

उत्तर : केसरी सिंह जी बारहठ ने।

प्रश्न : रण कर कर रज रज रंगै, रवि ढंकै रज हूँत।
रज जेती धर नहँ दियै, रज रज व्है रजपूत॥

थे कर्मवीर कि मृत्यु का भी ध्यान कुछ धरते न थे, थे युद्धवीर कि काल से भी हम कभी डरते न थे।
थे दानवीर कि देह का भी लोभ हम करते न थे, थे धर्मवीर कि प्राण के भी मोह पर मरते न थे ॥

उक्त पंक्तियाँ किस कवि की हैं?

उत्तर : नाथूसिंह महियारिया (वीर सतसई)।

प्रश्न : हय रुण्ड गिरे, गज मुण्ड गिरे,
कट कट अवनी पर शुंड गिरे,
लड़ते लड़ते अरि झुण्ड गिरे,
भू पर हय विकल वितुंड गिरे॥
उक्त पंक्तियाँ किस रचना से है?

उत्तर : हल्दीघाटी।

प्रश्न : मेवाड़ केसरी देख रहा,
केवल रण का न तमाशा था,
वह दौड़ दौड़ करता था रण,
वह मान रक्त का प्यासा था॥
उक्त पंक्तियाँ किस कवि की है?

उत्तर : श्याम नारायण पांडेय।

प्रश्न : रणबीच चौकड़ी भर भर कर,
चेतक बन गया निराला था,
राणा प्रताप के घोड़े से,
पड़ गया हवा को पाला था
उक्त पंक्तियाँ किस युद्ध से संबंधित है?

उत्तर : हल्दीघाटी युद्ध(हल्दीघाटी रचना से)।

प्रश्न : लहराती थी सर काट-काट,

वे सूर्यवंशी चन्द्रवंशी वीर थे कैसे बली, जो थे अकेले ही मचाते शत्रु-दल में खलबली।
होते न वे यदि चक्रवर्ती भूप दिग्विजयी यहाँ, होते भला फिर 'अश्वमेध कि राजसूय कहो कहाँ ?

बल खाती थी भू पाट पाट,
बिखराती अवयव बाट बाट,
तनती थी लोहू चाट चाट॥
उक्त पंक्तियों में किसकी तलवार का वर्णन किया गया है?

उत्तर : महाराणा प्रताप की तलवार।

प्रश्न : यह सम्मानित अधिराजों से,
अर्चित है राज समाजों से,
इसके पदरज पोंछे जाते,
भूपों के सिर के ताजों से॥
उक्त पंक्तियों में किस राजसिंहासन की बात की गई है?

उत्तर : मेवाड़ राजसिंहासन की।

प्रश्न : धर्म रहसी, रहसी धरा, खप जासी खुरसाण।
अमर विशंभर ऊपरे, राख नहछो राण॥
उक्त पंक्तियाँ किस कवि की है?

उत्तर : अब्दुल रहीम खान खाना की।

प्रश्न : जा धन के हित नारि तजै पति,
पूत तजै पितु शीलहि सोई।
भाई सों भाई लरै रिपु से पुनि,
मित्रता मित्र तजै दुःख जोई।
ता धन को बनिया है गिन्यो न
दियो दुख देश के आरत होई।

राणा प्रताप-समान तब भी शूरवीर यहाँ हुए,स्वाधीनता के भक्त ऐसे श्रेष्ठ और कहाँ हुए ?
सुख मान कर बरसों भयङ्कर सर्व दुःखों को सहा,पर व्रत न छोड़ा, शाह को बस तुर्क ही मुख से कहा॥

स्वारथ अर्प्य तुम्हरोई है,

तुमरे सम और न या जगकोई।

उपर्युक्त पंक्तियाँ भामाशाह के विषय में किसने लिखी?

उत्तर : भारतेंदु हरिश्चंद्र ने।

प्रश्न : एकलिंग की जय इसके प्रण का जयकारा है,

हर युग में इसका बलिदानी लहू पुकारा है,

अग्नि आचमन से शोधित सिन्दूर सुहागिन का,

महामुत्यु के संमुख भी मेवाड़ न हारा है।

उक्त काव्य पंक्तियों के लेखक कौन हैं?

उत्तर : पण्डित नरेन्द्र मिश्र।

प्रश्न : ये जौहर की भूमि प्रतापी आन-बान की है,

परम्परा इसकी बलिदानी स्वाभिमान की है।

आजादी के लिए लड़ी है ये तुफानों से,

इस धरती की जन्म लग्न ही शीशदान की है।

मेवाड़ी धरती ने प्रण की आन नहीं तोड़ी,

संगीनों की धार छातियों से बढ़ कर मोड़ी।

राख जहाँ जौहर की अब तक ठंडी नहीं हुई,

अस्सी घाव हुए फिर भी तलवार नहीं छोड़ी।।

उक्त मुक्तक पण्डित नरेन्द्र मिश्र की किस पुस्तक से है?

उत्तर : त्रिपथगा पुस्तक से

प्रश्न : मुझे ना जाना गंगासागर, मुझे ना रामेश्वर काशी,

चितौर चम्पक ही रहा यद्यपि यवन अलि हो गये, धर्मार्थ हल्दीघाटी में कितने सुभट बलि हो गये।
कुल-मान जब तक प्राण तब तक, यह नहीं तो वह नहीं, मेवाड़ भर में वक्तृताएँ गूंजती ऐसी रहीं॥

तीर्थराज चित्तौड़ देखने को मेरी आंखें प्यासी।

उक्त पंक्तियाँ किस कवि की हैं?

उत्तर : श्याम नारायण पांडेय।

प्रश्न : अलादीन अकबर तणो मिटगी सरब मरोड़।

कीर थम्भ कथना कथै, ऊ यो ही चित्तौड़।।

उक्त पंक्तियाँ किस कवि की हैं?

उत्तर : केसरी सिंह जी बारहठ की।

प्रश्न : परनाळा पाणी पड़े, झरणां री इण ठौड़।

खून खाळ खळकाविया, जुध वीराँ री जोड़।।

उक्त पंक्तियाँ किस दुर्ग के विषय में कही गई हैं?

उत्तर : चित्तौड़ दुर्ग के विषय में।

प्रश्न : जयमल बड़ता जीमणे, पत्तो डावें पास।

हिंदू चढ़िया हाथियाँ, जस अड़ियौ आकास।।

उक्त पंक्तियों में वर्णित योद्धाओं ने कहाँ पर युद्ध लड़ा?

उत्तर : 1568 ई. अकबर के चित्तौड़ दुर्ग पर आक्रमण के समय

प्रश्न : दांत पकड़ गज चढियो ईशर अणी जगांह।

मारत कुरम मेड़तियो, बचगो अकबर शाह।।

उक्त पंक्तियों में वर्णित घटना चित्तौड़ दुर्ग के किस पोल की हैं?

उत्तर : जोरला पोल की।

प्रश्न : चंदन बलि नहं चढ़तो, हुतो न उदियो राण।

पातल पण नहं जनमतो, हिंदू धर्म रखाण।।

तरु के पत्तों पर अंकित, राणा की अमर कहानी है।
अब तक पथ से मिटी नहीं, चेतक की चरण निशानी है॥

क्त पंक्तियाँ किस कवि की हैं?

उत्तर : कवि उम्मेद सिंह जी राठौड़ की।

प्रश्न : बोले एकलिंग नाथ किले की काली भव्य भवानी से,
बोले कृष्ण कन्हैया अपनी मीरां प्रेम दीवानी से,
चंदन का बलिदान ये बोला पन्ना तेरी कहानी से,
ये प्रताप का ही प्रताप है कि, चित्तौड़ खड़ा मर्दानी से।
उक्त पंक्तियाँ किस कवि की है?

उत्तर : अब्दुल जब्बार।

प्रश्न : विख्यात है जौहर यहाँ के आज भी है लोक में,
हम मग्न हैं उन पद्मिनी-सी देवियों के शोक में।
आर्य-स्त्रियाँ निज धर्म पर मरती हुई डरती नहीं,
साद्यंत सर्व सतीत्व शिक्षा विश्व में मिलती यहीं।।
उक्त काव्य पंक्तियाँ किस कवि की हैं?

उत्तर : मैथिली शरण गुप्त की (भारत- भारती से)।

चित्तौड़ दुर्ग स्थित कुँभश्याम मंदिर

रहीम खानखाना की पत्नी एवं परिवार की स्त्रियों को ससम्मान लौटाते महाराणा प्रताप

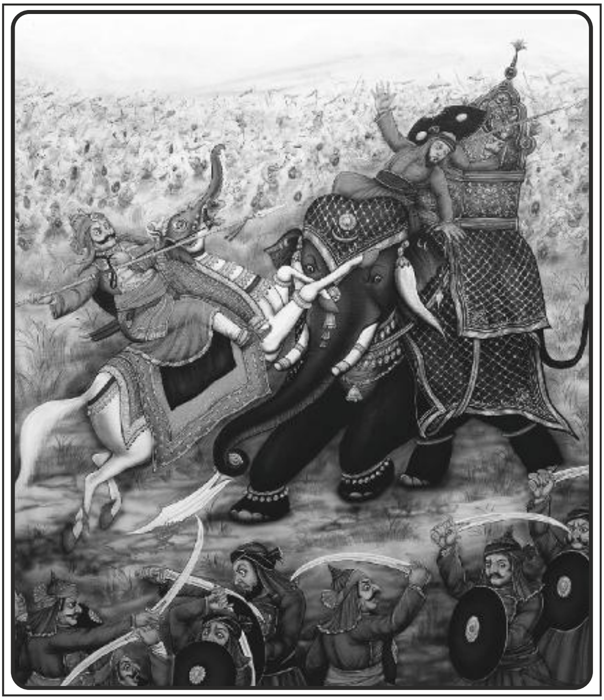

हल्दीघाटी युद्ध में मानसिंह पर वार करते महाराणा प्रताप

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. रणछोड़ भट्ट : अमरकाव्यम्
2. महाराणा प्रताप : आर.पी. व्यास
3. महाराणा प्रताप महान : देवीलाल पालीवाल
4. महाराणा प्रताप कुंभलगढ़ से चावंड तक : डॉ. के.एस. गुप्ता
5. उदयपुर राज्य का इतिहास भाग एक : महामहोपाध्याय रायबहादुर गौरीशंकर हीराचंद ओझा
6. उदयपुर राज्य का इतिहास : कर्नल जेम्स टॉड
7. महाराणा प्रताप और उनका युग : देव कोठारी
8. अमरकाव्यम् : रणछोड़ भट्ट
9. आर.पी. व्यास : महाराणा प्रताप
10. देवीलाल पालीवाल : महाराणा प्रताप महान
11. के.एस. गुप्ता : महाराणा प्रताप कुंभलगढ़ से चावंड तक
12. गौरीशंकर हीराचंद ओझा:उदयपुर राज्य का इतिहास भाग १ एवं भाग २
13. कर्नल जेम्स टॉड : उदयपुर राज्य का इतिहास
14. देव कोठारी : महाराणा प्रताप और उनका युग
15. श्यामलदास : वीर विनोद
16. ओमप्रकाश : हल्दीघाटी विजय युद्ध
17. के.एस. गुप्ता : महा बलिदानी धाय माँ पन्ना
18. के.एस. गुप्ता : मेवाड़ गौरव गाथा
19. वीरेंद्रसिंह तलावदा : राष्ट्रीय गौरव दुर्गराज चित्तौड़गढ़
20. जयमल वंश प्रकाश : ठा. गोपाल सिंह बदनोर
21. वीर शिरोमणि महाराणा सांगा : डॉ. गौरीशंकर असावा

22. उदयपुर राज्य का इतिहास : महामहोपाध्याय रायबहादुर गौरीशंकर हीराचंद ओझा
23. महाराणा कुंभा : राजेन्द्र शंकर भट्ट
24. प्रताप चरित्र : ठा. केसरीसिंह बारहठ
25. चित्तौड़ दर्शन : राधेश्याम जोशी
26. वीर भूमि चित्तौड़ भाग 1 व 2 : रामवल्लभ सोमानी
27. त्रिपथगा : पं. नरेंद्र मिश्र
28. चित्तौड़ संदेश काव्य : त्रिपाठी कैलाश आजाद
29. चत्रगढ़ हेला देय : देवकर्ण सिंह रूपाहेली
30. ऐतिहासिक गढ़ चित्तौड़गढ़ : ठा. उम्मेद सिंह राठौड़ धोली
31. खेतल कृत ' चित्तौड़ एवं उदयपुर की गजल : अक्षयकुमार देराश्री
32. सगत रासो : नाथूसिंह महियारिया
33. मेवाड़ का प्रारंभिक इतिहास : डॉ. श्री कृष्ण जुगनू
34. वीरभूमि चित्तौड़गढ़ : बाबू रामनारायण जी दूगड़
35. अमृत पुत्र : आनंद शर्मा
36. भारतीय मूर्तिकला : राजेंद्र शंकर भट्ट
37. मेवाड़ के महाराणा : राजेंद्र शंकर भट्ट
38. गजनी से जैसलमेर : हरिसिंह भाटी
39. चित्तौड़गढ़ गाइड : प्रो. आर.पी.व्यास
40. अमरबेल बलिदान की : पं. नरेंद्र मिश्र
41. अतुल्य जैन धर्म एवं गढ़ चित्तौड़ : डॉ. ए.एल. जैन
42. रजवाड़ों के रीति-रिवाज : राणी लक्ष्मी कुमारी चुण्डावत
43. सूर्यमल मिसण कृत 'वीर सतसई' : नरोत्तमदास स्वामी

44. ऊ यो ही चित्तौड़ : केसरी सिंह बारहठ
45. सत्यव्रत चूंडा : नाथूसिंह महियारिया
46. जौहर : श्याम नारायण पांडेय
47. हल्दीघाटी : श्याम नारायण पांडेय
48. महाराणा का महत्व : जयशंकर प्रसाद
49. भारत भारती : राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त
50. कालजयी मेवाड़ : पं. नरेंद्र मिश्र
51. उदयपुर संभाग का जिलेवार सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन
52. बप्पा रावल : मोहब्बत सिंह
53. मेवाड़ की कला और स्थापत्य : राजशेखर व्यास
54. चित्तौड़ गाइड बुक : संजय सिंघानिया
55. विश्व विरासत दुर्ग चित्तौड़गढ़ : डॉ. सुशीला लड्ढ़ा
56. पेशोला की प्रतिध्वनि : जयशंकर प्रसाद
57. चित्तौड़ की चिता : रामकुमार वर्मा
58. सेनाणी : मेघराजमुकुल
59. मिंझर : कन्हैया लाल सेठिया
60. 'महाराणा सहस्र वर्षों का धर्मयुद्ध' : डॉ. ओमेंद्र रत्नू
61. हिंदी साहित्य में चित्तौड़गढ़ का विवेचनात्मक अध्ययन : डॉ. गोपाल लाल जाट
62. हिंदी साहित्य में मेवाड़ : विश्लेषण एवं अध्ययन : डॉ. विकास कुमार अग्रवाल

बांडोली (चावंड, उदयपुर) में स्थित महाराणा प्रताप की छतरी

चेतक स्मारक, बलीचा (राजसमंद)

महाराणी पद्मिनी (जौहर)

चित्तौड़ दुर्ग में देश, धर्म संस्कृति व स्वतंत्रता रक्षार्थ जौहर महारावल रतनसिंह की पत्नी महाराणी पद्मिनी ने 25 अगस्त 1303 ई. (विक्रम संवत 1360 भाद्रपद शुक्ला तेरस) को सोलह हजार क्षत्राणियों के साथ अग्नि प्रवेश किया।

चित्तौड़गढ़ गौरव तीर्थ प्रन्यास
संस्थान द्वारा अब तक आयोजित प्रमुख कार्यक्रम

चित्तौड़गढ़ की हुतात्माओं के लिए सर्व पितृ अमावस्या को 108 कुंडीय यज्ञ के साथ विगत तीन वर्षों से तर्पण कार्यक्रम

चित्तौड़ गौरव गाथा कार्यक्रम : इतिहास विशेषज्ञ राजवीर चलकोई का व्याख्यान, दुर्ग पर गाईड, सोशल मीडिया इंफ्लुएन्सर एवं इतिहास शिक्षकों के साथ कार्यशाला

चित्तौड़गढ़

गौरव तीर्थ प्रन्यास

प्रमुख उद्देश्य

- **राष्ट्रवाद का संचार :** युवाओं में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और देशप्रेम की भावना जगाकर भारत के गौरवमय शौर्य, भक्ति और त्याग के इतिहास को पुनर्जीवित करना।
- **राष्ट्रीय सम्मान :** चित्तौड़गढ़ दुर्ग की स्वाधीनता और संघर्षमय इतिहास के सम्मान में इसे 'राष्ट्रीय गौरव तीर्थ स्मारक' घोषित करवाना।
- **स्मारक विकास :** राष्ट्र रक्षा हेतु बलिदान देने वाले योद्धाओं के स्मृति स्थलों को भव्य स्मारकों के रूप में विकसित करना।
- **स्टेच्यू ऑफ प्राइड :** दुर्ग की तलहटी में महाराणा प्रताप की विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा एवं उसके साथ मेवाड़ इतिहास के लाईव दर्शन के प्रोजेक्ट का निर्माण करवाने का सकारात्मक प्रयास।

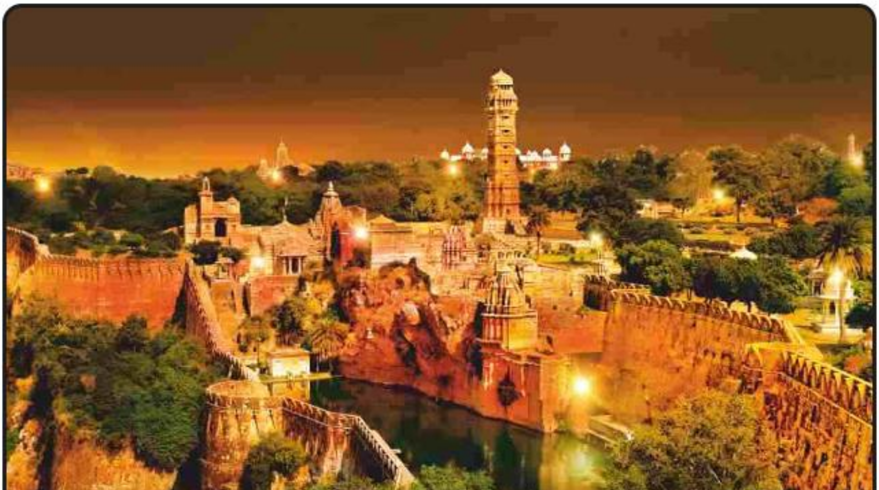

चित्तौड़गढ़ गौरव तीर्थ प्रन्यास

कार्यालय: B-1, सेक्टर-05, गांधीनगर, चित्तौड़गढ़ (राज.)

संपर्क : 9413316179 (श्री पुष्कर नराणिया-मुख्य ट्रस्टी)

Mail ID : chittorgauravtirth@gmail.com

ISBN : 978-93-5890-478-9

9 789358 904789

मूल्य रु. 100/-

NAKODA PRINTERS, Cor. #9460057085